अव्यक्त पालना के 40 वर्ष

शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न बनो

प्रथम संस्करण :
दिसम्बर, 2008

प्रथम मुद्रण

मुद्रकः
ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस,
शान्तिवन, आबू रोड - 307 510
☎ - 228125, 228126

पुस्तक मिलने का पताः
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307 501

कापी राइटः
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307 501
राजस्थान, भारत ।

अमृत-सूची

- शुभ भावना के संकल्प का स्विच ऑन कर भक्तों की भावना पूरी करो 11
- शुभ भावना द्वारा दैवी संगठन की एकरस स्थिति को प्रख्यात करो 12
- शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा सफलता के सितारे बनो 13
- अपने शिक्षा स्वरूप द्वारा सर्व की पालना करो 14
- शुभ भावना द्वारा असन्तुष्ट आत्मा को भी स्नेह, सहयोग का अनुभव कराओ 15
- श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रह सर्व को सम्मान देते हुए सत्कारी आत्मा बनो 16
- ग्लानि को भी गायन रूप से स्वीकार कर रहमदिल बनो 17
- सर्व की इच्छाओं को पूर्ण करने लिए इच्छा-मात्रम्-अविद्या बनो 18
- परिवर्तन का मूल आधार – हर सेकण्ड सेवा में बिजी रहना 19
- मास्टर बीजरूप बन भक्तों की भावना पूरी करो 20
- अब मास्टर ज्ञान सूर्य बन आत्माओं पर रहम करो 21
- हर बोल व कर्म को यादगार बनाओ 21
- लौकिक वृत्ति को अलौकिक वृत्ति में परिवर्तन करो 22
- शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा भविष्य राजधानी की तैयारी करो 23
- उदारचित बनो तो स्वयं का उद्धार सहज हो जायेगा 24
- हर आत्मा के प्रति कल्याण का संकल्प रखना ही वरदानी बनना है 25
- संकल्प रूपी बीज शुभ भावना से भरपूर बनाओ 26

- पुण्य आत्मा बनने के लिए
  भाव और भावना को श्रेष्ठ रखो 26
- दूसरे को मान देकर स्वयं निर्माण बनना ही परोपकार है 29
- ईश्वरीय रॉयल्टी - हर एक की विशेषता को
  देखना और गुणगान करना 31
- मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के
  सहयोगी बनकर आगे बढ़ो और बढ़ाओ 32
- साइलेन्स की शक्ति द्वारा धरनी का परिवर्तन करो 33
- जो दूसरों को कहो वह स्व-अनुभव के आधार से कहो 33
- शुभ-भावना बेहद की हो,
  किसी के प्रति विशेष भाववान नहीं बनना 34
- वर्तमान समय का विशेष अटेन्शन –
  शुभ भावना की किरणें फैलाना 35
- वरदानी स्वरूप से सेवा करने के लिए संकल्पों को
  कन्ट्रोल करने की ब्रेक पॉवरफुल बनाओ 36
- रूहे गुलाब बन अपनी शुभ भावना द्वारा
  सर्व को वर्से का अधिकारी बनाओ 37
- शुभ भावना और
  श्रेष्ठ कामना के आधार से पहले आप कहो 37
- विरोध भाव के बजाए सहयोग का भाव
  रखने वाले ही अन्त में एशलम पायेंगे 38
- शुभ भावना द्वारा वायुमण्डल को रूहानी
  बनाने का सहयोग दो तो सहजयोगी बन जायेंगे 40
- हर एक को मेरेपन की भासना द्वारा पालना देना ही
  बाप समान बनना है 41
- मास्टर ज्ञान सूर्य बन शुभचिंतक बनो 42
- अर्जियाँ समाप्त करनी है तो बाप की मर्जी पर चलो 43
- रूहानी रहमदिल, फ्राखदिल बन वरदानी बनो 44
- हर एक को शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना की गिफ्ट दो 44
- किनारा करने के बजाए शुभ भावना की
  ट्रायल कर एडजेस्ट करो 45
- शुभ भावना से बिगड़े हुए मूड को ठीक करना–
  यह है बड़े से बड़ी देन 46
- सेवा में सफलता पाने के लिए हर प्रकार की
  सेवा साथ-साथ करो 47
- शुभ संकल्प पूरा होने का साधन एकरस अवस्था 48
- सर्व के कल्याण की विधि – शुभ भावना 48
- वृत्ति, दृष्टि बदलना - यही अलौकिक जीवन है 49
- अपने पुण्य की पूँजी और शुभ भावना द्वारा
  सर्व के सहयोगी बनो 49
- मेरे-पन के बजाए बेहद में शुभ भावना रखो तो
  विश्व कल्याणकारी बन सकेंगे 50
- श्रेष्ठ भावना के बीज को स्मृति का पानी देते
  रहो तो फल अवश्य मिलेगा 51
- विशेषता देखना और दिखाना,
  यही संगठन के माला की डोर है 52
- बाप और सर्व ब्राह्मणों की आशीर्वाद लेने का आधार
  श्रेष्ठ संबंध 53
- शुभ भावना, शुभ कामना का आधार निमित्त भाव 54
- शुभचिंतक बन शुभ भावना, शुभ कामना की मानसिक सेवा से
  सबको सुख शान्ति की अंचली दो 55
- निर्भय वही है जिसकी सबके प्रति भाई-भाई की
  भावना है, किसी से वैर नहीं 55
- शुभचिन्तक बनने का आधार – स्वचिन्तन और शुभचिन्तन ... 56
- शुभ भावना, शुभ कामना की लाइट माइट
  चारों ओर फैलाकर विश्व कल्याणकारी बनो 59
- श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना का संकल्प ही ''दुआ'' है 60

- दिल दिमाग में कोई भी बुरी चीज़ें लेने के बजाए
  निरन्तर सेवाधारी बनो 100
- बाप की आज्ञा - सदा पॉजिटिव सोचो,
  शुभ भावना के संकल्प करो 100
- एकाग्रता के अभ्यास द्वारा संकल्प की शक्ति
  जमा करके उसका प्रयोग करो 101
- शुभ भावना से क्रोधी को भी सहयोगी बनाओ 104
- अटेन्शन देकर एक शुद्ध शब्द को स्वरूप में लाओ 105
- कमजोर को भी शुभ भावना का बल दो 106
- दृढ़ता द्वारा शुभ भावना की शक्ति कार्य में लाओ 106
- नि:स्वार्थ शुभ स्नेह और शुभ भावना से
  जमा का खाता बढ़ाओ 107
- रहमदिल और मर्सीफुल के संस्कार इमर्ज करो 107
- शुभ भावना की शक्ति से बद्दुआ को दुआ में परिवर्तन करो ..107
- आपको कोई कुछ भी दे आप सबको शुभ भावना दो 108
- हर बात में फ़ालो फ़ादर करो 109
- विश्व कल्याण के लिए
  वृत्ति से निगेटिव वायब्रेशन समाप्त करो 109
- प्योरिटी की वृत्ति है – शुभ भावना, शुभ कामना 110
- वैरायटी संस्कार को समझ नॉलेजफुल बन चलना,
  यही सक्सेसफुल स्टेज है 110
- आपका मंत्र है – निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी 111
- मन्सा प्युरिटी की रॉयल्टी – शुभ भावना, शुभ कामना 111
- निमित्त भाव की स्मृति से आत्माओं की भावनायें पूर्ण करो 112
- सबसे सहज पुरुषार्थ – दृष्टि वृत्ति बोल,
  भावना से दुआयें दो, दुआयें लो 112
- हर एक को शुभ भाव से देखो और सहयोग दो 112
- ज्ञानी तू आत्माओं के प्रति भी हर समय
  शुभ भावना, शुभ कामना रखो 113
- अशुभ भावना वालों को शुभ भावना से बदल दो 113
- शिक्षा देने की सर्वोत्तम विधि - शिक्षा और क्षमा 114
- अपने आपको रियलाइजेशन कोर्स कराओ 114
- निमित्त और निर्मान भाव से वायुमण्डल को ठीक बनाओ 115
- गुणों की गिफ्ट दो, गिरे हुए को गिराओ नहीं, उठाओ 115
- पूर्वज और पूज्यपन की स्मृति से
  हर एक की भावना पूर्ण करो 116
- चारों ही सबजेक्ट में स्मृति स्वरूप बनो 116
- समस्या खत्म कर समाधान स्वरूप बनो 117
- फ़रिश्ते बन उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ो और उड़ाओ 117
- रूहानी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति से
  सृष्टि का परिवर्तन करो 118
- निगेटिव वृत्ति को परिवर्तन करने की विधि –
  शुभ भावना शुभ कामना 119
- बाप के संस्कारों को अपना संस्कार बनाओ 119
- गुणमूर्त बन हर एक को गुणों की गिफ्ट दो 120
- स्वयं को परिवर्तन कर दूसरों का परिवर्तन करो 120
- हर आत्मा के प्रति शुभचिंतक बनो 120
- हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना,
  यह सम्पूर्ण पवित्रता की वृत्ति है 121
- एक-दो को शुभ भावना का सहयोग देकर आगे बढ़ाओ 121
- न्यारा और बाप का प्यारा बन हर आत्मा के
  कल्याण के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखो 121
- अतीन्द्रिय सुख का आधार – पवित्रता अर्थात्
  शुभ भावना, शुभ कामना 123
- पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर आत्मा के प्रति
  शुभ भावना, शुभ कामना 124
- परिवर्तन शक्ति द्वारा भाव और भावना का परिवर्तन करो 125

दो शब्द

प्राणों से प्यारे, जीवन दान देने वाले, सर्व के भाग्य विधाता, वरदाता परम स्नेही अव्यक्त बापदादा, जो अव्यक्त रूप से हम सबकी दिव्य पालना कर रहे हैं, उसे आज 40 वर्ष पूरे हो रहे हैं। 40 वर्षों के इस अलौकिक पार्ट को देखते हर ब्रह्मा वत्स के दिल से निकलता - वाह बाबा वाह! वाह आपकी कृपा दृष्टि वाह! साकार वतन छोड़ आप अव्यक्तवतन वासी बनें, फिर भी आपका हम बच्चों से कितना अटूट प्यार है, जो अपने समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने के लिए आप स्वयं साकार रूप में आकर अपनी अमृतवाणी से अनेक गुह्य रहस्य स्पष्ट करके तीव्र पुरुषार्थ की सहज विधियां बताते! कितने अनमोल रत्नों से हम सबका श्रृंगार कर रहे हो! किन शब्दों में हम बच्चे आपका शुक्रिया अदा करें! जो आप अव्यक्त वतनवासी होते भी हम बच्चों को अपनी शुभ भावनाओं की सकाश से, शुभ कामनाओं के बल से सदा आगे बढ़ाते, उड़ती कला में उड़ाते रहते हो। लोगों की नज़रों से भले आप छिप गये, पर हम ब्रह्मा वत्सों के दिल में तो आप सदा ही प्रत्यक्ष हो, आपका अहसान कभी भी हम चुका नहीं सकते! कितना अखुट ज्ञान, गुण और शक्तियों का भण्डार देकर हम सबको अपने समान रत्नागर, जादूगर बनाया है, आपके एक एक शब्द ने इस जीवन को गढ़कर चैतन्य पूज्यनीय सुन्दर मूर्तियाँ बनाया है।

ऐसे मूर्तिकार प्यारे बाबा के गुणगान करते आज विशेष अव्यक्त मास के लिए अव्यक्त उपहार के रूप में सम्पन्नता की ओर ले जाने वाली, शुभ भावना, शुभ कामना से सम्पन्न बनाने वाली यह पुस्तक प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है, इसमें शुभ भावना-शुभ कामना से सम्पन्न बनने की अनेकानेक अव्यक्त शिक्षायें हैं, जो अव्यक्त बापदादा से 40 वर्षों में हम सबने वैरायटी रूप में सुनी हैं, इस पुस्तक में वे सभी प्वाइंट्स संग्रह करके लिखी गई हैं। हमें उम्मीद है कि यह दिव्य उपहार हर एक के लिए अति उपयोगी रहेगा, इसे जीवन में धारण कर, हरेक स्नेह के सूत्र में पिरोकर सर्व की दुआओं से, पुण्य की पूंजी से स्वयं को भरपूर करेगा। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ,

ईश्वरीय सेवा में,

B. K. Janki

बी.के. जानकी

शुभ भावना के संकल्प का स्विच ऑन कर भक्तों की भावना पूरी करो

जैसे बाप भक्तों को भावना का फल देते हैं, वैसे ही कोई आत्मा भावना रखकर तड़पती हुई आपके पास आये कि 'जी-दान दो' वा 'हमारे मन को शान्ति दो' तो आप लोग उनकी भावना का फल दे सकते हो? उन्हें अपने पुरुषार्थ से जो कुछ भी प्राप्ति होती है वह तो हुआ उनका अपना पुरुषार्थ और उनका फल। लेकिन आपको कोई अगर कहे कि मैं निर्बल हूँ, मेरे में शक्ति नहीं है तो ऐसे को आप भावना का फल दे सकते हो? *(बाप द्वारा)* बाप को तो पीछे जानेंगे, जबकि पहले उन्हें दिलासा मिले। लेकिन यदि भावना का फल प्राप्त हो सकता है तो उनकी बुद्धि का योग डायरेक्शन प्रमाण लग सकेगा। ऐसी भावना वाले भक्त अन्त में बहुत आयेंगे। एक हैं पुरुषार्थ करके पद पाने वाले, वह तो आते रहते हैं लेकिन अन्त में पुरुषार्थ करने का न तो समय रहेगा और न आत्माओं में शक्ति ही रहेगी, ऐसी आत्माओं को फिर अपने सहयोग से और अपने महादान देने के कर्तव्य के आधार से उनकी भावना का फल दिलाने के निमित्त बनना पड़े। वे तो यही समझेंगे कि शक्तियों द्वारा मुझे यह वरदान मिला जो गायन है 'नज़र से निहाल करना।'

जैसे बहुत तेज बिजली होती है तो स्वीच ऑन करने से जहाँ भी बिजली लगाते हो उस स्थान के कीटाणु एक सेकण्ड में भस्म हो जाते हैं। इसी प्रकार जब आप आत्मायें अपनी सम्पूर्ण पॉवरफुल स्टेज पर हो और जैसे कोई आया और एक सेकण्ड में स्विच ऑन किया अर्थात् शुभ संकल्प किया अथवा शुभ भावना रखी कि इस आत्मा का भी कल्याण हो - यह है संकल्प रूपी स्वीच। इनको ऑन करने अर्थात् संकल्प को रचने

ा? हरेक ब्राह्मण की रेसपॉन्सिबिलिटी न सिर्फ अपने को एकरस बनाना लेकिन सारे संगठन को एकरस स्थिति में स्थित कराने के लिये सहयोगी नना है। ऐसे नहीं खुश हो जाना कि मैं अपने रूप से ठीक ही हूँ लेकिन हीं, संगठन को भी शुभ भावना की शक्ति से एकरस बनाओ। **14.4.73**

शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा सफलता के सितारे बनो

बाप समान बनने व सफलता मूर्त बनने के लिये दो शब्दों में सुनाते हैं। शब्द धारण करना तो सहज है ना? सदैव सर्व आत्माओं के प्रति, म्पर्क में आते हुए, सम्बन्ध में आते हुए और सेवा में आते हुए अपनी ुभ भावना रखो। शुभ भावना और शुभ कामना। चाहे आपके सामने ोई भी परीक्षा का रूप आवे, चाहे डगमग करने के निमित्त बनकर आवे किन हर आत्मा के प्रति आप शुभ कामना और शुभ भावना, यह दो ातें हर संकल्प, बोल और कर्म में लाओ तो आप सफलता के सितारे न जायेंगे। यह तो सहज है ना! ब्राह्मणों का यही धर्म और यही कर्म है। धर्म होगा वही कर्म होगा। बाप की हर बच्चे के प्रति यही शुभ कामना ौर शुभ भावना है कि वह बाप से भी ऊँच बने। इस कारण जब छोटी-ोटी बातें देखते व सुनते हैं, तो समझते हैं कि अब उसी घड़ी से सब म्पन्न हो जावें। मास्टर सर्वशक्तिवान यदि वे दृष्टि व वृत्ति की बात कहें या शोभता है? अर्थात् सर्वशक्तिवान बाप के आगे, मास्टर सर्वशक्तिवान मज़ोरी की बातें करते हैं तो बाप इशारा देते हैं कि अब मास्टर बनो योंकि स्वयं को बनाकर फिर विश्व को भी बनाना है। **14.7.74**

अपने शिक्षा स्वरूप द्वारा सर्व की पालना करो

मधुबन निवासियों को और सब आत्माओं से विशेष व्रत लेना चाहिए, कौन-सा? व्रत यही लेना है कि हम सब एक मत, एक ही श्रेष्ठ वृत्ति, एक ही रुहानी दृष्टि और एकरस अवस्था में एक दो के सहयोगी बन, शुभ चिंतक बन, शुभ भावना और शुभ कामना रखते हुए और अनेक संस्कार होते हुए भी एक बाप समान सतोप्रधान संस्कार और स्व के भाव में रहने वाला स्वभाव बनाने का किला मजबूत बनायेंगे - यह है व्रत। क्या स्वयं के प्रति व सर्व आत्माओं के प्रति, यह व्रत लेने की हिम्मत है? स्वयं के प्रति तो प्रवृत्ति में रहने वाले और वातावरण में रहने वाले भी करते हैं। मधुबन निवासियों में न सिर्फ स्वयं के प्रति, साथ ही संगठन के प्रति भी व्रत लेने की हिम्मत चाहिए। यही मधुबन वरदान भूमि की विशेषता है। समझा!

अभी तो पुरानों को, आने वाले नये बच्चों की पालना करनी चाहिए अर्थात् अपने शिक्षा स्वरूप द्वारा और स्नेह द्वारा उनको आगे बढ़ाने में सहयोगी बनना है और इस कार्य में दिन रात बिज़ी रहना चाहिए। यह अव्यक्त पार्ट भी विशेष नयों के लिये है, पुरानों को तो अब बाप समान बन नई आत्माओं के हिम्मत और हुल्लास को बढ़ाना है। जैसे बापदादा ने बच्चों को अपने से भी आगे रखते हुए, अपने से भी ऊँच बनाया ऐसे ही पुरानों का कार्य है नयों को अपने से भी आगे बढ़ाने का सबूत दिखाना व सर्व शिक्षाओं को साकार स्वरूप में दिखाना। पालना का प्रैक्टिकल रूप रिटर्न रूप में देना है। 18.7.74

शुभ भावना द्वारा असन्तुष्ट आत्मा को भी स्नेह, सहयोग का अनुभव कराओ

कैसे भी संस्कारों वाली, असन्तुष्ट रहने वाली आत्मा सम्पर्क में आये वह भी सम्पर्क में यह अनुभव करे कि मैं अपने संस्कारों के कारण ही असन्तुष्ट रहती हूँ लेकिन इन विशेष आत्माओं में मेरे प्रति स्नेह व सहयोग की व रहमदिल की शुभ भावना सदा नज़र आती है अर्थात् वह अपनी ही कमज़ोरी महसूस करे। वह कम्पलेन्ट यह न निकाले कि यह निमित्त बनी हुई आत्मायें मुझ आत्मा को सन्तुष्ट नहीं कर सकती। सर्व आत्माओं द्वारा ऐसी सन्तुष्टमणि का सर्टिफिकेट प्राप्त हो, तब कहेंगे कि यह सम्पूर्णता के समीप हैं। जितनी सम्पूर्णता आयेगी, उतनी ही सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता भी बढ़ती जायेगी।

सर्व को सन्तुष्ट करने का मुख्य साधन कौन-सा है? *(हरेक ने बताया)* यह सब बातें भी आवश्यक तो हैं। यह सब बातें परिस्थिति में प्रैक्टिकल करने की है। मुख्य बात यह है कि जैसा समय, जैसी परिस्थिति, जिस प्रकार की आत्मा सामने हो वैसा अपने को मोल्ड कर सकें। अपने स्वभाव और संस्कार के वशीभूत न हों। स्वभाव अथवा संस्कार ऐसे अनुभव में हो जैसे स्थूल रूप में जैसा समय वैसा रूप, जैसा देश वैसा वेष बनाया – ऐसे सहज अनुभव होता है? ऐसे अपने स्वभाव, संस्कार को भी समय के अनुसार परिवर्तन कर सकते हो? 7.2.75

श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रह सर्व को सम्मान देते हुए सत्कारी आत्मा बनो

हर आत्मा के प्रति सदा उपकार अर्थात् शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना रहे। हर आत्मा को देखते हुए ऐसे अनुभव हो कि यह सर्व आत्मायें जैसे कि बाप के हर समय स्नेही और सहयोगी बनने के लिए स्वयं को कुर्बान कर देते हैं। ऐसे कुर्बान करने के निमित्त क्यों बनते? क्योंकि बाप सबके आगे स्वयं कुर्बान होते हैं। सर्व के सामने स्वयं को सब शक्तियों समेत सेवा में समर्पित किया है। अपने समय को, सुखों को, प्राप्ति की इच्छा को सर्व के प्रति महादानी बन दाता बने, ऐसे फ़ालो फ़ादर, स्वयं के प्रति नाम, शान, मान सर्व प्राप्ति की इच्छा को कुर्बान करने वाले ही परोपकारी बन सकते हैं। लेने की इच्छा छोड़ देने वाले महादानी ही परोपकारी बन सकते हैं। ऐसे ही सत्कारी सर्व के प्रति सत्कार की भावना हो, सत्कारी बनने के लिए स्वयं को सर्व के सेवाधारी समझना पड़े। सेवाधारी की परिभाषा भी गुह्य है। सिर्फ स्थूल सेवा व वाणी द्वारा सेवा, सम्पर्क द्वारा सेवा, सैलवेशन द्वारा व भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा सेवा करना सिर्फ इतना ही नहीं, अपने हर गुण द्वारा दान करना व दूसरों को भी गुणवान बनाना, स्वयं के संग का रंग चढ़ाना, यह है श्रेष्ठ सेवा। अवगुण को देखते हुए भी नहीं देखना। स्वयं के गुणों की शक्ति द्वारा अन्य के अवगुणों को मिटा देना अर्थात् निर्बल को बलवान बनाना। निर्बल को देख किनारा नहीं करना है वा थक नहीं जाना है लेकिन होपलेस केस को भी स्वयं की सेवा द्वारा अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो सम्मान देने के द्वारा सर्व के सत्कारी बन सकते हैं। स्वयं के त्याग द्वारा अन्य को सत्कार देते

हुए अपना भाग्य बनाना है। छोटा, बड़ा, महारथी व प्यादा सर्व को सत्कार की नज़र से देखो। सत्कार न देने वाले को भी सत्कार देने वाला, ठुकराने वाले को भी ठिकाना देने वाला, ग्लानि करने वाले के भी गुणगान करने वाला ऐसे को कहा जाता है – सर्व सत्कारी। **10.2.75**

ग्लानि को भी गायन रूप से स्वीकार कर रहमदिल बनो

हर आत्मा के प्रति बाप समान दाता वरदाता, चाहे दुश्मन हो किसी भी जन्म के हिसाब-किताब चुक्तू करने के निमित्त बनी हुई आत्मा हो, ऐसी श्रेष्ठ स्थिति से गिराने के निमित्त बनी हुई आत्मा को भी, संस्कारों के टक्कर खाने वाली आत्मा को भी, घृणा वृत्ति रखने वाली आत्मा को भी, सर्व आत्माओं के प्रति दाता व वरदाता। ठुकराने वाली आत्मा भी कल्याणकारी आत्मा अनुभव हो, ग्लानि के बोल व निन्दा के बोल भी महिमा व गायन योग्य अनुभव हों तथा ग्लानि गायन अनुभव हो। जैसे द्वापर में आप सबने बाप की ग्लानि की लेकिन बाप ने ग्लानि भी गायन समझकर स्वीकार की और ग्लानि के रिटर्न में भक्ति का फल ज्ञान दिया न कि घृणा और ही रहमदिल बने, ऐसे फ़ालो फ़ादर। ऐसे फ़ालो फ़ादर करने वाले ही श्रेष्ठ तकदीरवान बनते हैं। जैसे बाप से विमुख बनी हुई आत्माओं को अपना बनाकर अपने से ऊँच प्रालब्ध प्राप्त कराते हैं – ऐसे श्रेष्ठ तकदीरवान बच्चे बाप समान हर आत्मा को अपने से भी आगे बढ़ाने की शुभ भावना रखते हुए विश्व कल्याणकारी बनेंगे, इसको कहा जाता है निरन्तर योगीपन के लक्षण। **9.9.75**

म्पत्ति वाला जीवन प्राप्त होगा लेकिन राज्य का तख्त और ताज प्राप्त हीं होगा अर्थात् प्रजा पद की प्रालब्ध होगी। तो डबल क्राउन प्राप्त करने का आधार हर समय डबल सेवा - स्वयं की और अन्य आत्माओं की करो। यह है लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ। ऐसा फास्ट पुरुषार्थ करते हो? ऐसे किंग विशेष रूप से वर्तमान समय करो। इस साधन द्वारा ही स्वयं का और समय का परिवर्तन करेंगे। **22.1.76**

परिवर्तन का मूल आधार – हर सेकण्ड सेवा में बिज़ी रहना

हर महारथी के अन्दर सदा यह संकल्प रहे कि जो भी समय है वह सेवा अर्थ ही देना है। चाहे अपने देह व शरीर के आवश्यक कार्य में भी समय लगाते हो तो भी स्वयं के प्रति लगाते हुए मन्सा विश्व कल्याण की सेवा साथ-साथ कर सकते हैं। अगर वाचा और कर्मणा नहीं कर सकते तो मन्सा कल्याणकारी भावना का संकल्प रहे तो वह भी सेवा की सब्जेक्ट में जमा हो जाता है।

जो भी कुछ स्वयं में कमज़ोरी महसूस होती है वह सब इस सेवा के कार्य में निरन्तर रहने से सेवा के फल स्वरूप अन्य आत्माओं के दिल से आशीर्वाद की प्राप्ति या गुणगान होता है, उस प्राप्ति के आधार से खुशी और उसके आधार से और बिज़ी रहने से वह कमी समाप्त हो जायेगी। **22.1.76**

सर्व की इच्छाओं को पूर्ण करने लिए इच्छा-मात्रम्-अविद्या बनो

अब इस वर्ष विश्व की आत्माओं की अनेक प्रकार की इच्छायें अर्थात् कामनायें पूर्ण करने का दृढ़ संकल्प धारण करो औरों की इच्छायें पूर्ण करना अर्थात् स्वयं को 'इच्छा मात्रम् अविद्या' बनाना। जैसे देना अर्थात् लेना है, ऐसे ही दूसरों की इच्छायें पूर्ण करना अर्थात् स्वयं को सम्पन्न बनाना है। वर्तमान लास्ट समय का फास्ट पुरुषार्थ यह है, एक ही समय में डबल कार्य करना है, वह कौन-सा? अन्य के प्रति देना अर्थात् स्वयं में भी वह कमी भरना अर्थात् अन्य को बनाना ही बनना है। जैसे भक्तिमार्ग में जिस वस्तु की कमी होती है उसी वस्तु का दान करते हैं तो दान देने से उस वस्तु की कभी कमी नहीं रहेगी। तो देना अर्थात् लेना हो जाता है। ऐसे ही जिस सबजेक्ट में, जिस विशेषता में, जिस गुण की स्वयं में भी कमी महसूस करते हो उसी विशेषता व गुण का दान करो अर्थात् अन्य आत्माओं के प्रति सेवा में लगाओ। तो सेवा का रिटर्न प्रत्यक्ष फल वा मेवे के रूप में स्वयं में अनुभव करेंगे। सेवा अर्थात् मेवा मिलना। अब इतना समय पुरुषार्थ का नहीं रहा है जो पहले स्वयं के प्रति समय दो फिर अन्य की सेवा के प्रति समय दो। फास्ट पुरुषार्थ अर्थात् स्वयं और अन्य आत्माओं की साथ-साथ सेवा हो। हर सेकण्ड, हर संकल्प में स्वयं के कल्याण की और विश्व के कल्याण की साथ-साथ भावना हो। एक ही सेकण्ड में डबल कार्य हो तब ही डबल ताजधारी बनेंगे। अगर एक समय में एक ही कार्य करेंगे तो स्वयं का विश्व का, एक समय भी एक कार्य करने की प्रालब्ध नई दुनिया में एक लाइट का क्राउन अर्थात् पवित्र जीवन, सुख

मास्टर बीजरूप बन भक्तों की भावना पूरी करो

भक्तों को सर्व प्राप्तियां करने का आधार 'भक्तों की भावना' है। भक्तों को सर्व प्राप्ति कराने का आधार - आपकी 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्थिति है। जब स्वयं इच्छा मात्रम् अविद्या हो जाते हो तब ही अन्य आत्माओं की सर्व इच्छायें पूर्ण कर सकते हो। इच्छा मात्रम् अविद्या अर्थात् सम्पूर्ण शक्तिशाली बीजरूप स्थिति। जब तक मास्टर बीजरूप नहीं बनते, बीज के बिना पत्तों को कुछ प्राप्ति नहीं हो सकती। अनेक भक्त आत्मायें रूपी पत्ते जो सूख गये हैं, मुरझा गये हैं उनको फिर से अपने बीजरूप स्थिति द्वारा शक्तियों का दान दो। जैसे जड़ चित्रों के दर्शन पर भक्तों की क्यू लग जाती है वैसे आपको चैतन्य में भी अपने भक्तों की क्यू अनुभव होती है? क्या अभी तक भी भक्तों की पुकार के गीत सुनना अच्छा लगता है? बापदादा जब विश्व की सैर करते हैं तो भक्तों का भटकना, पुकारना देखते और सुनते हैं तो तरस आता है। आप कहेंगे कि बापदादा ही साक्षात्कार करा दे और भक्तों की इच्छा पूर्ण कर दे, ऐसे सोचते हो? लेकिन ड्रामा में नाम बच्चों का, काम बाप का है। तो बच्चों को निमित्त बनना ही पड़ता है। विश्व के मालिक बच्चे बनेंगे या बाप बनेगा? प्रजा आपकी बनेगी या बाप की बनेगी? तो जो पूज्य होते हैं उनकी प्रजा बनती है उनके ही फिर बाद में भक्त बनते हैं। तो अपनी प्रजा को या अपने भक्तों को अब भी निमित्त बन शान्ति और शक्ति का वरदान दो।

अगर सदा अपने भाग्य और भाग्यविधाता के गुण गाते रहो तो सदा गुण सम्पन्न ही जायेंगे। अपनी कमजोरियों के गुण नहीं गाओ, भाग्य के गुण गाते रहो। 'प्रश्न से पार हो प्रसन्नचित्त रहो' जब तक खुद के प्रति

कोई-न-कोई प्रश्न है, कैसे करें? क्या करें? तब तक दूसरों को प्रसन्न नहीं कर सकेंगे। समझा? अब अपना नहीं सोचो, भक्तों का ज़्यादा सोचो। अब तक लेना नहीं सोचो लेकिन देना सोचो। कोई भी इच्छायें अपने प्रति न रखो लेकिन अन्य आत्माओं की इच्छायें पूर्ण करने का सोचो। तो स्वयं स्वत: ही सम्पन्न बन जायेंगे। **31.1.77**

अब मास्टर ज्ञान सूर्य बन आत्माओं पर रहम करो

विश्व की सर्व आत्मायें आपका परिवार है क्योंकि बेहद के बाप के बच्चे हो तो बेहद के परिवार के हो। तो अपने परिवार प्रति रहम नहीं आता? तो अभी रहमदिल बनो। मास्टर रचयिता बनो। स्वयं कल्याणकारी नहीं लेकिन साथ-साथ 'विश्व कल्याणकारी' बनो। अपने जमा की हुई शक्तियों वा ज्ञान के खज़ाने को मास्टर ज्ञानसूर्य बन वृत्ति, दृष्टि और स्मृति के अर्थात् शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प द्वारा, अपने जीवन में गुणों की धारणाओं द्वारा, इन सब साधनों की किरणों द्वारा अशान्ति को मिटाओ। जैसे सूर्य एक स्थान पर होते हुए भी अपने किरणों द्वारा चारों ओर का अन्धकार दूर करता है, ऐसे मास्टर ज्ञान सूर्य बन दु:खी आत्माओं पर रहम करो। **5.5.77**

हर बोल व कर्म को यादगार बनाओ

जैसे बाप द्वारा जो भी बोल निकलते हैं, कर्म होते हैं वह सदा के लिए यादगार बन जाते हैं, सबके दिलों में समा जाते हैं। फिर आधाकल्प के

बाद यादगार 'गीता' के रूप में बनता है। इसी प्रकार जो दिल तख्तनशीन बच्चे हैं वह जिस आत्मा के प्रति संकल्प करते हैं तो उनके दिल को लगता है। मानो, आप किस आत्मा प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखते हो तो उनके दिल को लगेगा कि सचमुच यह मेरे प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखते हैं। एक होता है ऊपर ऊपर से, दूसरा होता है निमित्त बने हुए स्थान के कारण रिस्पेक्ट देना। तीसरा होता है दिल से स्वीकार करना। **28.5.77**

लौकिक वृत्ति को अलौकिक वृत्ति में परिवर्तन करो

अलौकिक वृत्ति द्वारा हरेक से शुभ भावना, कल्याण की भावना से सम्पर्क में आना - इसको कहा जाता है अलौकिक जीवन की अलौकिक वृत्ति। लेकिन अलौकिक वृत्ति के बजाए लौकिक वृत्ति, अवगुण धारण करने की वृत्ति, ईर्ष्या और घृणा की वृत्ति धारण करने से अलौकिक जीवन के अलौकिक परिवार द्वारा अलौकिक सहयोग की खुशी, अलौकिक स्नेह की प्राप्ति की शक्ति प्राप्त नहीं कर पाते। इस कारण लौकिक वृत्ति को भी अलौकिक वृत्ति में परिवर्तन करो। तो पुरुषार्थ में कमज़ोर रहने का कारण? लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करना नहीं आता। लौकिक सम्बन्ध में भी अलौकिक सम्बन्ध – 'रुहानी भाई बहन का स्मृति में रखो' किसी भी सम्बन्ध की तरफ, लौकिक सम्बन्ध की आकर्षण आकर्षित करती है अर्थात् मोह की दृष्टि जाती है तो लौकिक सम्बन्ध के अन्तर में बाप से सर्व अविनाशी सम्बन्ध की स्मृति की वा बाप के सर्व सम्बन्धों के अनुभव की नॉलेज कम होने के कारण, लौकिक सम्बन्ध तरफ बुद्धि भटकती है। इसलिए सर्व सम्बन्धों के अनुभवी मूर्त बनो। **5.6.77**

शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा भविष्य राजधानी की तैयारी करो

सन्देश पाने वाली आत्मायें, इच्छुक आत्मायें अर्थात् जिज्ञासा वाली आत्मायें थोड़े से समय में शान्ति और शक्ति की अंचली प्राप्त कर बहुत खुश होती हैं। निमित्त बनी हुई आत्माओं को परमात्मा द्वारा व गॉड द्वारा भेजे हुए अलौकिक फ़रिश्ते अनुभव करते हैं। थोड़ी-सी ली हुई सेवा का भी रिटर्न देने में भी अपनी खुशी अनुभव करते हैं और फौरन रिटर्न करते है। थोड़ी-सी सेवा का शुक्रिया बहुत मानते हैं। यह वर्तमान समय के परमात्म ज्ञानियों की वा निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं की, इस सेवा के चक्र में चक्रवर्ती बनने की जो ड्रामा की नूँध है, इसी नूँध में स्थापना और विनाश के रहस्य का बहुत कनेक्शन है। यह थोड़े समय की सेवा देकर व चक्रवर्ती बनकर अपनी दृष्टि द्वारा, वाणी द्वारा वा सम्पर्क द्वारा व सूक्ष्म शुभ भावना और शुभ कामना की वृत्ति द्वारा आप अपनी राजधानी की तैयारी के निमित्त बनते हो क्योंकि आप सेवाधारी सर्व श्रेष्ठ आत्मा की नज़र द्वारा सेवा के फल में राजधानी तैयार करने के निमित्त बनने वाली सेवाधारी आत्मायें ज्ञानी व विज्ञानी प्रसिद्ध हो रही हैं। समझा रहस्य को?

'साक्षीपन' की स्टेज पर न रहने का कारण अटेंशन में अलबेलापन, स्वचिंतन की बजाए अपनी व्यर्थ बातों में स्वचिंतन को गँवा देते। स्वचिंतन में न रहने वाला साक्षी नहीं रह सकता। परचिंतन को समाप्त करने का आधार क्या है? अगर हर आत्मा के प्रति शुभ चिंतक होंगे तो परचिंतन कभी नहीं करेंगे। तो सदा शुभ चिंतन और शुभ चिंतक रहने से सदा साक्षी रहेंगे। साक्षी अर्थात् अभी भी साथी और भविष्य में भी साथी।

14.6.77

उदारचित बनो तो स्वयं का उद्धार सहज हो जायेगा

सहजयोगी अर्थात् सदा सहयोगी। सदा सहजयोगी बनने का साधन - सदा अपने को संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा और हर कार्य द्वारा विश्व के सर्व आत्माओं के प्रति सेवाधारी समझ, सेवा में ही सब कुछ लगाओ। जो भी ब्राह्मण जीवन के खज़ाने, बाप द्वारा प्राप्त हुए हैं, उन सर्व खज़ानों को आत्माओं की सेवा प्रति लगाओ। जो बाप द्वारा शक्तियों का खज़ाना, गुणों का खज़ाना, ज्ञान का खज़ाना वा श्रेष्ठ कमाई के समय का खज़ाना प्राप्त हुआ है, वह सेवा में लगाओ अर्थात् सहयोगी बनो। अपनी वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को श्रेष्ठ बनाने का सहयोग दो। स्मृति द्वारा सर्व को मास्टर समर्थ शक्तिवान स्वरूप की स्मृति दिलाओ। वाणी द्वारा आत्माओं को स्वदर्शन चक्रधारी मास्टर त्रिकालदर्शी बनने का सहयोगी, कर्म द्वारा सदा कमल पुष्प समान रहने का वा कर्मयोगी बनने का सन्देश हर कर्म द्वारा दो। अपने श्रेष्ठ बाप से सर्व सम्बन्धों की अनुभूति द्वारा सर्व आत्माओं को सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराने का सहयोग दो।

महादानी बनना अर्थात् सहयोगी बनना और सहयोगी बनाना अर्थात् सहजयोगी बनना। महादानी सर्व खज़ाने स्वयं प्रति कम यूज़ करेंगे, सेवा प्रति ज़्यादा यूज़ करेंगे क्योंकि अनेक आत्माओं के प्रति महादानी बन देना ही लेना है। सर्व प्रति कल्याणकारी बनना ही स्वयं कल्याणकारी बनना है। धन देना अर्थात् एक से सौगुणा जमा होता है। तो वर्तमान समय स्वयं के प्रति छोटी-छोटी बातों में वा चींटी समान आने वाले विघ्नों में अपने सर्व खज़ाने स्वयं प्रति लगाने का समय नहीं है। बेहद के सेवाधारी बनो। तो स्वयं की सेवा सहज हो जायेगी। फ्राखदिल से उदारचित होकर प्राप्ति के खज़ानों को बाँटते जाओ। उदारचित बनने से स्वयं का उद्धार सहज हो जायेगा। विघ्न मिटाने में समय लगाने के बजाए सेवा की लगन में समय लगाओ, ऐसे महादानी बनो। जो हर संकल्प, श्वास में सेवा ही हो तो सेवा की लगन का फल, विघ्न सहज ही विनाश हो जायेगा। **20.6.77**

हर आत्मा के प्रति कल्याण का संकल्प रखना ही वरदानी बनना है

जैसे समाप्ति के समय सब बीमारियाँ निकलती है, वैसे समाप्ति का समय होने के कारण हरेक की वैरायटी कमज़ोरियाँ प्रत्यक्ष होंगी। अभी तो एक लहर देखी है और भी कई लहरें देखेंगे। अति में जाना ज़रूर है, अति हो तब तो अन्त हो। जो भी अन्दर कमज़ोरियाँ हैं, अन्दर छिप नहीं सकती, किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष रूप में आयेगी लेकिन आपकी भावना रहे कि इन सबका भी कल्याण हो जाये। आप वरदानी हो तो आपका हर संकल्प हर आत्मा के प्रति कल्याण का हो। लहरें तो और भी आयेगी, एक खत्म होगी दूसरी आयेगी, यह सब मनोरंजन के बाईप्लाट्स हैं और पद भी स्पष्ट हो रहे हैं। यह होते रहेंगे। आश्चर्यवत् सीन होनी चाहिए। एक तरफ नये-नये रेस में आगे दिखाई देंगे। दूसरे तरफ थकने वाले, रुकने वाले भी प्रसिद्ध होंगे। तीसरे तरफ जो बहुत समय से कमज़ोरियाँ रही हुई हैं, वह भी प्रत्यक्ष होगी। नथिंग न्यू है लेकिन रहम की दृष्टि और भावना दोनों साथ हों। **25.6.77**

संकल्प रूपी बीज शुभ भावना से भरपूर बनाओ

जितना जो समीप होगा उतना स्थिति में, कर्तव्य में, गुणों में बाप समान अर्थात् सदा सम्पन्न अर्थात् दाता होगा। जैसे बाप हर सेकण्ड और संकल्प में विश्व कल्याणकारी है वैसे बाप समान विश्व कल्याणकारी होगा। विश्व कल्याणकारी का हर संकल्प हर आत्मा के प्रति, प्रकृति के प्रति शुभ भावना वाला होगा। एक भी संकल्प शुभ भावना के सिवाए नहीं होगा। जैसे बीज फल से भरपूर होता है अर्थात् सारे वृक्ष का सार बीज में भरा हुआ होता है। ऐसे संकल्प रूपी बीज में शुभ भावना, कल्याण की भावना, सर्व को बाप समान बनाने की भावना, निर्बल को बलवान बनाने की भावना, दु:खी अशान्त को स्वयं की प्राप्त हुई शक्तियों के आधार से सदा सुखी, शान्त बनाने की भावना यह सर्व रस या सार हर संकल्प में भरा हुआ होगा। कोई भी संकल्प रूपी बीज इस सार से खाली अर्थात् व्यर्थ नहीं होगा। कल्याण की भावना से समर्थ होगा। **14.2.78**

पुण्य आत्मा बनने के लिए भाव और भावना को श्रेष्ठ रखो

पाप और पुण्य की गहन गति को जानो। पाप की गति श्रेष्ठ भाग्य से वंचित कर देती है। संकल्प द्वारा भी पाप होता है। संकल्प के पाप का भी प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता है। संकल्प में स्वयं की कमज़ोरी, किसी भी विकार की, पाप के खाते में जमा होती ही है। लेकिन अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है।

किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है। ऐसे ही कर्म अर्थात् सम्बन्ध और सम्पर्क द्वारा किसी के प्रति शुभ भावना के बजाए और कोई भी भावना है तो यह भी पाप का खाता जमा होता है क्योंकि यह भी दु:ख देना है। शुभ भावना पुण्य का खाता बढ़ाती है। व्यर्थ भावना वा घृणा की भावना वा ईर्ष्या की भावना पाप का खाता बढ़ाती है इसलिए बाप के बच्चे बने, वर्से के अधिकारी बनें अर्थात् पुण्य आत्मा बने। यह निश्चय, यह नशा तो बहुत अच्छा लेकिन पुण्य आत्मा के साथ पाप का बोझ भी सौ गुना के हिसाब से है। इसलिए इतने अलबेले भी मत बनना। बाप को जाना और वर्से को जाना, ब्रह्माकुमार कहलाया इसलिए अब तो पुण्य ही पुण्य है, पाप तो खत्म हो गया वा सम्पूर्ण बन गये, ऐसी बात नहीं सोचना। ब्रह्माकुमार जीवन के नियमों को भी ध्यान में रखो, मर्यादायें सदा सामने रखो। पुण्य और पाप दोनों का ज्ञान बुद्धि में रखो। चेक करो पुण्य आत्मा कहलाते हुए मन्सा, वाचा, कर्मणा कोई पाप तो नहीं किया, कौन-सा खाता जमा हुआ? किसी भी प्रकार की चलन द्वारा बाप वा नॉलेज का नाम बदनाम तो नहीं किया? बाप के पास तो हरेक का खाता स्पष्ट है लेकिन स्वयं के आगे भी स्पष्ट करो। अपने आपको चलाओ मत अर्थात् धोखा मत दो। यह तो होता ही है, वह तो सबमें हैं, भले सबमें हो लेकिन मैं सेफ हूँ ऐसी शुभ कामना रखो तब विश्व सेवाधारी बन सकेंगे। संगठित रूप में एकमत, एकरस स्थिति का अनुभव करा सकेंगे। अब तक भी पाप का खाता जमा होगा तो चुक्तू कब करेंगे, अन्य आत्माओं को पुण्य आत्मा बनाने के निमित्त कैसे बनेंगे। इसलिए अलबेलेपन में भी पाप का खाता बनाना बन्द करो। सदा पुण्य आत्मा भव का वरदान लो। अज्ञानी लोग यह स्लोगन कहते हैं – बुरा न सुनो, न देखो, न सोचो। अब

बाप कहते व्यर्थ भी न सुनो, न सुनाओ और न सोचो। सदा शुभ भावना से सोचो, शुभ बोल बोलो, व्यर्थ को भी शुभ भाव से सुनो। जैसे साइंस के साधन बुरी चीज़ को परिवर्तन कर अच्छा बना देते, रूप परिवर्तन कर देते हैं तो आप सदा शुभ चिंतक सर्व आत्माओं के बोल के भाव को परिवर्तन नहीं कर सकते? सदा भाव और भावना श्रेष्ठ रखो तो सदा पुण्य आत्मा बन जायेंगे। स्वयं का परिवर्तन करो न कि अन्य के परिवर्तन का सोचो। स्वयं का परिवर्तन ही अन्य का परिवर्तन है। इसमें पहले मैं ऐसा सोचो, इस मरजीवा बनने में ही मज़ा है। इसी को ही महाबली कहा जाता है। घबराओ नहीं। खुशी से मरो, यह मरना तो जीना ही है, यही सच्चा जीयदान है।

आपका पहला वचन क्या है? एक बाप दूसरा न कोई अर्थात् मरना। नाम मरना है लेकिन सब कुछ पाना है। निभाना मुश्किल लगता है क्या? है सहज सिर्फ परिवर्तन करना नहीं आता - भाव और भावना का परिवर्तन करना नहीं आता। वाह ड्रामा वाह! जब कहते हो तो यह सब क्या हुआ। हर बात वाह वाह हो गई ना! हाय हाय खत्म कर दो, वाह वाह आ जाती है। वाह बाप, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट इसी स्मृति में रहो तो विश्व वाह वाह करेगा। मुश्किल तब लगता है जब बाप के साथ को भूल जाते हो। बाप को साथी बनाकर मुश्किल को सहज कर सकते हो लेकिन अकेले होने से बोझ अनुभव करते हो। तो ऐसे साथी बनाकर मुश्किल को सहज बनाओ। **3.12.78**

दूसरे को मान देकर स्वयं निर्माण बनना ही परोपकार है

परोपकारी की परिभाषा सहज भी है और अति गुह्य भी है। **1.** परोपकारी अर्थात् हर समय बाप समान हर आत्मा के गुणमूर्त को देखते। **2.** परोपकारी किसी की भी कमज़ोरी वा अवगुण को देखते अपनी शुभ भावना से सहयोग की कामना से अवगुण को देखते उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान देंगे। **3.** परोपकारी अर्थात् सदा बाप समान स्वयं के खज़ानों को सर्व आत्माओं के प्रति देने वाले दाता रूप होंगे। **4.** परोपकारी सदा स्वयं को खज़ानों से सम्पन्न बेगमपुर के बादशाह अनुभव करेंगे। बेगमपुर अर्थात् जहाँ कोई गम नहीं। संकल्प में भी गम के संस्कार अनुभव न हो। **5.** परोपकारी अर्थात् सदैव विशेष रूप से अपनी मन्सा अर्थात् संकल्प शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग के द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करता रहेगा। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आवे तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न होके जाए, ऐसे अखण्ड दानी होंगे। विशेष समय व सम्पर्क वाले अर्थात् कोई-कोई आत्माओं के प्रति दानी नहीं लेकिन सर्व के प्रति सदा महादानी होंगे। परोपकारी स्वयं मालामाल होने के कारण किसी भी आत्मा से कुछ ले करके देने के इच्छुक नहीं होंगे। संकल्प में भी यह नहीं आयेगा कि यह करे तो मैं करूँ, यह बदले तो मैं बदलूँ, कुछ वह बदले, कुछ मैं बदलूँ। एक बात का परिवर्तन आत्मा का और 10 बातों का परिवर्तन मेरा होगा, ऐसी ऐसी भावना रखने वाले को परोपकारी नहीं कहेंगे। महादानी बनने के बजाए सौदा करने वाले सौदागर बन जाते हैं। 'इतना दे तो मैं

इतना दूँगा, क्या सदा मैं ही झुकता रहूँगा, मैं ही देता रहुँगा, कब तक, कहाँ तक करूँगा' यह संकल्प देने वाले के नहीं हो सकते। जब अन्य आत्मा किसी भी कमज़ोरी के वश है तो ऐसी परवश आत्मा अर्थात् उस समय की भिखारी आत्मा अर्थात् शक्तिहीन, शक्तियों के खज़ाने से खाली है।

महादानी भिखारी से एक नया पैसा लेने की इच्छा नहीं रख सकते। यह बदले वा यह करे वा यह कुछ सहयोग दे, कदम आगे बढ़ावे ऐसे संकल्प वा ऐसे सहयोग की भावना परवश, शक्तिहीन, भिखारी आत्मा से क्या रख सकते! कुछ ले करके कुछ देना, उसको परोपकारी नहीं कहा जाता। **7**. परोपकारी अर्थात् भिखारी को मालामाल बनाने वाले, अपकारी के ऊपर उपकार करने वाले। गाली देने वाले को गले लगाने वाले, अपने परोपकार की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह-उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बना दे अर्थात् भिखारी को बादशाह बना दे। **8**. परोपकारी त्रिकालदर्शी होने के कारण हर आत्मा के सम्पूर्ण सहयोग को सामने रखते हुए, हर आत्मा की कमज़ोरी को परखते हुए उस कमज़ोरी को स्वयं में धारण नहीं करेंगे, वर्णन नहीं करेंगे लेकिन अन्य आत्माओं की कमज़ोरी का काँटा कल्याणकारी स्वरूप से समाप्त कर देंगे। काँटे के बजाए काँटे को भी फूल बना देंगे। ऐसे परोपकारी सदा सन्तुष्टमणि के समान स्वयं भी सन्तुष्ट होंगे और सर्व को भी सन्तुष्ट करने वाले होंगे। कमाल यह है जो होपलेस में होप पैदा करें। **9**. जिसके प्रति सब निराशा दिखायें ऐसे व्यक्ति व ऐसी स्थिति में सदा के लिए उनकी आशा के दीपक जगा दे। जब आपके जड़ चित्र अभी तक अनेक आत्माओं की अल्पकाल की मनोकामनायें पूर्ण कर रहे हैं तो

चैतन्य रूप में अगर कोई आपके सहयोगी भाई वा बहन परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान दे करके स्वयं निर्माण बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है। जैसे अन्जान बच्चा नुकसान वाली चीज़ को भी खिलौना समझता है तो उनको कुछ देकर छुड़ाना होता है। हठ से सदाकाल का नुकसान हो जाता है ऐसे बेसमझ आत्मायें भी उसी समय अल्पकाल की प्राप्ति को अर्थात् सदा के नुकसानकारी बातों को अपने कल्याण का साधन समझती हैं। ऐसी आत्माओं को जबरदस्ती इन बातों से हटाने से कशमकश में आकर उनके पुरुषार्थ की ज़िन्दगी खत्म हो जाती है। इसलिए कुछ दे करके सदा के लिये छुड़ाना ऐसे युक्तियुक्त चलन से स्वतः ही अल्पकाल की भिखारी आत्मा बेसमझ से समझदार बन जायेगी। स्वयं महसूस करेंगे कि यह अल्पकाल के साधन हैं। ऐसी बेसमझ आत्माओं के ऊपर भी परोपकारी। ऐसे परोपकारी स्वतः ही स्वयं उपकारी हो जाते हैं। देना ही स्वयं प्रति मिलना हो जाता। महादानी ही सर्व अधिकारी स्वतः हो जाते। समझा, परोपकारी की परिभाषा क्या है? **12.12.78**

ईश्वरीय रॉयल्टी – हर एक की विशेषता को देखना और गुणगान करना

जन्म-जन्मान्तर की प्रालब्ध बनाने के लिए विशेष दो बातें याद रखो – एक सदा अपने को विशेष आत्मा समझ संकल्प वा कर्म करो। दूसरा

– सदा हर एक में विशेषताओं को देखो। हर आत्मा में विशेष आत्मा की भावना रखो। साथ में विशेष बनाने की, शुभ-भावना, शुभ कामना रखो। सदा एक बात का अटेन्शन रखो जिस अवगुण वा कमज़ोरी को हर आत्मा छोड़ने का पुरुषार्थ कर रही है, ऐसी दूसरे द्वारा छोड़ने वाली चीज़ को स्वयं कभी धारण नहीं करना। दूसरे द्वारा फेंकी हुई चीज़ को लेना यह ईश्वरीय रॉयल्टी नहीं। रॉयल आत्मायें दूसरे की फेंकी हुई बढ़िया चीज़ भी नहीं लेती। यह तो अवगुण गन्दगी है, उसके तरफ संकल्प में भी धारण करना महापाप है इसलिए इस बात का अटेन्शन रखो। किसी की कमज़ोरी व अवगुण को देखने का नेत्र सदा बन्द रखो। न धारण करो न वर्णन करो। जब आपके चित्रों की भी भक्त महिमा करते हैं, हर अंग की महिमा करते हैं, कीर्ति गाने का कीर्तन करते हैं, आप चैतन्य रूप में एक दो के गुणगान करो, विशेषताओं का वर्णन करो। एक दो में सहयोग और स्नेह के पुष्पों की लेन-देन करो। हर कार्य में हाँ जी व पहले आपका हाथ बढ़ाओ। सदा हरेक विशेष आत्मा के आगे रुहानी वृत्ति, रुहानी वायब्रेशन का धूप जगाओ। जो भी आत्मायें सम्पर्क में आवे उन्हों को सदा अपने खज़ानों से वैरायटी भोग लगाओ अर्थात् खज़ाना भेंट करो। जब प्रैक्टिकल में अभी से यह रुहानी रसम आरम्भ करेंगे तब ही भक्ति में यह रसम चलती रहेगी। **2.1.79**

मन्सा शुभ भावना से एक-दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढ़ो और बढ़ाओ

हरेक यही संकल्प ले कि हमें शान्ति की, शक्ति की किरणें फैलानी

है, तपस्वी मूर्त बनकर रहना है, एक दूसरे को मन्सा से वा वाणी से भी अब सावधान करने का समय नहीं, अब मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढ़ो और बढ़ाओ। **23.11.79**

साइलेन्स की शक्ति द्वारा धरनी का परिवर्तन करो

सदा अपनी शुभ भावना से वृद्धि करते रहते हो? कैसी भी आत्मायें हो लेकिन सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखो। शुभ भावना सफलता को प्राप्त करायेगी। शुभ भावना से सेवा करने का अनुभव है? शुभ भावना अर्थात् रहमदिल। जैसे बाप अपकारियों पर उपकारी है, ऐसे ही आपके सामने कैसी भी आत्मा हो लेकिन अपने रहम की वृत्ति से, शुभ भावना से उसे परिवर्तन कर दो। जब साइंस वाले रेत में खेती पैदा कर सकते हैं तो क्या साइलेंस वाले धरनी का परिवर्तन नहीं कर सकते! संकल्प भी सृष्टि बना देता है। इसलिए सदा धरती को परिवर्तन करने की शुभ भावना हो। अपनी चढ़ती कला के वायब्रेशन द्वारा धरती का परिवर्तन करते चलो। स्व परिवर्तन से धरती परिवर्तन हो जायेगी। **21.1.80**

जो दूसरों को कहो वह स्व अनुभव के आधार से कहो

अमृतवेले को पॉवरफुल बनाओ, जिससे मन्सा सेवा का अनुभव बढ़ा सकेंगे। लास्ट में वाचा सेवा का चांस नहीं होगा। मन्सा सेवा पर सर्टीफिकेट मिलेगा क्योंकि इतनी लम्बी क्यू होगी जो बोल नहीं सकेंगे।

जैसे अभी भी मेला करते हो तो भीड़ के समय क्या करते हो? शान्ति से उनको शुभ भावना और कामना से दृष्टि देते हो ना। तो अन्त में भी जब प्रभाव निकलेगा तो क्या होगा? अभी तो स्थूल लाइट के प्रभाव से आते हैं फिर उस समय आप आत्मा की लाइट का प्रभाव होगा, उस समय मन्सा सेवा करनी पड़ेगी। नज़र से निहाल करना पड़ेगा। फिर उस समय भाषण करेंगे क्या? तो मन्सा सेवा का अभ्यास ज़रूरी है। अनुभवी मूर्त बन जाओ। जो दूसरों को कहो, वह स्व-अनुभव के आधार से कहो। समझा, मन्सा सेवा को बढ़ाओ। अभी निर्विघ्न वायुमण्डल बनाओ जिसमें कोई भी आत्मा की हिम्मत न हो विघ्न रूप बनने की। **23.1.80**

शुभ-भावना बेहद की हो, किसी के प्रति विशेष भाववान नहीं बनना

आपको निमित्त बनाया ही है विशेष कार्य अर्थ। वह विशेष कार्य है बाप द्वारा प्राप्त हुई विशेषताओं को निर्बल आत्माओं में अपनी शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना से भरना। आपका कार्य है सदा शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना स्वरूप बनना। श्रेष्ठ भावना का अर्थ यह नहीं कि किसी में भावना रखते-रखते उसके भाववान हो जाओ, यह गलती नहीं करना क्योंकि चलते-चलते उल्टा भी कर लेते हैं। भाववान बनना यानि उसके भक्त बन जाना अर्थात् उसके गुणों पर न्यौछावर हो जाना माना भक्त बनना। तो शुभ भावना भी बेहद की हो। एक के प्रति विशेष भावना भी हद है। हद में नुकसान है, बेहद में नहीं। वर्तमान समय आप बच्चों का कार्य है – निर्बल आत्माओं को अपनी प्राप्त हुई शक्तियों के आधार पर शुद्ध वायब्रेशन्स,

वायुमण्डल द्वारा शक्तिशाली बनाना। इसी कार्य में सदा बिज़ी रहते हो? कोर्स कराने का समय अभी गया, अभी फोर्स का कोर्स कराना है। कोर्स कराने वाले दूसरे भी तैयार हो गये हैं इसलिए आप वायुमण्डल को पावरफुल बनाने की सेवा करो क्योंकि दुनिया का वायुमण्डल दिन प्रतिदिन मायावी बनता जायेगा, माया भी लास्ट चांस में अपने यंत्र-मंत्र और जंत्र जो भी हैं वह सब यूज़ करेगी। अटैक तो करेगी ना? ऐसे विदाई नहीं लेगी इसलिए ऐसे वायुमण्डल के बीच अपने सेवास्थानों का वायुमण्डल बहुत ही अव्यक्त और शक्तिशाली बनाओ। **4.2.80**

वर्तमान समय का विशेष अटेन्शन – शुभ भावना की किरणें फैलाना

अपनी शुभ भावना की किरणें सब तरफ फैलाना, वर्तमान समय इसी बात का विशेष अटेन्शन चाहिए। ऐसे पुरुषार्थी को ही तीव्र पुरुषार्थी कहा जाता है। ऐसे पुरुषार्थी को मेहनत नहीं करनी पड़ती, सब कुछ सहज हो जाता है। सहजयोगी के आगे कितनी भी बड़ी बात ऐसे सहज हो जाती है जैसे कुछ हुआ ही नहीं, सूली से काँटा। तो ऐसे सहजयोगी हैं ना? बचपन में जब चलना सीखते हैं तब मेहनत लगती, तो मेहनत का काम भी बचपन की बातें हैं, अब मेहनत समाप्त, सबमें सहज। जहाँ कोई भी मुश्किल अनुभव होता है वहाँ उसी स्थान पर बाबा को रख दो। बोझ अपने ऊपर रखते हो तो मेहनत लगती। बाप पर रख दो तो बाप बोझ को खत्म कर देगी। जैसे सागर में किचड़ा डालते हैं तो वह अपने में नहीं रखता, किनारे कर देता, ऐसे बाप भी बोझ को खत्म कर देते। जब पण्डे को भूल जाते हो

तब मेहनत का रास्ता अनुभव होता। मेहनत में टाइम वेस्ट होता। अब मन्सा सेवा करो, शुभ चिंतन करो, मनन शक्ति को बढ़ाओ। मेहनत मजदूर करते, आप तो अधिकारी हैं। **18.1.81**

वरदानी स्वरूप से सेवा करने के लिए संकल्पों को कन्ट्रोल करने की ब्रेक पावरफुल बनाओ

महादानी विशेष वाणी द्वारा सेवा करते हैं, मन्सा की परसेन्टेज कम होती है। वरदानी आत्माओं की सेवा में वाणी की परसेन्टेज कम और मन्सा की परसेन्टेज़ ज्यादा होती है अर्थात् संकल्प द्वारा शुभ भावना और कामना द्वारा थोड़े समय में सेवा का प्रत्यक्ष फल दिखाई देता है।

वरदानी रूप द्वारा सेवा करने के लिए पहले स्वयं में शुद्ध संकल्प चाहिए तथा अन्य संकल्पों को सेकण्ड में कन्ट्रोल करने का विशेष अभ्यास चाहिए। सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सागर में लहराता रहे और जिस समय चाहे शुद्ध संकल्पों के सागर के तले में जाकर साइलेंस स्वरूप हो जाए अर्थात् ब्रेक पॉवरफुल हो। संकल्प शक्ति अपने कन्ट्रोल में हो। साथ-साथ आत्मा की और भी विशेष दो शक्तियाँ बुद्धि और संस्कार, तीनों ही अपने अधिकार में हो। तीनों में से एक शक्ति के ऊपर भी अगर अधिकारी कम है तो वरदानी स्वरूप की सेवा जितनी करनी चाहिए, उतनी नहीं कर सकते। **20.1.81**

रूहे गुलाब बन अपनी शुभ भावना द्वारा सर्व को वर्से का अधिकारी बनाओ

रूहे गुलाब की सदा रुहानी भावना रहती कि सर्व रूहें हमारे समान वर्से के अधिकारी बन जायें। परवश आत्माओं को बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों का सहयोग दे उन्हों को भी अनुभव कराओ। किसी की भी कमज़ोरी और कमी को नहीं देखो। अपने धारण किये हुए गुणों का, शक्तियों का सहयोग देने वाले दाता बनो। ब्राह्मण परिवार के लिए सहयोगी, अन्य आत्माओं के लिए महादानी। यह ऐसा है... यह भावना नहीं। लेकिन इसको भी बाप समान बनाऊं, यह शुभ भावना, साथ-साथ यही श्रेष्ठ कामना - यह सर्व आत्मायें कंगाल दुःखी, अशान्त से सदा शान्त सुख रूप मालामाल बन जायें। सदा स्मृति में एक ही धुन हो कि विश्व परिवर्तन जल्दी से जल्दी कैसे हो, इसको कहा जाता है 'रूहे गुलाब'। **13.4.81**

शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के आधार से पहले आप कहो

'पहले आप' वाला ही 'हाँ जी' कर सकता है इसलिए मुख्य बात है 'पहले आप' लेकिन शुभ भावना से। कहने मात्र नहीं लेकिन शुभ चिंतक की भावना से। शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के आधार से पहले आप करने वाला स्वयं ही पहले हो जाता है। पहले आप कहना ही पहला नम्बर होना है। जैसे बाप ने जगदम्बा को पहले किया, बच्चों को पहले किया

लेकिन फिर भी नम्बरवन गया ना। इसमें कोई स्वार्थ नहीं रखा, नि:स्वार्थ पहले आप कहा, करके दिखाया। ऐसे ही पहले आपका पाठ पक्का हो। इसने किया अर्थात् मैंने किया। इसने क्यों किया, मैं ही करूँ, मैं क्यों नहीं करूँ, मैं नहीं कर सकता हूँ क्या! यह भाव नहीं। उसने किया तो भी बाप की सेवा, मैंने किया तो भी बाप की सेवा। यहाँ कोई को अपना-अपना धन्धा तो नहीं है ना। एक ही बाप का धन्धा है। ईश्वरीय सेवा पर हो, लिखते भी हो गॉडली सर्विस, मेरी सर्विस तो नहीं लिखते हो ना। जैसे बाप एक है, सेवा भी एक है, ऐसे ही इसने किया, मैंने किया वह भी एक। जो जितना करता उसे और आगे बढ़ाओ। मैं आगे बढ़ूँ, नहीं, दूसरों को आगे बढ़ाकर आगे बढ़ो। सबको साथ लेकर जाना है ना। बाप के साथ जब जायेंगे अर्थात् आपस में भी तो साथ-साथ होंगे ना। जब यही भावना हरेक में आ जाए तो ब्रह्मा बाप की फोटोस्टेट कॉपी हो जायेंगे। हर संकल्प सर्व प्रति शुभ-भावना और कामना का हो - यही बड़े-ते-बड़ा पुण्य है। **24.10.81**

विरोध भाव के बजाए सहयोग का भाव रखने वाले ही अन्त में एशलम पायेंगे

जहाँ आप प्रकृतिजीत ब्राह्मणों का पाँव होगा, स्थान होगा वहाँ कोई भी नुकसान हो नहीं सकता। एक दो मकान के आगे नुकसान होगा लेकिन आप सेफ होंगे। सामने दिखाई देगा यह हो रहा है, तूफान आ रहा है, धरनी हिल रही है लेकिन वहाँ सूली होगी, यहाँ काँटा होगा। वहाँ चिल्लाना होगा, यहाँ अचल होंगे। सब आपके तरफ स्थूल-सूक्ष्म सहारा

लेने के लिये भागेंगे। आपका स्थान एशलम बन जायेगा, तब सबके मुख से अहो प्रभू! आपकी लीला अपरम्पार है, यह बोल निकलेंगे। धन्य हो, धन्य हो। आप लोगों ने पाया, हमने नहीं जाना, गँवाया। यह आवाज़ चारों ओर से आयेगा फिर आप क्या करेंगे? विधाता के बच्चे विधाता और वरदाता बनेंगे लेकिन इसमें भी एशलम लेने वाले भी स्वत: ही नम्बरवार होंगे। जो अब से अन्त तक व स्थापना के आदि से अब तक भी सहयोग भाव में रहे हैं, विरोध भाव में नहीं रहे हैं, मानना न मानना अलग बात है लेकिन ईश्वरीय कार्य में वा ईश्वरीय परिवार के प्रति विरोध भाव के बजाए सहयोग का भाव, कार्य अच्छा है वा कार्यकर्ता अच्छे हैं, यही कार्य परिवर्तन कर सकता है, ऐसे भिन्न-भिन्न सहयोगी भावना वाले, ऐसे आवश्यकता के समय इस भावना का फल नजदीक नम्बर में प्राप्त करेंगे अर्थात् एशलम के अधिकारी नम्बरवन बनेंगे। बाकी इस भावना में भी परसेन्टेज वाले उसी परसेन्ट प्रमाण एशलम की अंचली ले सकेंगे। बाकी देखने वाले देखते ही रह जायेंगे। जो अभी भी कहते हैं देख लेंगे, तुम्हारा क्या कार्य है व देख लेंगे, आपको क्या मिला है! जब कुछ होगा तब देखेंगे ऐसे समय की इंतजार करने वाले एशलम के इंतजाम के अधिकारी नहीं बन सकते। उस समय भी देखते ही रह जायेंगे। हमारी बारी कब आती है इसी इंतजार में ही रहेंगे और आप दूर में इंतजार करने वाली आत्माओं पर भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन शुभ भावना, श्रेष्ठ बनने के कामना की किरणें चारों ओर की आत्माओं पर विश्व कल्याणकारी बन डालेंगे। फिर कितनी भी विरोधी आत्मायें हैं अपने पश्चाताप की अग्नि में स्वयं को जलता हुआ, बेचैन अनुभव करेंगी और आप शीतला देवियाँ बन रहम, दया, कृपा के शीतल छींटों से विरोधी आत्माओं को भी शीतल बनायेंगी अर्थात् सहारे

के गले लगायेंगी। उस समय आपके भक्त बन ओ माँ, ओ माँ पुकारते हुए विरोधी से बदल भक्त बन जायेंगे। यह है आपके लास्ट भक्त। तो विरोधी आत्माओं को भी अन्त में भक्तपन की अंचली ज़रूर देंगे। वरदानी बन 'भक्त भव' का वरदान देंगे। फिर भी हैं तो आपके भाई ना, तो ब्रदरहुड का नाता निभायेंगे। **27.10.81**

शुभ भावना द्वारा वायुमण्डल को रुहानी बनाने का सहयोग दो तो सहजयोगी बन जायेंगे

अमृतवेले से लेकर सहयोगी बनो। सारे दिन की दिनचर्या का मूल लक्ष्य एक शब्द रखो कि सहयोग देना है। सहयोगी बनना है। अमृतवेले बाप से मिलन मनाकर बाप समान मास्टर बीजरूप बन, मास्टर विश्व कल्याणकारी बन सर्व आत्माओं को अपनी प्राप्त हुई शक्तियों के द्वारा आत्माओं की वृत्ति और वायुमण्डल परिवर्तन करने के लिए सहयोगी बनो। बीज द्वारा सारे वृक्ष को रुहानी जल देने के सहयोगी बनो। जिससे सर्व आत्माओं रूपी पत्तों को प्राप्ति के पानी मिलने का अनुभव हो। ऐसे अमृतवेले से लेकर जो भी सारे दिन में कार्य करते हो हर कार्य का लक्ष्य - 'सहयोग देना' हो। चाहे व्यवहार के कार्य में जाते हो, प्रवृत्ति को चलाने के कार्य में रहते हो लेकिन सदा यह चेक करो लौकिक व्यवहार में भी स्व प्रति वा साथियों के प्रति शुभ भावना और कामना से वायुमण्डल रुहानी बनाने का सहयोग दिया व ऐसे ही रिवाजी (साधारण) रीति से अपनी ड्यूटी बजा कर आ गये। जैसा जिसका आक्यूपेशन होता है वह जहाँ भी जायेंगे अपने आक्यूपेशन प्रमाण कार्य ज़रूर करेंगे। आप सबका विशेष

ऑक्यूपेशन ही है – 'सहयोगी बनना'। वह कैसे भूल सकते! तो हर कार्य में सहयोगी बनना है तो सहजयोगी बन जायेंगे। कोई भी सेकण्ड सहयोगी बनने के सिवाए न हो। चाहे मन्सा में सहयोगी बनो, चाहे वाचा से सहयोगी बनो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क के द्वारा सहयोगी बनो। चाहे स्थूल कर्म द्वारा सहयोगी बनो लेकिन सहयोगी ज़रूर बनना है क्योंकि आप सभी दाता के बच्चे हो। दाता के बच्चे सदा देते रहते हैं तो क्या देना है? 'सहयोग'। **26.11.81**

हर एक को मेरे-पन की भासना द्वारा पालना देना ही बाप समान बनना है

जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज़ निकलती है - 'मेरा बाबा'। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो जो हरेक समझे कि यह – 'मेरी माँ' है। यह बेहद की पालना। हरेक से मेरे-पन की भासना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिंतक, सहयोगी सेवा के साथी हैं इसको कहा जाता है – बाप समान। इसको ही कहा जाता है कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन, जो सेवा के कर्म के भी बन्धन में न आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है। इस कर्मबन्धन से – कर्मातीत। तो समझा, इस वर्ष क्या करना है? कर्मातीत बनना है और 'यह वही हैं, यही सब कुछ हैं' यह महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप लाना है, ठिकाने पर लाना है। **10.01.82**

मास्टर ज्ञान सूर्य बन शुभचिंतक बनो

परमात्म सन्तान और कोई गुण न हो, यह हो नहीं सकता। उसी गुण के आधार से ही ब्राह्मण जन्म में जी रहे हैं अर्थात् जिन्दा हैं। ड्रामा अनुसार उसी गुण ने ही ऊँचे-ते-ऊँचे बाप का बच्चा बनाया। उसी गुण के कारण ही प्रभु पसन्द बने हैं इसलिए गुणों की माला बना रहे थे। ऐसे ही हर ब्राह्मण आत्मा के गुण को देखने से श्रेष्ठ आत्मा का भाव सहज और स्वतः ही होगा क्योंकि गुण का आधार है ही – श्रेष्ठ आत्मा। कई आत्मायें गुण को जानते हुए भी जन्म-जन्म की गंदगी को देखने के अभ्यासी होने कारण गुण को न देख अवगुण ही देखती हैं। लेकिन अवगुण को देखना, अवगुण को धारण करना ऐसी ही भूल है जैसे स्थूल में अशुद्ध भोजन पान करना। स्थूल भोजन में अगर कोई अशुद्ध भोजन स्वीकार करता है तो भूल महसूस करते हो ना! लिखते हो ना कि खान-पान में कमज़ोर हूँ। तो भूल समझते हो ना! ऐसे अगर किसी का अवगुण अथवा कमज़ोरी स्वयं में धारण करते हो तो समझो अशुद्ध भोजन खाने वाले हो। सच्चे वैष्णव नहीं, विष्णु वंशी नहीं लेकिन राम सेना हो जायेंगे इसलिए सदा गुण ग्रहण करने वाले गुणमूर्त बनो।

अवगुण तो किचड़ा है ना। अगर देखते भी हो तो मास्टर ज्ञान सूर्य बन किचड़े को जलाने की शक्ति है तो शुभचिंतक बनो। बुद्धि में ज़रा भी किचड़ा होगा तो शुद्ध बाप की याद टिक नहीं सकेगी, प्राप्ति कर नहीं सकेंगे। गन्दगी को धारण करने की एक बार अगर आदत डाल दी तो बार-बार बुद्धि गन्दगी की तरफ न चाहते भी जाती रहेगी और रिज़ल्ट क्या होगी? वह नेचुरल संस्कार बन जायेंगे। फिर उन संस्कारों को परिवर्तन

करने में मेहनत और समय लग जाता है। दूसरे का अवगुण वर्णन करना अर्थात् स्वयं भी परचिंतन के अवगुण के वशीभूत होना है। लेकिन यह समझते नहीं हो दूसरे की कमज़ोरी वर्णन करना, अपने समाने की शक्ति की कमज़ोरी जाहिर करना है। किसी भी आत्मा को सदा गुणमूर्त से देखो। अगर किसकी कोई कमज़ोरी है भी, मर्यादा के विपरीत कार्य है भी तो बापदादा की निमित्त बनी हुई सुप्रीम कोर्ट में लाओ। खुद ही वकील और जज नहीं बन जाओ। भाई-भाई का नाता भूल वकील जज बन जाते हो इसलिए भाई-भाई की दृष्टि टिक नहीं सकती। केस दाखिल करने की मना नहीं है लेकिन मिलावट और ख्यानत नहीं करो। जितना हो सके शुभ भावना से इशारा दे दो। न अपने मन में रखो और न औरों को मनमनाभव होने में विघ्न रूप बनो। **29.3.82**

अर्जियाँ समाप्त करनी है तो बाप की मर्जी पर चलो

कई बच्चे बापदादा के आगे अर्जियों के लम्बे-चौड़े फाइल रख देते हैं, कोई अर्जी डालते कि एक मास से परेशान हूँ, कोई कहते 3 मास से नीचे ऊपर हो रहा हूँ। कोई कहते 6 मास से सोच रहा था, लेकिन ऐसे ही था। इतनी अर्जियाँ मिलकर फाईल हो जाती है लेकिन यह भी सोच लो जितनी बड़ी फाइल है उतना फाइन देना पड़ेगा। इसलिए अर्जी को खत्म करने का सहज साधन है - सदा बाप की मर्जी पर चलो। मेरी मर्जी यह है तो वह मन-मर्जी अर्जी की फाइल बना देती है। जो बाप की मर्जी वह मेरी मर्जी। बाप की मर्जी क्या है? हरेक आत्मा सदा शुभचिंतन करने वाली, सर्व के प्रति सदा शुभचिंतक रहने वाली, स्व-कल्याणी और विश्व-कल्याणी

बनें। इसी मर्जी को सदा स्मृति में रखते हुए बिना मेहनत के चलते चलो। जैसे कहा जाता है आँख बन्द करके चलते चलो। ऐसा तो नहीं, वैसा तो नहीं, यह आँख नहीं खोलो। यह व्यर्थ चिंतन की आँख बन्द कर बाप की मर्जी अर्थात् बाप के कदम-पीछे-कदम रखते चलो। पाँव के ऊपर पाँव रखकर चलना मुश्किल होता है व सहज होता है? तो ऐसे फ़ालो फ़ादर करो। **6.4.82**

रुहानी रहमदिल, फ्राखदिल बन वरदानी बनो

महादानी, वरदानी बनने का आधार है – 'महात्यागी'। महादानी अर्थात् मिले हुए खज़ाने बिना स्वार्थ के सर्व आत्माओं प्रति देने वाले – 'निःस्वार्थी'। स्व के स्वार्थ से परे आत्मा ही महादानी बन सकती है। सदा स्वयं में गुणों, शक्तियों और ज्ञान के खज़ाने से सम्पन्न आत्मा सदा सर्व आत्माओं प्रति श्रेष्ठ और शुभ भावना तथा सर्व का कल्याण हो, ऐसी श्रेष्ठ कामना रखने वाली सदा रुहानी रहमदिल, फ्राखदिल ऐसी आत्मा 'वरदानी' बन सकती है। **8.4.82**

हर एक को शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना की गिफ्ट दो

सदा हरेक को एक अलौकिक गिफ्ट देते रहना। जैसे बड़े आदमी कहाँ जाते हैं वा उनके पास कोई आते हैं तो खाली हाथ नहीं जाते हैं। आप सब भी बड़े-ते-बड़े बाप के बच्चे बड़े-ते-बड़े हो ना! कभी भी किसी

भी ब्राह्मण आत्मा से वा किसी से भी मिलते हो तो कुछ देने के बिना कैसे मिलेंगे! हरेक को शुभ भावना और शुभ कामना की गिफ्ट सदा देते रहो। विशेषता दो और विशेषता लो, गुण दो और गुण लो। ऐसी गॉडली गिफ्ट सभी को देते रहो। चाहे कोई किसी भी भावना वा कामना से आये लेकिन आप शुभ भावना की गिफ्ट दो। शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना की गिफ्ट का स्टॉक सदा भरपूर रहे। यह संकल्प मात्र भी उत्पन्न न हो कि आखिर भी कहाँ तक शुभ भावना से देखें। आखिर भी कोई हद है वा नहीं! यह संकल्प भी सिद्ध करता है कि इस गोल्डन गिफ्ट का स्टॉक जमा नहीं है। **31.12.82**

किनारा करने के बजाए शुभ भावना की ट्रायल कर एडजेस्ट करो

'सहनशीलता' का अवतार बन जाओ। जिसको आप लोग कहते हो अपने को एडजेस्ट करना है, किनारा नहीं करना है, छोड़ना नहीं है। हंस और बगुले की बात अलग है, उन्हों की आपस में खिट-खिट है। वह भी जहाँ तक हो सके उनके प्रति शुभ भावना से ट्रायल करना अपना फर्ज़ है। कई ऐसे भी मिसाल हुए हैं जो बिल्कुल एन्टी थे लेकिन शुभ भावना से निमित्त बनने वाले से भी आगे जा रहे हैं। तो शुभ भावना से फुल फोर्स से ट्रायल करनी चाहिए। अगर फिर भी नहीं होता है तो फिर डायरेक्शन लेकर कदम उठाना चाहिए क्योंकि कई बार ऐसे किनारा कर देने से कहाँ डिससर्विस भी हो जाती है। और कई बार ऐसा भी होता है कि आने वाली ब्राह्मण आत्मा की कमी होने के कारण अन्य आत्मायें भी भाग्य लेने से

वंचित रह जाती है इसलिए पहले स्वयं ट्रायल करो फिर अगर समझते हो यह बड़ी प्रॉब्लम है तो निमित्त बनी आत्माओं से वेरीफाय कराओ। फिर वह भी अगर समझती है कि अलग होना ही ठीक है फिर अलग हुए तो आपके ऊपर जवाबदारी नहीं रही। आप डायरेक्शन पर चले, फिर आप निश्चिंत। अगर समझो बाप ने निमित्त बनाया है तो बाप जो कार्य करते उसमें कल्याण ही है। अगर उसकी कोई ऐसी बात अच्छी नहीं भी लगती है, राँग भी हो सकती है, क्योंकि सब पुरुषार्थी हैं। अगर राँग भी है तो अपनी शुभ भावना से ऊपर दे देना चाहिए। ईर्ष्या के वश नहीं लेकिन बाप की सेवा सो हमारी सेवा है, इस शुभ भावना से, श्रेष्ठ जिम्मेवारी से ऊपर बात दे देनी चाहिए। देने के बाद खुद निश्चिंत हो जाओ। फिर यह नहीं सोचो कि यह बात दी फिर क्या हुआ? कुछ हुआ नहीं। हुआ वा नहीं यह जिम्मेवारी बड़ों की हो जाती है। आपने शुभ भावना से दी, आपका काम है अपने को खाली करना। अगर देखते हो बड़ों के ख्याल में बात नहीं आई तो भले दुबारा लिखो लेकिन सेवा की भावना से। अगर निमित्त बने हुए कहते हैं कि इस बात को छोड़ दो तो अपना संकल्प और समय व्यर्थ नहीं गँवाओ। **9.1.83**

शुभ भावना से बिगड़े हुए मूड को ठीक करना – यह है बड़े-से-बड़ी देन

सबसे बड़े-ते-बड़ी देन है दाता के बच्चे बन सर्व को सहयोग देना। बिगड़े हुए कार्य को, बिगड़े हुए संस्कारों को, बिगड़े हुए मूड को शुभ भावना से ठीक करने में सदा सर्व के सहयोगी बनना – यह है बड़े-ते-

बड़ी विशेष देन। इसने यह कहा, यह किया, यह देखते, सुनते, समझते हुए भी अपने सहयोग के स्टॉक द्वारा परिवर्तन कर देना, जैसे कोई खाली स्थान होता है तो आलराउण्ड सेवाधारी समय प्रमाण जगह भर देते हैं। ऐसे अगर किसी द्वारा कोई शक्ति की कमी अनुभव भी हो तो अपने सहयोग से जगह भर दो। जिससे दूसरे की कमी का भी अन्य कोई को अनुभव न हो, इसको कहा जाता है दाता के बच्चे बन समय प्रमाण उसे सहयोग की देन देना। **26.1.83**

सेवा में सफलता पाने के लिए हर प्रकार की सेवा साथ-साथ करो

नये स्थान पर सेवा की सफलता का आधार - जब भी किसी नये स्थान पर सेवा शुरू करते हो तो एक ही समय पर सर्व प्रकार की सेवा करो। मन्सा में शुभ भावना, वाणी में बाप से सम्बन्ध जुड़वाने और शुभ कामना के श्रेष्ठ बोल और सम्बन्ध-सम्पर्क में आने से स्नेह और शान्ति के स्वरूप से आकर्षित करो। ऐसे सर्व प्रकार की सेवा से सफलता को पायेंगे। सिर्फ वाणी से नहीं लेकिन एक ही समय साथ-साथ सेवा हो, ऐसा प्लैन बनाओ क्योंकि किसी की भी सर्विस करने के लिए विशेष स्वयं को ऊँची स्टेज पर स्थित करना पड़ता है। सेवा में रिज़ल्ट कुछ भी हो लेकिन सेवा के हर कदम में कल्याण भरा हुआ है। एक भी यहाँ तक पहुँच जाए यह भी सफलता है, इसी निश्चय के आधार पर सेवा करते चलो। सफलता तो समाई हुई है ही। अनेक आत्माओं के भाग्य की लकीर खींचने के निमित्त हैं, ऐसी विशेष आत्मा समझकर सेवा करते चलो। **27.2.83**

शुभ संकल्प पूरा होने का साधन एकरस अवस्था

सदा हर कार्य में सहयोग देने का शुभ संकल्प, कभी भी किसी भी प्रकार के वातावरण को शक्तिशाली बनाने में सदा सहयोगी। वातावरण को भी नीचे ऊपर नहीं होने देना। सहयोगी बनने के बदले कभी हलचल करने वाले नहीं बन जाना। सदा सहयोगी अर्थात् सदा सन्तुष्ट। एक बाप दूसरा न कोई, चलते चलो, उड़ते चलो। कोई भी संकल्प आये तो ऊपर देकर स्वयं निःसंकल्प होकर चलते जाओ। विचार देना, ईशारा देना यह दूसरी बात है, हलचल में आना यह दूसरी बात है। तो सदा एकरस। संकल्प दिया और निःसंकल्प बने। सदा स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति में बिज़ी रहो और सर्व के प्रति शुभ भावना रखो। जिस शुभ भावना से जो संकल्प रखते वह सब पूरा हो जाता है। शुभ संकल्प पूरा होने का साधन है – एकरस अवस्था। शुभ चिंतन, शुभ चिंतक – इसी से सब बातें सम्पन्न हो जायेगी। चारों ओर के वातावरण को शक्तिशाली बनाना, यही है शक्तिशाली श्रेष्ठ आत्माओं को कर्तव्य। **11.4.83**

सर्व के कल्याण की विधि-शुभ भावना

शक्तिरूप बन सर्वशक्तिवान के साथी बन सभी का कल्याण चाहते हो तो स्वयं शक्तिरूप बन सर्वशक्तिवान के साथी बन शुभ भावना रख चलते चलो। चिंतन वा चिंता मत करो, बन्धन में नहीं फंसो। अगर बन्धन है तो उसको काटने का तरीका है – 'याद'। कहने से नहीं छूटेंगे, स्वयं को छुड़ा दो तो छूट जायेंगे। **13.4.83**

वृत्ति दृष्टि बदलना – यही अलौकिक जीवन है

सदा न्यारापन अर्थात् अलौकिक जीवन। जैसे वह बोलते, चलते, गृहस्थी में रहते, ऐसे आप भी रहो तो अन्तर क्या हुआ! तो अपने आपको देखो कि परिवर्तन कितना किया है, चाहे लौकिक सम्बन्ध में बहू हो, सासू हो लेकिन आत्मा को देखो। बहू नहीं है लेकिन आत्मा है। आत्मा देखने से या तो खुशी होगी या रहम आयेगा। यह आत्मा बेचारी परवश है, अज्ञान में है, अंजान में है। मैं ज्ञानवान आत्मा हूँ, तो उस अंजान आत्मा पर रहम कर अपनी शुभ भावना से बदलकर दिखाऊंगी। अपनी वृत्ति, दृष्टि चेन्ज चाहिए। नहीं तो परिवार में प्रभाव नहीं पड़ता। तो वृत्ति और दृष्टि बदलना ही अलौकिक जीवन है। जो काम अज्ञानी करते वह आप नहीं कर सकते हो। संग का रंग आपका चाहिए, न कि उन्हों के संग का रंग आपको लग जाय। अपने को देखो मैं ज्ञानी आत्मा हूँ, मेरा प्रभाव अज्ञानी पर पड़ता है, अगर नहीं पड़ता तो शुभ भावना नहीं है। बोलने से प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन सूक्ष्म भावना जो होगी उसका फल मिलेगा। **14.4.83**

अपने पुण्य की पूंजी और शुभ भावना द्वारा सर्व के सहयोगी बनो

किसी भी आत्मा के प्रति सदा श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना रखना – यह सबसे बड़ा पुण्य है। चाहे कैसी भी आत्मा हो, विरोधी आत्मा हो वा स्नेही आत्मा हो लेकिन पुण्य आत्मा का पुण्य ही है – जो विरोधी आत्मा

को भी श्रेष्ठ भावना के पुण्य की पूँजी से उस आत्मा को भी परिवर्तन करे। पुण्य कहा ही जाता है, जिस आत्मा को जिस वस्तु की अप्राप्ति हो उसको प्राप्त कराने का कार्य करना – यह पुण्य है। जब कोई विरोधी आत्मा आपके सामने आती है तो पुण्य आत्मा, सदा उस आत्मा को सहनशक्ति से वंचित आत्मा है – उसी नज़र से देखेंगे। और अपने पुण्य की पूँजी द्वारा शुभ भावना द्वारा, श्रेष्ठ संकल्प द्वारा उस आत्मा को सहनशक्ति की प्राप्ति के सहयोगी आत्मा बनायेंगे। उसके लिए यही पुण्य का कार्य हो जाता है। पुण्य आत्मा सदा स्वयं को दाता के बच्चे देने वाला समझते हैं। किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल की प्राप्ति के लेने वाले की कामना से परे रहते हैं। यह आत्मा कुछ देवे तो मैं दूँ व यह भी कुछ करे तो मैं भी करूँ, ऐसी हद की कामना नहीं रहती। दाता के बच्चे बन सबके प्रति स्नेह, सहयोग, शक्ति देने वाले पुण्य आत्मा होंगे। पुण्य आत्मा कभी भी अपने पुण्य के बदले प्रशंसा लेने की कामना नहीं रखते क्योंकि पुण्य आत्मा जानते हैं कि यह हद की प्रशंसा को स्वीकार करना सदाकाल की प्राप्ति से वंचित होना है। इसलिए वह सदा देने में सागर के समान सम्पन्न रहते हैं। **15.5.83**

मेरे-पन के बजाए बेहद में शुभ भावना रखो तो विश्व कल्याणकारी बन सकेंगे

यह 'मेरा' शब्द हलचल पैदा करता है। मेरा है कहाँ? मेरा-पन मिटाना ही सर्व बन्धन मुक्त बनना है। मेरा धन, मेरी पत्नी, मेरा पति, मेरा बच्चा ज्ञान में नहीं चलता, उसकी बुद्धि का ताला खोल दो। सिर्फ उन्हो

का क्यों सोचते हो! मेरे के भाव से क्यों सोचते! यह कभी भी कोई बच्चे ने अभी तक नहीं कहा है कि मेरे गाँव की वा देश की आत्मा का ताला खोलो। कहते मेरी पत्नी का, मेरे बच्चों का, मेरे-पन का भाव, बेहद में नहीं ले आता। इसलिए बेहद की शुभ भावना हर आत्मा के प्रति रखते हुए सर्व के साथ उन आत्माओं को भी देखो। क्या समझा! तेरा तो तेरा हो गया। मेरा कोई बोझ नहीं। चाहे बापदादा कहाँ भी सेवा प्रति निमित्त बनावे। तन द्वारा सेवा करावे, मन द्वारा मन्सा सेवा करावे, जहाँ रखे, जिस हाल में रखे, चाहे दाल-रोटी खिलावे, चाहे 36 प्रकार के पकवान खिलावे। लेकिन जब मेरा कुछ नहीं तो तेरा तू जानो। आप क्यों सोचते हो? भगवान अपने बच्चों को सदा तन से, मन से, धन से सहज रखेगा। यह बाप की गैरन्टी है। फिर आप लोग क्यों बोझ उठाते हो? उस दिन भी सुनाया ना कि सब कुछ तेरा करने वाले हो तो जो बाप खिलावे वो खाओ, पियो और मौज करो, याद करो। सिर्फ एक ड्यूटी आपकी है बस। बाकी सब ड्यूटी बाबा आपेही निभायेगा। एक ही ड्यूटी तो कर सकते हो ना! मेरा कहते हो तब मन चंचल होता है। यही सोचते हो ना कि यह मुश्किल बात है। मुश्किल है नहीं लेकिन कर देते हो। मेरे-पन का भाव मुश्किल बना देता और तेरेपन का भाव सहज बना देता है। विश्व कल्याण की भावना रखो तो विश्व-कल्याण का कर्त्तव्य जल्दी समाप्त हो जायेगा। **19.5.83**

श्रेष्ठ भावना के बीज को स्मृति का पानी देते रहो तो फल अवश्य मिलेगा

सेकण्ड में स्वधर्म का परिचय दे स्व स्वरूप में स्थित करा सकते हो

ना? अपनी वृत्ति द्वारा, कौन-सी वृत्ति? इस आत्मा को भी अर्थात् हमारे इस भाई को भी बाप का वर्सा मिल जाये। इस शुभ वृत्ति व शुभ भावना से अनेक आत्माओं को अनुभव करा सकते हो, क्यों? भावना का फल अवश्य मिलता है। आप सबकी श्रेष्ठ भावना है, स्वार्थ रहित भावना है, रहम की भावना है, कल्याण की भावना है। ऐसी भावना का फल नहीं मिले यह हो नहीं सकता। जब बीज शक्तिशाली है तो फल ज़रूर मिलता है। सिर्फ इस श्रेष्ठ भावना के बीज को सदा स्मृति का पानी देते रहो तो समर्थ फल, प्रत्यक्ष फल के रूप में अवश्य प्राप्त होता ही है। क्वेश्चन नहीं, होगा या नहीं होगा। सदा समर्थ स्मृति का पानी है अर्थात् सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना है तो विश्व शान्ति का प्रत्यक्ष फल मिलना ही है। सर्व आत्माओं की जन्म-जन्म की आश बाप के साथ-साथ सभी बच्चे भी पूर्ण कर रहे हो और सर्व की हो जानी है। **5.3.84**

विशेषता देखना और दिखाना, यही संगठन के माला की डोर है

सदा दूसरे की विशेषता वर्णन करना, यही सेवा में वृद्धि करना है। इसी विधि से सदा वृद्धि हुई है और होती रहेगी। सदैव विशेषता देखना और दूसरों को विशेषता दिखाना, सिखाना, यही संगठन की माला की डोर है। मोती भी तो धागे में पिरोते हैं ना। संगठन का धागा है ही यह। विशेषता के सिवाए और कोई वर्णन नहीं क्योंकि मधुबन महान भूमि है। महा भाग्य भी है तो महा पाप भी है। मधुबन में आ करके अगर ऐसा कोई व्यर्थ बोलता है तो उसका बहुत पाप बन जाता है। इसलिए सदैव विशेषता

देखने का चश्मा पड़ा हुआ हो। व्यर्थ देख नहीं सकते। जैसे लाल चश्मे से सिवाए लाल के और कुछ देखते हैं क्या! तो सदैव यही चश्मा पड़ा हुआ हो विशेषता देखने का। कभी कोई बात देखो भी तो उसका वर्णन कभी नहीं करो। वर्णन किया भाग्य गया। कुछ भी कमी आदि है तो उसका जिम्मेवार बाप है, निमित्त किसने बनाया! बाप ने। तो निमित्त बने हुए की कमी वर्णन करना माना बाप की कमी वर्णन करना, इसलिए इन्हों के लिए कभी भी बिना शुभ भावना के और कोई वर्णन नहीं कर सकते। **12.3.84**

बाप और सर्व ब्राह्मणों की आशीर्वाद लेने का आधार श्रेष्ठ संबंध

ब्राह्मण जीवन श्रेष्ठ सम्बन्धों का जीवन है ही – बाप और सर्व ब्राह्मण परिवार की आशीर्वाद लेने का जीवन। आशीर्वाद अर्थात् शुभ भावनायें, शुभ कामनायें। आप ब्राह्मणों का जन्म ही बापदादा की आशीर्वाद कहो, वरदान कहो इसी आधार से हुआ है। बाप ने कहा – आप भाग्यवान, विशेष श्रेष्ठ आत्मा हो। इसकी स्मृति रूपी आशीर्वाद वा वरदान से शुभ भावना, शुभ कामना से आप ब्राह्मणों का नया जीवन, नया जन्म हुआ है। सदा आशीर्वाद लेते रहना। यही संगमयुग की विशेषता है! लेकिन इन सबका आधार – सर्व श्रेष्ठ सम्बन्ध है। सम्बन्ध मेरे-मेरे की जंजीरों को, बन्धन को सेकण्ड में समाप्त कर देता है और सम्बन्ध का पहला स्वरूप वो ही सहज बात है, बाप भी बिन्दु मैं भी बिन्दु और सर्व आत्मायें भी बिन्दु। तो बिन्दु का ही हिसाब हुआ ना। इसी बिन्दु में ज्ञान का सिन्धु समाया हुआ है। दुनिया के हिसाब में भी बिन्दु 10 को 100 बना देता और

100 को हजार बना देता है। बिन्दु बढ़ाते जाओ और संख्या बढ़ाते जाओ। तो महत्त्व किसका हुआ? बिन्दु का हुआ ना। ऐसे ब्राह्मण जीवन में सर्व प्राप्ति का आधार बिन्दु है। **2.3.84**

शुभ भावना, शुभ कामना का आधार निमित्त भाव

निमित्त भाव रख सदा सेवा में आगे बढ़ते चलो। जहाँ निमित्त भाव है, मैं-पन का भाव नहीं है वहाँ सदा उन्नति को पाते रहेंगे। यह निमित्त-भाव, शुभ भावना, शुभ कामना स्वतः जागृत करता है। आज शुभ भावना, शुभ कामना नहीं है उसका कारण निमित्त भाव के बजाए मैं-पन आ गया है। अगर निमित्त समझें तो करावनहार बाप को समझें। करावनहार स्वामी सदा ही श्रेष्ठ करायेंगे। ट्रस्टीपन के बजाए राज्य की प्रवृत्ति के गृहस्थी बन गये हैं, गृहस्थी में बोझ होता है और ट्रस्टीपन में हल्कापन होता है। जब तक हल्के नहीं तो निर्णय शक्ति भी नहीं है। ट्रस्टी हैं, तो हल्के हैं तो निर्णय शक्ति श्रेष्ठ है। इसलिए सदा ट्रस्टी हैं, निमित्त हैं, यह भावना फलदायक है। भावना का फल मिलता है। तो यह निमित्तपन की भावना सदा श्रेष्ठ फल देती रहेगी। तो सभी साथियों को यह स्मृति दिलाओ कि निमित्त भाव, ट्रस्टीपन का भाव रखो तो यह राजनीति विश्व के लिए श्रेष्ठ नीति हो जायेगी। सारा विश्व इस भारत की राजनीति को कॉपी करेगा। लेकिन इसका आधार ट्रस्टीपन अर्थात् निमित्त भाव। **8.4.84**

शुभचिंतक बन शुभ भावना, शुभ कामना की मानसिक सेवा से सबको सुख शान्ति की अंचली दो

वर्तमान समय विश्व में मैजारिटी आत्माओं में भय और चिन्ता – यह दोनों ही विशेष सभी में प्रवेश हैं लेकिन जितना ही वह फिकर में हैं, चिन्ता में हैं उतने ही आप शुभचिन्तक हो। चिन्ता बदल शुभचिन्तक के भावना स्वरूप बन गये हो। भयभीत के बजाए सुख के गीत गा रहे हो। इतना परिवर्तन अनुभव करते हो ना! सदा शुभचिन्तक बन शुभ भावना, शुभ कामना की मानसिक सेवा से भी सभी को सुख-शान्ति की अंचली देने वाले हो ना! अकाले मृत्यु वाली आत्माओं को, अकाल मूर्त बन शान्ति और शक्ति का सहयोग देने वाले हो ना! क्योंकि वर्तमान समय जीवन ही अकाले मृत्यु की है। जैसे वायु का, समुद्र का तूफान अचानक लगता है, ऐसे यह अकाल मृत्यु का भी तूफान अचानक और तेजी से एक साथ अनेकों को ले जाता है। यह अकाले मृत्यु का तूफान अभी तो शुरू हुआ है। विशेष भारत में सिविल वार और प्राकृतिक आपदायें ये ही हर कल्प परिवर्तन के निमित्त बनते हैं। विदेश की रूप रेखा अलग प्रकार की है लेकिन भारत में यही दोनों बातें विशेष निमित्त बनती हैं। और दोनों की रिहर्सल देख रहे हो, दोनों ही साथ-साथ अपना पार्ट बजा रहे हैं। **10.12.84**

निर्भय वही है जिसकी सबके प्रति भाई-भाई की भावना है, किसी से वैर नहीं

आप सब बच्चे 'निर्भय' हो ना, क्यों? क्योंकि आप सदा 'निर्वैर' हो।

आपका किसी से भी वैर नहीं है। सभी आत्माओं के प्रति भाई-भाई की शुभ भावना, शुभ कामना है। ऐसी शुभ भावना, कामना वाली आत्मायें सदा निर्भय रहती हैं। भयभीत होने वाली नहीं। स्वयं योगयुक्त स्थिति में स्थित हैं तो कैसी भी परिस्थिति में सेफ ज़रूर हैं। तो सदा सेफ रहने वाले होना! बाप की छत्रछाया में रहने वाले सदा सेफ हैं। छत्रछाया से बाहर निकले तो फिर भय है। छत्रछाया के अन्दर निर्भय हैं। कितना भी कोई कुछ भी करे लेकिन बाप की याद एक किला है। जैसे किले के अन्दर कोई नहीं आ सकता, ऐसे याद के किले के अन्दर सेफ। हलचल में भी अचल। घबराने वाले नहीं। यह तो कुछ भी नहीं देखा, यह रिहर्सल है। रीयल तो और है। रिहर्सल पक्का कराने के लिए की जाती है। तो पक्के हो गये, बहादुर हो गये? बाप से लगन है तो कैसी भी समस्याओं में पहुँच गये। समस्या जीत बन गये। लगन निर्विघ्न बनने की शक्ति देती है। बस सिर्फ 'मेरा बाबा' यह महामन्त्र याद रहे। वह भूला तो गये, यही याद रहा तो सदा सेफ हैं। **17.12.84**

शुभचिन्तक बनने का आधार – स्वचिन्तन और शुभचिन्तन

आज बापदादा चारों ओर के विशेष बच्चों को देख रहे हैं। कौन से विशेष बच्चे हैं, जो सदा स्वचिन्तन, शुभचिन्तन में रहने के कारण सर्व के शुभचिन्तक हैं। जो सदा शुभचिन्तन में रहता है वह स्वत: ही शुभचिन्तक बन जाता है। शुभचिन्तक का आधार है - शुभचिंतन, पहला कदम है स्व-चिन्तन। स्वचिन्तन अर्थात् जो बापदादा ने 'मैं कौन' की पहेली बताई

है, उसको सदा स्मृति स्वरूप में रखना। जैसे बाप और दादा जो हैं, जैसा है – वैसा उनको जानना ही यथार्थ जानना है और दोनों को जानना ही जानना है। ऐसे स्व को भी जो हूँ, जैसा हूँ अर्थात् जो आदि अनादि श्रेष्ठ स्वरूप हूँ, उस रूप में अपने आपको जानना और उसी स्वचिन्तन में रहना, इसको कहा जाता है – 'स्वचिन्तन'। मैं कमजोर हूँ; पुरुषार्थी हूँ लेकिन सफलता स्वरूप नहीं हूँ, मायाजीत नहीं हूँ, यह सोचना स्वचिन्तन नहीं है क्योंकि संगमयुगी पुरुषोत्तम ब्राह्मण आत्मा अर्थात् शक्तिशाली आत्मा। यह कमज़ोरी वा पुरुषार्थहीन वा ढीला पुरुषार्थ देह-अभिमान की रचना है। स्व अर्थात् आत्म-अभिमानी। इस स्थिति में यह कमज़ोरी की बातें आ नहीं सकती। तो यह देह-अभिमान की रचना का चिन्तन करना, यह भी स्वचिन्तन नहीं। स्वचिन्तन अर्थात् जैसा बाप वैसे मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ। ऐसा स्वचिन्तन वाला शुभचिन्तन कर सकता है। शुभचिन्तन अर्थात् ज्ञान रत्नों का मनन करना। रचता और रचना के गुह्य रमणीक राज़ों में रमण करना। एक है सिर्फ रिपीट करना, दूसरा है ज्ञान की लहरों में लहराना अर्थात् ज्ञान खजाने के मालिकपन के नशे में रह सदा ज्ञान रत्नों से खेलते रहना। ज्ञान के एक-एक अमूल्य बोल को अनुभव में लाना अर्थात् स्वयं को अमूल्य रत्नों से सदा महान बनाना। ऐसा ज्ञान में रमण करने वाला ही शुभचिन्तन करने वाला है। ऐसा शुभचिन्तन वाला स्वत: ही व्यर्थ चिन्तन, परचिन्तन से दूर रहता है। स्वचिन्तन, शुभचिन्तन करने वाली आत्मा हर सेकण्ड अपने शुभचिन्तन में इतना बिज़ी रहती है जो और चिन्तन करने के लिए सेकण्ड व श्वास भी फ़ुर्सत का नहीं। इसलिए सदा परचिन्तन और व्यर्थ चिन्तन से सहज ही सेफ रहता है। न बुद्धि में स्थान है, न समय है। समय भी शुभचिन्तन में लगा हुआ है, बुद्धि सदा

ज्ञान रत्नों से अर्थात् शुभ संकल्पों से सम्पन्न अर्थात् भरपूर है। दूसरा कोई संकल्प आने की मार्जिन ही नहीं। इसको कहा जाता है – शुभचिन्तन करने वाला। हर ज्ञान के बोल के राज़ में जाने वाला। सिर्फ साज के मजे में रहने वाला नहीं। साज़ अर्थात् बोल के राज़ में जाने वाला। वैसे स्थूल साज़ भी सुनने में बहुत अच्छे लगते हैं ना। ऐसे ज्ञान मुरली का साज़ बहुत अच्छा लगता है लेकिन साज के साथ राज़ समझने वाले ज्ञान खजाने के रत्नों के मालिक बन मनन करने में मगन रहते हैं। मगन स्थिति वाले के आगे कोई विघ्न आ नहीं सकता। ऐसा शुभचिन्तन करने वाला स्वत: ही सर्व के सम्पर्क में शुभचिन्तक बन जाता है। स्वचिन्तन फिर शुभचिन्तन, ऐसी आत्मायें शुभचिन्तक बन जाती हैं क्योंकि जो स्वयं दिन-रात शुभचिन्तन में रहते हैं वह औरों के प्रति कभी भी न अशुभ सोचते, न अशुभ देखते, उनका निजी संस्कार वा स्वभाव शुभ होने के कारण वृत्ति, दृष्टि सर्व में शुभ देखने और सोचने की स्वत: ही आदत बन जाती है, इसलिए हरेक के प्रति शुभचिन्तक रहता है। किसी भी आत्मा का कमजोर संस्कार देखते हुए भी उस आत्मा के प्रति अशुभ वा व्यर्थ नहीं सोचेंगे कि यह तो ऐसा ही है। लेकिन उस कमजोर आत्मा को सदा उमंग-उल्हास के पंख दे शक्तिशाली बनाए ऊँचा उड़ायेंगे। सदा उस आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा सहयोगी बनेंगे। शुभचिन्तक अर्थात् नाउम्मींदवार को उम्मीदवार बनाने वाले। वह शुभचिन्तन के खजाने से कमजोर को भी भरपूर कर आगे बढ़ायेगा। यह नहीं सोचेगा इसमें तो ज्ञान है ही नहीं। यह ज्ञान के पात्र नहीं। यह ज्ञान में चल नहीं सकते।

शुभचिन्तक आत्मा बापदादा द्वारा ली हुई शक्तियों के सहारे की टांग दे लंगड़े को भी चलाने के निमित्त बन जायेंगे। शुभचिन्तक आत्मा अपनी

शुभचिन्तक स्थिति द्वारा, दिलशिकस्त आत्मा को दिलखुश मिठाई द्वारा उनको भी तन्दुरुस्त बनायेगी। दिलखुश मिठाई खाते हो ना। तो दूसरे को खिलाने भी आती है ना। शुभचिन्तक आत्मा किसी की कमज़ोरी जानते हुए भी उस आत्मा की कमज़ोरी को भुलाकर अपनी विशेषता के शक्ति की समर्थी दिलाते हुए उसको भी समर्थ बना देंगे। किसी के प्रति घृणा दृष्टि नहीं। सदा गिरी हुई आत्मा को ऊँचा उड़ाने की दृष्टि होगी। सिर्फ स्वयं शुभचिन्तन में रहना वा शक्तिशाली आत्मा बनना यह भी फर्स्ट स्टेज नहीं, इसको भी शुभचिन्तक नहीं कहेंगे। शुभचिन्तक अर्थात् अपने खज़ानों को मन्सा द्वारा, वाचा द्वारा, अपने रुहानी सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा अन्य आत्माओं प्रति सेवा में लगाना। शुभचिन्तक बने हो? सदा वृत्ति शुभ, दृष्टि शुभ तो सृष्टि भी श्रेष्ठ ब्राह्मणों की शुभ दिखाई देगी। वैसे भी साधारण रूप में कहा जाता है – शुभ बोलो। ब्राह्मण आत्मायें तो हैं ही शुभ जन्म वाली। शुभ समय पर जन्मे हो। ब्राह्मणों के जन्म की घड़ी अर्थात् वेला शुभ है ना। भाग्य की दशा भी शुभ है। सम्बन्ध भी शुभ है। संकल्प, कर्म भी शुभ है। इसलिए ब्राह्मण आत्माओं के साकार में तो क्या स्वप्न में भी अशुभ का नाम निशान नहीं - ऐसी शुभचिन्तक आत्मायें हो ना। **14.1.85**

शुभ भावना, शुभ कामना की लाइट माइट चारों ओर फैलाकर विश्व कल्याणकारी बनो

दिव्य बुद्धि की गिफ्ट अलौकिक विमान है। जिस दिव्य विमान द्वारा सेकण्ड के स्विच ऑन करने से जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। स्विच है संकल्प। साइन्स वाले तो एक लोक का सैर कर सकते। आप तीनों लोकों

का सैर कर सकते हो। सेकण्ड में विश्व-कल्याणकारी स्वरूप बन सारे विश्व को लाइट और माइट दे सकते हो। सिर्फ दिव्य बुद्धि के विमान द्वारा ऊँची स्थिति में स्थित हो जाओ। जैसे उन्होंने विमान द्वारा हिमालय के ऊपर राख डाली, नदी में राख डाली, किसलिए? चारों ओर फैलाने के लिए ना! उन्होंने तो राख डाली, आप दिव्य बुद्धि रूपी विमान द्वारा सबसे ऊँची चोटी की स्थिति में स्थित हो विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति लाइट और माइट की शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ। विमान तो शक्तिशाली है ना? सिर्फ यूज़ करना आना चाहिए। **21.1.85**

श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना का संकल्प ही "दुआ" है

आप भाग्यवान आत्माओं के श्रेष्ठ कर्म चरित्र के रूप में अब तक भी गाये जा रहे हैं। आप भाग्यवान आत्माओं की श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना का श्रेष्ठ संकल्प 'दुआ' के रूप में गाये जा रहे हैं। किसी भी देवता के आगे दुआ मांगने जाते हैं। **16.2.85**

एक स्थान पर होते हुए चारों ओर संकल्प शक्ति से वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाओ

मन से स्वयं सदा मन के शान्ति स्वरूप बन, सदा हर संकल्प में शक्तिशाली बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, दाता बन सुख-शान्ति

के शक्ति की किरणें वायुमण्डल में फैलाते रहो। जब आपकी रचना सूर्य चारों ओर प्रकाश की किरणें फैलाते रहते हैं तो आप मास्टर रचता, मास्टर सर्वशक्तिवान, विधाता, वरदाता, भाग्यवान, प्राप्ति की किरणें नहीं फैला सकते हो? संकल्प शक्ति अर्थात् मन द्वारा एक स्थान पर होते हुए भी चारों ओर वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बना सकते हो। **18.2.85**

शुभ भावना द्वारा अनेक आत्माओं का कल्याण कर आगे बढ़ाते चलो

बापदादा की पालना का पानी फूलों को देते हुए अच्छे-अच्छे रुहानी गुलाब बाप के सामने लाओ। सदा बाप समान निमित्त बन अनेक आत्माओं के कल्याण करने की शुभ भावना से आगे बढ़ते रहो। बाप समान निमित्त बनने वाली आत्माओं की सदा सफलता है ही। **21.2.85**

अपने सम्पर्क द्वारा सर्व को दातापन की अनुभूति कराओ

सर्व आत्माओं के सम्पर्क में आना, स्नेही बनना, दिलों के स्नेह की आशीर्वाद अर्थात् शुभ भावना सर्व के अन्दर से उस आत्मा के प्रति निकले। चाहे जाने, चाहे न जाने। दूर का सम्बन्ध वा सम्पर्क हो लेकिन जो भी देखे वह स्नेह के कारण ऐसे ही अनुभव करे कि यह हमारा है, स्नेह की पहचान से अपनापन अनुभव करेगा। सम्बन्ध दूर का हो लेकिन स्नेह सम्पन्न का अनुभव करायेगा। विश्व के मालिक वा देह के मालिकपन

की अभ्यासी आत्माओं की यह भी विशेषता अनुभव में आयेगी कि वह जिसके भी सम्पर्क में आयेंगे, उसको उस विशेष आत्मा से दातापन की अनुभूति होगी। यह किसी के संकल्प में भी नहीं आ सकता कि यह लेने वाले हैं। उस आत्मा से सुख की, दातापन की वा शान्ति, प्रेम, आनन्द, खुशी, सहयोग, हिम्मत, उत्साह-उमंग - किसी न किसी विशेषता के दातापन की अनुभूति होगी। सदा विशाल बुद्धि और विशाल दिल, जिसको आप बड़ी दिल वाले कहते हो – ऐसी अनुभूति होगी। अब इन निशानियों से अपने आपको चेक करो कि क्या बनने वाले हो? **14.12.85**

स्वमान की स्थिति से अभिमान व अपमान की भावना को समाप्त करो

न अभिमान में आओ, न अपमान करने में आओ। दोनों ही भावनायें - शुभ भावना, शुभ कामना से दूर कर लेती हैं। तो चेक करो - जरा भी संकल्प मात्र भी अभिमान वा अपमान की भावना रह तो नहीं गई है? जहाँ अभिमान और अपमान की भावना है, वह कभी भी स्वमान की स्थिति में स्थित हो नहीं सकता। स्वमान सर्व कामनाओं से किनारा कर देगा और सदा सुख के संसार में, सुख के शान्ति के झूले में झूलते रहेंगे। इसको ही कहा जाता है – सर्व कामना जीत, जगतजीत। **23.12.85**

हर विशाल कार्य की सफलता का आधार – आपकी शुभ कामनायें

जिस समय कोई विशाल कार्य जहाँ भी होता है उस समय दूर बैठे भी

उतने समय तक सदा हर एक के मन में विश्व-कल्याण की श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना ज़रूर होनी चाहिए। जैसे आजकल के वी.आई.पी अगर स्वयं नहीं पहुँच सकते हैं तो शुभकामनायें भेजते हैं ना। तो आप उन्हों से कम हो क्या! आप सभी विशेष आत्माओं की शुभ भावना, शुभ कामना उस कार्य को अवश्य सफल बनायेंगी।

यह विशेष दिन विशेष कंगन बांधना चाहिए और किसी भी हद की बातों में संकल्प शक्ति, समय की शक्ति, व्यर्थ न गंवाए, हर संकल्प से, हर समय विशाल सेवा के निमित्त बन मन्सा शक्ति से भी सहयोगी बनना है। ऐसे नहीं कि आबू में कान्फ्रेन्स हो रही है, हम तो फलाने देश में बैठे हैं, नहीं। आप सभी विशाल कार्य में सहयोगी हो। वातावरण वायुमण्डल बनाओ। जब साइन्स की शक्ति से एक देश से दूसरे देश तक रॉकेट भेज सकते हैं तो क्या साइलेन्स की शक्ति से आप शुभ भावना, कल्याण की भावना द्वारा यहाँ आबू में मन्सा द्वारा सहयोगी नहीं बन सकते? कोई साकार में वाणी से, कर्म से निमित्त बनेंगे। कोई मन्सा सेवा से निमित्त बनेंगे। लेकिन जितना दिन प्रोग्राम चलता है, चाहे 5 दिन चाहे 6 दिन चलता, इतना ही समय हर ब्राह्मण आत्मा को सेवा का कंगन बंधा हुआ हो कि मुझ आत्मा को निमित्त बन सफलता को लाना है। हर एक अपने को जिम्मेवार समझे। **30.12.85**

श्रेष्ठ भाव, शुभ भाव से कैसे भी भाव-स्वभाव का परिवर्तन करो

सम्बन्ध में सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना

हो। स्नेह की भावना, सहयोग की भावना हो। कैसे भी भाव स्वभाव वाला हो लेकिन आपका सदा श्रेष्ठ भाव, शुभ भाव हो, यही गोल्डन जुबली मनाना है। **6.1.86**

उल्टे को सुल्टा बनाने की भावना ही कल्याण भावना है

यह है ही उल्टा यह नहीं सोचो, लेकिन उल्टे को सुल्टा कैसे करूँ, यह सोचो। इसको कहा जाता है - कल्याण की भावना। श्रेष्ठ भाव, शुभ भावना से अपने व्यर्थ भाव-स्वभाव और दूसरे के भाव-स्वभाव को परिवर्तन करने में विजय प्राप्त करेंगे? समझा! पहले स्व पर विजयी फिर सर्व पर विजयी, फिर प्रकृति पर विजयी बनेंगे। यह तीनों विजय आपको 'विजयी माला' का मणका बनायेगी। **1.3.86**

मुरली द्वारा शुद्ध संकल्पों की शक्ति का स्टॉक जमा करो

विशेष रूप में शुद्ध संकल्प की शक्ति से जमा का खाता बढ़ाना है। शुद्ध संकल्प की शक्ति का विशेष अनुभव अभी और अन्तर्मुखी बन करने की आवश्यकता है। शुद्ध संकल्पों की शक्ति सहज व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर दूसरों के प्रति भी शुभ भावना, शुभ कामना के स्वरूप से परिवर्तन कर सकते हैं। अभी इस शुद्ध संकल्प के शक्ति का विशेष अनुभव करना है। यह शुद्ध संकल्पों की शक्ति व्यर्थ संकल्पों को सहज

समाप्त कर देती है। न सिर्फ अपने व्यर्थ संकल्प लेकिन आपके शुद्ध संकल्प दूसरों के प्रति भी शुभ भावना, शुभ कामना के स्वरूप से परिवर्तन कर सकते हैं। अभी इस शुद्ध संकल्प के शक्ति का स्वयं के प्रति भी स्टॉक जमा करने की आवश्यकता है। मुरली सुनना, यह लगन तो बहुत अच्छी है। मुरली अर्थात् खज़ाना। मुरली की हर प्वाइंट को शक्ति के रूप में हर समय कार्य में लगाना। अभी इस विशेषता का विशेष अटेन्शन रखना है। शुद्ध संकल्प की शक्ति के महत्व को अभी जितना अनुभव करते जायेंगे उतना मन्सा सेवा के भी सहज अनुभवी बनते जायेंगे। पहले तो स्वयं के प्रति शुद्ध संकल्पों की शक्ति जमा चाहिए। और फिर साथ-साथ आप सभी बाप के साथ विश्व कल्याणकारी आत्मायें, विश्व परिवर्तक आत्मायें हो। तो विश्व के प्रति भी यह शुद्ध संकल्पों की शक्ति द्वारा परिवर्तन करने का कार्य अभी बहुत रहा हुआ है। जैसे वर्तमान समय ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूपधारी बन शुद्ध संकल्प की शक्ति से आप सबकी पालना कर रहे हैं। सेवा की वृद्धि से सहयोगी बन आगे बढ़ा रहे हैं, यह विशेष सेवा - शुद्ध संकल्प के शक्ति की चल रही है। **31.3.86**

सेवाभाव अर्थात् सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का भाव

सेवा भाव अर्थात् हर आत्मा की भावना प्रमाण फल देना। भावना हद की नहीं लेकिन श्रेष्ठ भावना। आप सेवाधारियों प्रति अगर कोई रुहानी स्नेह की भावना रखते, शक्तियों के सहयोग की भावना रखते,

खुशी की भावना रखते, शक्तियों के प्राप्ति की भावना रखते, उमंग-उत्साह की भावना रखते, ऐसे भिन्न-भिन्न भावना का फल अर्थात् सहयोग द्वारा अनुभूति कराना, इसको सेवा-भाव कहा जाता है। सिर्फ स्पीच करके आ गये, या ग्रुप समझाकर आ गये, कोर्स पूरा करके आ गये वा सेन्टर खोलकर आ गये, इसको सेवाभाव नहीं कहा जाता। सेवा अर्थात् किसी भी आत्मा को प्राप्ति का मेवा अनुभव कराना। ऐसी सेवा में तपस्या सदा साथ है। **9.4.86**

फल तैयार है सिर्फ शुभ भावना से योग्य धरनी तैयार करो

सर्व के सहयोग से सुखमय संसार - यह विषय तो ऐसी है जो स्वयं सभी सहयोग देने की ऑफर करेंगे। सहयोग से फिर सम्बन्ध में भी आयेंगे। इसलिए आपेही ऑफर होगी, सिर्फ शुभ-भावना, शुभ-कामना सम्पन्न सेवा में सेवाधारी बन आगे बढ़ो। शुभ भावना का फल प्राप्त नहीं हो - यह हो ही नहीं सकता। सेवाधारियों के शुभ भावना, शुभ कामना की धरनी सहज फल देने के निमित्त बनेगी। फल तैयार है, सिर्फ धरनी तैयार होने की थोड़ी-सी देरी है। फल तो फटाफट निकलेंगे लेकिन उसके लिए योग्य धरनी चाहिए। अभी वह धरनी तैयार हो रही है। **2.11.87**

मन्सा सेवा करने के लिए लाइट-माइट से सम्पन्न बनो

अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ वायबेशन द्वारा

किसी भी स्थान पर रहते हुए अनेक आत्माओं की सेवा करना, यही मन्सा सेवा है। इसकी विधि है – लाइट हाउस, माइट हाउस बनना। लाइट हाउस एक ही स्थान पर स्थित होते दूर-दूर की सेवा करते हैं। ऐसे आप सभी एक स्थान पर होते अनेकों की सेवा अर्थ निमित्त बन सकते हो। इतना शक्तियों का खज़ाना जमा है तो सहज कर सकते हो। इसमें स्थूल साधन वा चान्स वा समय की प्रॉबलम नहीं है, सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है। सदा मन, बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए, 'मनमनाभव' के मन्त्र का सहज स्वरूप होना चाहिए। **6.11.87**

शुभचिंतक बन चिंतामणि आत्माओं की वृत्ति का परिवर्तन करो

शुभ-चिन्तक बनना - यही सहज रूप की मन्सा सेवा है जो चलते-फिरते हर ब्राह्मण आत्मा वा अन्जान आत्माओं के प्रति कर सकते हो। आप सबके शुभ-चिन्तक बनने के वायब्रेशन वायुमण्डल को वा चिन्तामणि आत्मा की वृत्ति को बहुत सहज परिवर्तन कर देंगे। आज के मनुष्य आत्माओं के जीवन में चारों ओर से चाहे व्यक्तियों द्वारा, चाहे वैभवों द्वारा - व्यक्तियों में स्वार्थ भाव होने के कारण, वैभवों में अल्पकाल की प्राप्ति होने के कारण - थोड़े समय के बाद चिन्ता में बदल जाती है अर्थात् वैभव वा व्यक्ति चिन्ता मिटाने वाले नहीं, चिन्ता उत्पन्न कराने के निमित्त बन जाते हैं। ऐसे कोई न कोई चिन्ता में परेशान आत्माओं को शुभ-चिन्तक आत्मायें बहुत थोड़ी दिखाई देती हैं। शुभ-चिन्तक आत्माओं के

थोड़े समय का सम्पर्क भी अनेक चिन्ताओं को मिटाने का आधार बन जाता है। तो आज विश्व को शुभ-चिन्तक आत्माओं की आवश्यकता है, इसलिए आप शुभ-चिन्तक मणियाँ व आत्मायें विश्व को अति प्रिय हैं। जब सम्पर्क में आ जाते हैं तो अनुभव करते हैं कि ऐसे शुभ-चिन्तक दुनिया में कोई दिखाई नहीं देते।

शुभ-चिन्तक सदा रहें, इसका विशेष आधार है – 'शुभ-चिन्तन'। जिसका सदा शुभ-चिन्तन रहता, अवश्य वह शुभ-चिन्तक है। अगर कभी-कभी व्यर्थ चिन्तन वा पर-चिन्तन होता है तो सदा शुभ-चिन्तक भी नहीं रह सकते। शुभ-चिन्तक आत्मायें औरों के भी व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन को समाप्त करने वाली हैं। तो हर एक श्रेष्ठ सेवाधारी अर्थात् सदा शुभ-चिन्तक मणि का शुभ-चिन्तन का शक्तिशाली खज़ाना सदा भरपूर होगा। भरपूरता के कारण ही औरों के प्रति शुभ-चिन्तक बन सकते हैं। शुभ-चिन्तक अर्थात् सर्व ज्ञान-रत्नों से भरपूर और ऐसा ज्ञान-सम्पन्न दाता बन औरों के प्रति सदा शुभ-चिन्तक बन सकता है। तो चेक करो कि सारे दिन में ज़्यादा समय सम्पन्नता के नशे में रहते हैं, इसलिए शुभ-चिन्तक स्वरूप द्वारा दूसरों प्रति देते जाओ तो भरता जायेगा। वर्तमान समय सर्व की चिन्ता मिटाने के निमित्त बनने वाली शुभ-चिन्तक मणियों की आवश्यकता है जो चिन्ता के बजाए शुभ-चिन्तन की विधि के अनुभवी बना सकें। जहाँ शुभ-चिन्तन होगा वहाँ चिन्ता स्वत: समाप्त हो जायेगी। तो सदा शुभ-चिन्तक बन गुप्त सेवा कर रहे हो ना?

विश्व सेवा के प्लैन को सहज सफल बनाने का आधार भी 'शुभ-चिन्तक' स्थिति है। वैरायटी प्रकार की आत्मायें सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगी। ऐसी आत्माओं के प्रति शुभ-चिन्तक बनना अर्थात् उन आत्माओं को

हिम्मत के पंख देना क्योंकि सर्व आत्मायें चिन्ता की चिता पर रहने के कारण अपने हिम्मत, उमंग, उत्साह के पंख कमज़ोर कर चुकी हैं। आप शुभ-चिन्तक आत्माओं की शुभ-भावना उन्हों के पंखों में शक्ति भरेगी और आप की शुभ-चिन्तक भावनाओं के आधार से उड़ने लगेंगे अर्थात् सहयोगी बनेंगे। नहीं तो दिलशिकस्त हो गये हैं कि बैटर वर्ल्ड (सुखमय संसार) बनाना, हम आत्माओं की क्या शक्ति है? जो स्वयं को ही नहीं बना सकते तो विश्व को क्या बनायेंगे? विश्व को बदलना बहुत मुश्किल समझते हैं क्योंकि वर्तमान सर्व सत्ताओं की रिज़ल्ट देख चुके हैं, इसलिए मुश्किल समझते हैं। ऐसी दिलशिकस्त आत्माओं को, चिन्ता की चिता पर बैठी हुई आत्माओं को आपकी शुभ-चिन्तक शक्ति दिलशिकस्त से दिलखुश कर देगी। जैसे डूबे हुए मनुष्य को तिनके का सहारा भी दिल खुश कर देता है, हिम्मत में ले आता है। तो आपकी शुभ-चिन्तक स्थिति उन्हों को सहारा अनुभव होगी, जलती हुई आत्माओं को शीतल जल की अनुभूति होगी।

सर्व का सहयोग प्राप्त करने का आधार भी शुभ-चिन्तक स्थिति है। जो सर्व के प्रति शुभ-चिन्तक हैं, उनको सर्व से सहयोग स्वत: ही प्राप्त होता है। शुभ-चिन्तक भावना औरों के मन में सहयोग की भावना सहज और स्वत: उत्पन्न करेगी। शुभचिन्तक आत्माओं के प्रति हरेक को दिल का स्नेह उत्पन्न होता है और स्नेह ही सहयोगी बना देता है। जहाँ स्नेह होता है, वहाँ समय, सम्पत्ति, सहयोग सदा न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाते हैं। तो शुभ चिन्तक स्नेही सहयोगी बनायेगा और स्नेह सब प्रकार के सहयोग में न्यौछावर बनायेगा। इसलिए सदा शुभ-चिन्तन से सम्पन्न रहो, शुभ-चिन्तक बन सर्व को स्नेही, सहयोगी बनाओ। शुभ-चिन्तक

आत्मा सर्व का सहज ही सर्टीफिकेट ले सकती है। शुभ-चिन्तक ही सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी में रह सकता है, विश्व के आगे विशेष पर्सनैलिटी वाले बन सकते हैं। आजकल पर्सनैलिटी वाली आत्मायें सिर्फ नामीग्रामी बनती हैं अर्थात् नाम बुलन्द होता है लेकिन आप रूपहानी पर्सनैलिटी वाले सिर्फ नामीग्रामी अर्थात् गायन योग्य नहीं लेकिन गायन योग्य के साथ पूजनीय भी बनते हो। कितने भी बड़े धर्म-क्षेत्र में, राज्य क्षेत्र में, साइंस के क्षेत्र पर्सनैलिटी वाले प्रसिद्ध हुए हैं लेकिन आप रुहानी पर्सनैलिटी समान 63 जन्म पूजनीय नहीं बने हैं, इसलिए यह शुभ-चिन्तक बनने की विशेषता है। सर्व को जो प्राप्ति होती है खुशी की, सहारे की, हिम्मत के पंखों की, उमंग-उत्साह की - यह प्राप्ति की दुआयें, आशीर्वादें किसको अधिकारी बच्चे बना देती हैं और कोई भक्त आत्मा बन जाते हैं, इसलिए अनेक जन्म के पूज्य बन जाते हैं। शुभ-चिन्तक अर्थात् बहुतकाल की पूज्य आत्मायें। **10.11.87**

साइलेन्स की शक्ति का श्रेष्ठ साधन – शुभ संकल्प की शक्ति

जैसे वाणी द्वारा आत्माओं को स्नेह के सहयोग की भावना उत्पन्न कराते हो, ऐसे आपकी शुभ भावना स्नेह के भावना की स्थिति में स्वयं स्थित होंगे। तो जैसी आपकी भावना होगी वैसी भावना उन्हों में भी उत्पन्न होगी। आपकी शुभ भावना उन्हों की भावना को प्रज्वलित करेगी। जैसे दीपक, दीपक को जगा देता है, ऐसे आपकी शक्तिशाली शुभ भावना औरों में भी सर्वश्रेष्ठ भावना सहज ही उत्पन्न करायेगी। जैसे वाणी द्वारा

अभी सारा स्थूल कार्य करते रहते हो, ऐसे साइलेन्स की शक्ति के श्रेष्ठ साधन – शुभ संकल्प की शक्ति से स्थूल कार्य भी ऐसे ही सहज कर सकते हो वा करा सकते हो। जैसे साइन्स की शक्ति के साधन टेलीफोन, वायरलेस हैं, ऐसे यह शुभ संकल्प सम्मुख बात करने वा टेलीफोन, वायरलेस द्वारा कार्य कराने का अनुभव करायेगा। ऐसे साइलेन्स की शक्ति में विशेषतायें हैं। साइलेन्स की शक्ति कम नहीं है। लेकिन अभी वाणी की शक्ति को, स्थूल साधनों को ज़्यादा कार्य में लगाते हो, इसलिए यह सहज लगते हैं। साइलेन्स की शक्ति के साधनों को प्रयोग में नहीं लाया है, इसलिए इनका अनुभव नहीं है। वह सहज लगता है, यह मेहनत का लगता है लेकिन समय परिवर्तन प्रमाण यह शान्ति की शक्ति के साधन प्रयोग में लाने ही होंगे। **18.11.87**

किसी विकार के वश धुआँ निकालने के बजाए फ़रिश्ते रूप से दुआयें दो

बापदादा अज्ञानी और ज्ञानियों का एक अन्तर दृश्य के रूप में देख रहा था। बाप के बच्चे क्या हैं और अज्ञानी क्या हैं? आज की दुनिया में विकारी आत्मायें क्या बन गयी हैं? जैसे आजकल कोई भी बड़ी फैक्ट्रीज़ वा जहाँ भी आग जलती है तो आग का धुंआ निकलने के लिए चिमनी बनाते हैं ना उससे सदैव धुंआ निकलता है और धुंआ सदैव काला दिखाई देगा। तो आज का मानव विकारी होने के कारण, किसी-न-किसी विकार वश होने के कारण संकल्प में, बोल में, ईर्ष्या, घृणा या कोई-न-कोई विकार का धुंआँ निकालता रहता है। आँखों से भी विकारों का धुंआँ

निकलता रहता और ज्ञानी बच्चों के हर बोल व संकल्प से, फ़रिश्तापन से दुआयें निकलती हैं। उसका है विकारों की आग का धुंआँ और ज्ञानी तू आत्माओं के फ़रिश्ते रूप से सदा दुआयें निकलती। कभी संकल्प में भी किसी विकार के वश, विकार की अग्नि का धुआँ नहीं निकलना चाहिए, सदा दुआयें निकलें। तो चेक करो – कभी दुआओं के बदले धुआँ तो नहीं निकलता? फ़रिश्ता है ही दुआओं का स्वरूप। जब कोई भी ऐसा संकल्प आये या बोल निकले तो यह दृश्य सामने लाना – मैं क्या बन गया, फ़रिश्ते से बदल तो नहीं गया? व्यर्थ संकल्पों का भी धुआं है। वह जलती हुई आग का धुआँ है, वह आधी आग का धुआँ है। पूरी आग नहीं जलती है तो भी धुआँ निकलता है ना। तो ऐसे फ़रिश्ते रूप हो जो सदा दुआयें निकलती रहें। इसको कहते हैं – 'मास्टर दयालु, कृपालु, मर्सीफुल'। तो अभी यह पार्ट बजाओ। अपने ऊपर भी कृपा करो तो दूसरे पर भी कृपा करो। जो देखा, जो सुना – वर्णन नहीं करो, सोचो नहीं। व्यर्थ को न सोचना, न देखना – यह है अपने ऊपर कृपा करना। और जिसने किया वा कहा, उसके प्रति भी सदा रहम करो, कृपा करो अर्थात् जो व्यर्थ सुना, देखा उस आत्मा के प्रति भी शुभ भावना, शुभ कामना की कृपा करो। और कोई कृपा नहीं वा कोई हाथ से वरदान नहीं देंगे लेकिन मन पर नहीं रखना – यह है उस आत्मा के प्रति कृपा करना। **31.12.87**

सहनशीलता की साइलेन्स पावर से हरेक को आगे बढ़ाओ

सहनशीलता के पेपर कई प्रकार से आये – एक तो लोगों द्वारा

अपशब्द वा अत्याचार सहन किये। दूसरा – यज्ञ की स्थापना में भिन्न-भिन्न प्रकार के विघ्न आये। तीसरा – कई ब्राह्मण बच्चों द्वारा भी पेपर आये, कोई तो छोटी-मोटी बातों में असन्तुष्ट होकर ट्रेटर बने, उनका भी सामना करना पड़ा। लेकिन इसमें भी सदा असन्तुष्ट को सन्तुष्ट करने की भावना से परवश समझ सदा कल्याण की भावना से, सहनशीलता की साइलेन्स पावर से हरेक को आगे बढ़ाया। सामना करने वाले को भी मधुरता और शुभ भावना, शुभ कामना से सहनशीलता का पाठ पढ़ाया। जो आज सामना करता और कल क्षमा मांगता, उनके मुख से भी यही बोल निकलते – 'बाबा तो बाबा है!' **30.1.88**

मास्टर बीजरूप बन सारे वृक्ष को शुभ भावना की किरणें दो

मास्टर रचयिता सदा अपने को इस कल्पवृक्ष के ऊपर खड़ा हुआ अनुभव करेंगे, बाप के साथ-साथ वृक्ष के ऊपर मास्टर बीजरूप बन शक्तियों की, गुणों की, शुभ भावना-शुभकामना की, स्नेह की, सहयोग की किरणें फैलाओ। जैसे सूर्य ऊँचा रहता है तो सारे विश्व में स्वत: ही किरणें फैलती हैं ना। ऐसे मास्टर रचयिता वा मास्टर बीजरूप बन सारे वृक्ष को किरणें वा पानी दे सकते हो। सारी विश्व ही आपकी रचना है। तो 'मास्टर रचता भव'। इसको कहते हैं 'पुत्रवान भव'। तो कितने वरदान हैं! इसको ही कहा जाता है बाप समान बनना। जन्मते ही यह सब वरदान हर एक ब्राह्मण आत्मा को बाप ने दे दिया है। **24.4.88**

परिवर्तन का आधार दृढ़ संकल्प

जब स्वयं के प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति परिवर्तन का दृढ़ संकल्प करते हो तो स्वयं प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति शुभ, श्रेष्ठ संकल्प वा विशेषता का स्वरूप सदा इमर्ज रूप में रखो तो परिवर्तन हो जायेगा। **3.3.88**

मन्सा शक्ति का दर्पण – बोल और कर्म

जिन श्रेष्ठ आत्माओं की मन्सा अर्थात् संकल्प शक्तिशाली हैं, शुभ भावना, शुभ कामना वाले हैं, उनके बोल और कर्म स्वत: श्रेष्ठ हो जाते हैं क्योंकि मन्सा शक्ति का दर्पण है – बोल और कर्म। चाहे अज्ञानी आत्मायें, चाहे ज्ञानी आत्मायें, दोनों के सम्बन्ध-सम्पर्क में बोल और कर्म दर्पण हैं। अगर बोल और कर्म शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले नहीं हैं तो मन्सा शक्ति का प्रत्यक्ष स्वरूप कैसे समझ में आयेगा? जिसकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ है, उनकी वाचा और कर्मणा स्वत: ही शक्तिशाली शुद्ध होगी, शुभ भावना वाली होगी। मन्सा शक्तिशाली अर्थात् याद की शक्ति भी श्रेष्ठ होगी, शक्तिशाली होगी, सहजयोगी होंगे। सिर्फ सहज योगी भी नहीं लेकिन सहज कर्मयोगी होंगे। **31.3.88**

शुभ भावना, शुभ कामना के आधार पर रहे हुए हिसाब-किताब को चुक्तू करो

भाग्यवान आत्मा की पहली निशानी है – हर एक से स्नेह और

सहयोग की प्राप्ति होना। उन्हें कम से कम 95 प्रतिशत आत्माओं से प्राप्ति का अनुभव अवश्य होगा। बाकी 5 प्रतिशत आत्माओं का हिसाब-किताब भी चुक्तू होता है इसलिए उन्हों द्वारा कभी स्नेह मिलेगा, कभी परीक्षा भी होगी। लेकिन 5 प्रतिशत से ज़्यादा नहीं होना चाहिए। ऐसी आत्माओं से भी धीरे-धीरे शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा हिसाब-किताब चुक्तू करते रहो। जब हिसाब चुक्तू हो जायेगा तो किताब भी खत्म हो जायेगा! फिर हिसाब-किताब रहेगा ही नहीं। तो भाग्यवान आत्मा की निशानी है कि रहे हुए हिसाब-किताब को सहज चुक्तू करते रहना और 95 प्रतिशत आत्माओं द्वारा सदा स्नेह और सहयोग की अनुभूति करना। ऐसी भाग्यवान आत्मायें हर एक के सम्पर्क-सम्बन्ध में आते 'सदा प्रसन्न रहेंगी', प्रश्नचित्त नही लेकिन प्रसन्नचित्त – यह ऐसा क्यों करता व क्यों कहता, यह बात ऐसे नहीं, ऐसे होनी चाहिए। चित्त के अन्दर यह प्रश्न उत्पन्न होने वाले को 'प्रश्नचित्त' कहा जाता है और प्रश्नचित्त कभी सदा प्रसन्न नहीं रह सकता। उसके चित्त में सदा 'क्यों की क्यू' (लाइन) लगी रहती है। इसलिए उस क्यू को समाप्त करने में ही समय चला जाता है और यह क्यू फिर ऐसी होती है जो आप छोड़ने चाहो तो भी नहीं छोड़ सकते, समय देना ही पड़ेगा क्योंकि इस क्यू के रचता आप हो, जब रचना रच ली तो पालना करनी पड़ेगी, पालना से बच नहीं सकते। चाहे कितने भी मजबूर हो जाओ, लेकिन समय, एनर्जी देनी ही पड़ेगी। इसलिए इस व्यर्थ रचना को कन्ट्रोल करो। यह बर्थ कन्ट्रोल करो, समझा? हिम्मत है? जैसे लोग कह देते हैं ना कि यह तो ईश्वर की देन है, हमारी गलती थोड़े ही है। ऐसे ही ब्राह्मण आत्मायें फिर कहती हैं – ड्रामा की नूँध है। लेकिन ड्रामा के मास्टर क्रियेटर, मास्टर नॉलेजफुल बन हर कर्म को श्रेष्ठ बनाते चलो। **19.11.89**

सेवा का फाउण्डेशन – शुभ भावना, शुभ कामना

आज विश्व-कल्याणकारी बापदादा अपने विश्व-कल्याणकारी साथियों को देख रहे हैं। सभी बच्चे बाप के विश्व-कल्याण के कार्य में निमित्त बने हुए साथी हैं। सभी के मन में सदा यही एक संकल्प है कि विश्व की परेशान आत्माओं का कल्याण हो जाये। चलते-फिरते, कोई भी कार्य करते मन में यही शुभ भावना है। भक्ति मार्ग में भी भावना होती है। लेकिन भक्त आत्माओं की विशेष अल्पकाल के कल्याण प्रति भावना होती है। आप ज्ञानी तू आत्मा बच्चों की ज्ञानयुक्त कल्याण की भावना आत्माओं के प्रति सदाकाल और सर्व कल्याणकारी भावना है। आपकी भावना वर्तमान और भविष्य के लिए है कि हर आत्मा अनेक जन्म सुखी हो जाए, प्राप्तियों से सम्पन्न हो जाये क्योंकि अविनाशी बाप द्वारा आप आत्माओं को भी अविनाशी वर्सा मिला है। आपकी भावना का फल विश्व की आत्माओं को परिवर्तन कर रहा है और आगे चल प्रकृति सहित परिवर्तन हो जायेगा। आप आत्माओं की श्रेष्ठ भावना इतना श्रेष्ठ फल प्राप्त कराने वाली है! इसलिए विश्व-कल्याणकारी आत्मायें गाई जाती हो। इतना अपनी शुभ भावना का महत्व जानते हो? अपनी शुभ भावना को साधारण रीति से कार्य में लगाते चल रहे हो व महत्त्व जानकार चलते हो? दुनिया वाले भी शुभ भावना शब्द कहते हैं लेकिन आपकी शुभ भावना सिर्फ शुभ नहीं लेकिन शक्तिशाली भी है क्योंकि आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें हो। संगमयुग पर ड्रामा अनुसार प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता है, इसलिए आपकी भावना का प्रत्यक्ष फल आत्माओं को प्राप्त होता है। जो भी आत्मायें आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आती हैं, वह उसी समय ही शान्ति वा स्नेह के

फल की अनुभूति करती हैं। शुभ भावना, शुभ कामना के बिना हो ही नहीं सकती। हर आत्मा के प्रति सदैव रहम की कामना रहती है कि यह आत्मा भी वर्से की अधिकारी बन जाये। हर आत्मा के प्रति तरस पड़ता है कि यह हमारे ही ईश्वरीय परिवार के हैं, तो इससे वंचित क्यों रहें? शुभ कामना रहती है ना! शुभकामना और शुभ भावना – यह सेवा का फाउण्डेशन है। कोई भी आत्माओं की सेवा करते हो, अगर आपके अन्दर शुभ भावना, शुभ कामना नहीं है तो आत्माओं को प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति नहीं हो सकती। एक सेवा होती है नीति प्रमाण, रीति प्रमाण - जो सुना है वह सुनाना है। दूसरी सेवा है अपनी शुभ भावना, शुभ भावना द्वारा। आपकी शुभ भावना बाप में भी भावना बिठाती है और बाप द्वारा फल की प्राप्ति कराने के निमित्त बन जाती है। 'शुभ भावना' – कहाँ दूर बैठी हुई किसी आत्मा को भी फल की प्राप्ति कराने के निमित्त बन सकती है। जैसे साइंस के साधन दूर बैठे आत्माओं से समीप का सम्बन्ध कराने के निमित्त बन जाते हैं, आपकी आवाज पहुँच जाती है, आपका सन्देश पहुँच जाता है, दृश्य पहुँच जाता है। तो जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए समीपता का फल दे सकती है तो आपके साइलेन्स की शक्तिशाली शुभ भावना दूर बैठे भी आत्मओं को फल नहीं दे सकेगी? लेकिन इसका आधार है – अपने अन्दर इतनी शान्ति की शक्ति जमा हो! साइलेन्स की शक्ति यह अलौकिक अनुभव करा सकती है। आगे चलकर यह प्रत्यक्ष प्रमाण अनुभव करते रहेंगे।

शुभ भावना अर्थात् शक्तिशाली संकल्प। सब शक्तियों से संकल्प की गति तीव्र है। जितने भी साइंस ने तीव्रगति के साधन बनाये हैं, उन सबसे तीव्रगति संकल्प की है। किसी आत्मा के प्रति वा बेहद विश्व की

आत्माओं के प्रति शुभ भावना रखते हो अर्थात् शक्तिशाली शुभ और शुद्ध संकल्प करते हो कि इस आत्मा का कल्याण हो जाए। आपका संकल्प वा भावना उत्पन्न होना और उस आत्मा को अनुभूति होगी कि मुझ आत्मा को कोई विशेष सहयोग से शान्ति व शक्ति मिल रही है। जैसे – अभी भी कई बच्चे अनुभव करते हैं कि कई कार्यों में मेरी हिम्मत वा योग्यता इतनी नहीं थी लेकिन बापदादा की एकस्ट्रा मदद से यह कार्य सहज ही सफल हो गया व यह विघ्न समाप्त हो गया। ऐसे मास्टर विश्व-कल्याणकारी आत्माओं की सूक्ष्म सेवा प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे। समय भी कम और साधन भी कम, सम्पत्ति भी कम लगेगी। इसके लिए मन और बुद्धि सदा फ्री चाहिए। छोटी-छोटी बातों में मन और बुद्धि को बिज़ी रखते हो इसलिए सेवा के सूक्ष्म गति की लाइन क्लीयर नहीं रहती है। साधारण बातों में भी अपने मन और बुद्धि की लाइन को इंगेज (व्यस्त) रखते हो इसलिए यह सूक्ष्म सेवा तीव्रगति से नहीं चल रही है। इसके लिए विशेष अटेन्शन – 'एकान्त और एकाग्रता'।

एकान्तप्रिय आत्मायें कितना भी बिज़ी होते फिर भी बीच-बीच में एक घड़ी, दो घड़ी निकाल एकान्त का अनुभव कर सकती हैं। एकान्तप्रिय आत्मा ऐसी शक्तिशाली बन जाती है जो अपनी सूक्ष्म शक्तियाँ – मन-बुद्धि को जिस समय चाहे, जहाँ चाहे एकाग्र कर सकती है। चाहे बाहर की परिस्थिति हलचल की हो लेकिन एकान्तप्रिय आत्मा एक के अन्त में सेकण्ड में एकाग्र हो जायेगी। जैसे सागर के ऊपर लहरों की कितनी आवाज होती है, कितनी हलचल होती है, लेकिन सागर के अन्त में हलचल नहीं होती। तो जब एक के अन्त में, ज्ञान-सागर के अन्त में चले जायेंगे तो हलचल समाप्त हो एकाग्र बन जायेंगे। सुना, सूक्ष्म सेवा क्या है!

'शुभ भावना', 'शुभकामना' शब्द सभी बोलते रहे हैं लेकिन इसके महत्व को जान प्रत्यक्ष रूप में आने से अनेक आत्माओं को प्रत्यक्षफल की अनुभूति कराने के निमित्त बनो।

टीचर्स का तो काम ही है – 'सेवा'। टीचर्स का महत्व ही सेवा है। अगर सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिखाई देता है तो उनको योग्य टीचर की लिस्ट में गिनती नहीं किया जाता। टीचर की महानता सेवा हुई ना। तो सेवा का महीन रूप सुनाया। मुख की सेवा तो करते रहते हो लेकिन मुख और मन की शुभ भावना की सेवा साथ-साथ हो। बोल और भावना डबल काम करेंगे। इस सूक्ष्म सेवा का अभ्यास बहुत काल अर्थात् अभी से चाहिए क्योंकि आगे चलकर सेवा की रूपरेखा बदलनी ही है। फिर उस समय सूक्ष्म सेवा में अपने को बिज़ी नहीं कर सकेंगे, बाहर की परिस्थितियाँ बुद्धि को आकर्षित कर लेंगी। रिज़ल्ट क्या होगी? याद और सेवा का बैलेन्स नहीं रख सकेंगे इसलिए अभी से अपने मन-बुद्धि के सेवा की लाइन को चेक करो। टीचर्स को चेक करना आता है ना। टीचर्स औरों को सिखाती हैं, तो ज़रूर स्वयं जानती हैं तब तो सिखाती हैं ना। सभी योग्य टीचर्स हो ना! योग्य टीचर की विशेषता यह है – जो निरन्तर चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा सेवा में सदा बिज़ी रहे। तो और बातों से स्वतः ही खाली हो जायेंगे। **27.11.89**

स्व-स्थिति शक्तिशाली है तो परिस्थिति कुछ भी नहीं है

स्व-स्थिति की शक्ति से किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते

हो ना! स्व-स्थिति अर्थात् आत्मिक-स्थिति। पर-स्थिति व्यक्ति वा प्रकृति द्वारा आती है। अगर स्व-स्थिति शक्तिशाली है तो उसके आगे पर-स्थिति कुछ भी नहीं है। प्रकृति के भी मालिक आप हो ना! आपके परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन होता है। इस समय आप सतोप्रधान बन रहे हो तो प्रकृति भी तमो से सतो में परिवर्तन हो रही है। आप रजोगुणी बनते हो तो प्रकृति भी रजोगुणी बनती है। तो श्रेष्ठ कौन हुआ? आप हुए ना इसलिए स्व-स्थिति में स्थित रहने वाला कभी परिस्थिति से घबराता नहीं है क्योंकि पावरफुल कभी कमजोर से नहीं घबराता। व्यक्ति द्वारा भी परिस्थिति आती है। तो आजकल के व्यक्ति भी तमोगुणी हैं ना! आप तो सतोगुणी हो। तो तमोगुण पावरफुल नहीं, सतोगुण पावरफुल है। कई ऐसा समझते हैं और परिस्थितियों से तो पार हो जाते हैं लेकिन जब कोई ब्राह्मण आत्मा द्वारा परिस्थिति आती है तो उसमें घबरा जाते हैं, उसमें थोड़ा 'क्या-क्यों' में चले जाते हैं। लेकिन जिस समय कोई भी ब्राह्मण आत्मा में माया प्रवेश करती है उस समय ब्राह्मण आत्मा नहीं है, वशीभूत है इसलिए उसमें भी घबरा नहीं सकते। कोई भी ब्राह्मण आत्मायें अगर वशीभूत हैं तो वशीभूत पर रहम आता है, तरस पड़ता है। वशीभूत पर कभी जोश नहीं आता। कोई जान-बूझकर करता है तो उस पर जोश आता है। तो जब ब्राह्मण आत्मा भी वशीभूत है तो रहम की भावना रखो। फिर घबरायेंगे नहीं, और ही उस आत्मा की सेवा करने लग जायेंगे। शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा सेवा करेंगे। तो स्व-स्थिति वाला किसी भी प्रकार की परिस्थिति से घबरा नहीं सकता क्योंकि नॉलेजफुल आत्मा हो गई। तीनों कालों की, सर्व आत्माओं की नॉलेज है। नॉलेजफुल व त्रिकालदर्शी कभी घबरा नहीं सकते। **17.12.89**

मन्सा शुभ भावना और शुभ दुआयें देने में बिज़ी हो तो हलचल समाप्त हो जायेगी

आज अमृतवेले बापदादा देख रहे थे कि हरेक बच्चे ने अपने में नवीनता कहाँ तक लाई है! मन्सा में, वाणी में, कर्म में क्या नवीनता लाई और सेवा-सम्पर्क में क्या नवीनता लाई? मन्सा का चार्ट क्या है? ऐसे सब बातों का चार्ट चेक करो। नवीनता अर्थात् विशेषता। सब बातों में विशेषता लाई? मन्सा की विशेषता उड़ती कला के हिसाब से कैसी है? उड़ती कला वालों की विशेषता अर्थात् हर समय हर आत्मा के प्रति स्वतः ही शुभ भावना और शुभकामना के शुद्ध वायब्रेशन अपने को और दूसरों को भी अनुभव हों अर्थात् मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें स्वतः ही निकलती रहें। मन्सा सदा इस सेवा में बिज़ी रहे। जैसे वाचा की सेवा में सदा बिज़ी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वतः ही होनी चाहिए। वाचा सेवा के बहुत अच्छे प्लैन्स बनाते हो। यह कान्फ्रेन्स करेंगे - नेशनल करेंगे, अभी इन्टरनेशनल करेंगे, वर्गीकरण की करेंगे। तो वाचा की सेवा में अपने को बिज़ी रखने के लिए एक के पीछे दूसरा प्लैन पहले से ही सोचते हो। इसमें बिज़ी रहना आ गया है। मैजारिटी अच्छे उमंग से इस सेवा में आगे बढ़ रहे हैं। बिज़ी रहने का तरीका आ गया है लेकिन मन्सा सेवा में भी बिज़ी रहें – इसमें मैनारिटी हैं, मैजॉरिटी नहीं है। जब कोई ऐसी बात सामने आती है तो उस समय विशेष मन्सा सेवा की स्मृति आती है। लेकिन निरन्तर जैसे वाचा सेवा नेचुरल हो गई है, ऐसे मन्सा सेवा भी साथ-साथ और नेचुरल हो - यह

विशेष और ज़्यादा चाहिए। वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा सहयोग के कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज़्यादा अनुभव करायेगी। जितना अभी तन, मन धन और समय लगाते हो, उससे बहुत थोड़े समय में सफलता ज़्यादा मिलेगी और जो अपने प्रति भी कभी-कभी मेहनत करनी पड़ती है - अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी। छोटी-छोटी बातें जो बड़ी बन जाती हैं वह सब ऐसे समाप्त हो जायेंगी जो आप स्वयं सोचेंगे कि यह तो जादू हो गया! अभी जादूमंत्र पसन्द आता है ना! तो यह अभ्यास जादू का मन्त्र हो जायेगा। जहाँ मन्त्र होता है वहाँ अन्तर जल्दी आता है, इसलिए जादूमन्त्र कहते हैं। तो नये वर्ष में जादू का मन्त्र यूज़ करो। यह नवीनता वा विशेषता करो और जादू का मन्त्र क्या है? मन्सा और वाचा दोनों का मेल करो। दोनों का बैलेन्स, दोनों का मिलन - यही जादू का मन्त्र है। जब मन्सा में सदा शुभ भावना व शुभ दुआयें देने का नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो मन्सा आपकी बिज़ी हो जायेगी। मन में जो हलचल होती है, उससे स्वतः ही किनारे हो जायेंगे। अपने पुरुषार्थ में जो कभी दिलशिकस्त होते हो वह नहीं होंगे। जादूमन्त्र हो जायेगा। संगठन में कभी-कभी घबरा जाते हो। सोचते हो - हमने तो वायदा किया था 'बाप और मैं', यह थोड़ेही वायादा किया था कि संगठन में रहेंगे। बाप तो बहुत अच्छा है, बाप के साथ रहना भी बहुत अच्छा है लेकिन संगठन में सबके संस्कारों में रहना, यह बहुत मुश्किल है। लेकिन यह भी बहुत सहज हो जायेगा क्योंकि मन से, दिल से हर आत्मा के प्रति दुआयें, शुभ भावना,

शुभ कामना पावरफुल होने के कारण दूसरे के संस्कार दब जायेंगे। वह आपका सामना नहीं करेंगे और दबते-दबते समाप्त हो जायेंगे। फिर कहेंगे - हाँ, हम 40 के साथ भी रह सकते हैं। इस वर्ष चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों को यह हर समय की नवीनता वा विशेषता अपने में लानी है। **31.12.89**

निमित्त बने हुए बच्चों की हिम्मत कार्य को श्रेष्ठ और अचल बना देती है

अभी-अभी बापदादा को एथेन्स वाले याद आ रहे हैं। *(एथेन्स में सेवा का बड़ा कार्यक्रम चल रहा है)* वह भी बहुत याद कर रहे है। जब भी कोई विशाल कार्य होता है, बेहद के कार्य में बेहद का बाप और बेहद का परिवार याद ज़रूर आता है। जो भी बच्चे गये हैं, हिम्मत वाले बच्चे हैं। जो निमित्त बने हैं उन्हों की हिम्मत कार्य को श्रेष्ठ और अचल बना देती है। बाप के स्नेह और विशेष आत्माओं की शुभ भावना, शुभ कामना बच्चों के साथ है। बुद्धिवानों की बुद्धि किसी द्वारा भी निमित्त बनाए अपना कार्य निकाल देते हैं, इसलिए बेफिक्र बादशाह बन लाइट-हाउस, माइट हाउस बन शुभ भावना, शुभ कामना के वायब्रेशन फैलाते रहो। हर एक सर्विसएबुल बच्चे को बापदादा नाम और विशेषता सहित यादप्यार दे रहे है। **2.1.90**

शुभ भावना के संकल्प की शक्ति से सृष्टि की रचना

बापदादा सभी बच्चों के उत्साह का उत्सव देख रहा था। सेवा करना अर्थात् उत्साह से उत्सव मनाना। जितनी बड़ी सेवा करते हो बेहद की, उतना ही बेहद का उत्सव मनाते हो। सेवा का अर्थ ही क्या है? सेवा क्यों करते हो? आत्माओं में बाप के परिचय द्वारा उत्साह बढ़ाने के लिए। जब सेवा के प्लैन बनाते तो यही उत्साह रहता है ना कि जल्दी-से-जल्दी वंचित आत्माओं को बाप से वर्सा दिलायें, आत्माओं को खुशी की झलक का अनुभव करायें। अभी किसी भी आत्मा को देखते हो - चाहे आज के संसार में कितना भी बड़ा हो लेकिन हर आत्मा के प्रति देखते ही पहले संकल्प क्या उठता है? यह प्राइम मिनिस्टर है, यह राजा है – यह दिखाई देता है या आत्मा से मिलते हो वा देखते हो? शुभ भावना उठती है ना कि यह आत्मा भी बाप से प्राप्ति की अचंली ले लेवे। इस संकल्प से मिले हो ना! जब यह शुभ भावना उत्पन्न होती है तब ही आपकी शुभ भावना का फल उस आत्मा को अनुभव करने का बल मिलता है। शुभ भावना आपकी है लेकिन आपकी भावना का फल उनको मिल जाता है क्योंकि आप श्रेष्ठ आत्माओं की शुभ भावना के संकल्प में बहुत शक्ति है। आप एक-एक श्रेष्ठ आत्मा का एक-एक शुभ संकल्प वायुमण्डल की सृष्टि रचता है। संकल्प से सृष्टि कहते हैं ना! यह शुभ भावना का शुभ संकल्प चारों ओर के वातावरण अर्थात् सृष्टि को बदल देता है। इसलिए आने वाली आत्मा को सब अच्छे-ते-अच्छा अनुभव होता है, न्यारा संसार अनुभव होता है। थोड़े समय के लिए आपके शुभ संकल्प की भावना के

फल में वह समझते हैं कि यह न्यारा और प्यारा स्थान है, न्यारे और प्यारे फ़रिशते आत्माएँ हैं। कैसी भी आत्मा हो लेकिन थोड़े समय के लिए उत्साह में आ जाते हैं। **22.2.90**

बाप समान रहम के सागर बन जाओ तो क्रोध नहीं आयेगा

माताओं को क्रोध आता है? (बच्चों पर कभी-कभी आता है) तो उनको बच्चे नहीं समझती हो। बच्चे माना ही बेसमझ। बड़े तो नहीं हैं ना, बच्चे हैं। बच्चे, कहने से कभी नहीं बदलते। कहने से सिर्फ दबते हैं, बदलते नहीं। आप आज उनको कहेंगे और कल वे दूसरों को कहेंगे, तो सिखाते हो। परिवर्तन नहीं लाते हो लेकिन सिखाते हो। कहाँ तक दबेंगे! एक घंटा दबकर बैठेंगे फिर वैसे-के-वैसे। इसलिए कैसा भी बच्चा हो, अन्जान हो, चाहे बड़ा भी लेकिन ज्ञान से उस समय अन्जान है ना! अन्जान के ऊपर कभी क्रोध नहीं किया जाता, रहम किया जाता है। तो फ़ालो फ़ादर करो। बापदादा कभी गुस्सा करते हैं क्या? आप लोग गलतियाँ करते हो, बार-बार भूल करते हो, विस्मृति में तो आते हो ना! तो बाप गुस्सा करता है क्या? तो फिर आप क्यों करते हो? बाप के आगे तो आप सब बड़े-बड़े भी बच्चे हैं ना! जैसे बाप रहम का सागर है ऐसे आप मास्टर हो। सदा शुभ भावना, शुभ कामना से परिवर्तन करो। बाप ने कैसे परिवर्तन किया? शुभ भावना रखी कि यह श्रेष्ठ आत्मायें हैं, ब्राह्मण आत्मायें हैं तो परिवर्तन हो गया ना! तो फ़ालो फ़ादर करो। पहले अपने को देखो मैं कितनी भूल करती हूँ फिर बाप क्या करता है, उस जगह पर ठहर कर

बदलने वाले नहीं हैं, ऐसी आत्माओं को भी अपने खजाने से शुभ भावना, शुभ कामना की अचंली ज़रूर दो। कोई गाली देता है तो भी उनके मुख से क्या निकलता है? यह ब्रह्माकुमारियाँ हैं... तो ब्रह्मा बाप को तो याद करते हैं, चाहे गाली भी देते लेकिन ब्रह्मा तो कहते हैं। फिर भी बाप का नाम तो लेते हैं ना। चाहे जाने वा न जाने, आप फिर भी उनको अचंली दो। ऐसी अचंली देते हो या जो नहीं सुनता है उसको छोड़ देते हो? छोड़ना नहीं, नहीं तो पीछे आपके कान पकड़ेंगे, उल्हना देंगे - हम तो बेसमझ थे, आपने क्यों नहीं दिया! तो कान पकड़ेंगे ना। आप देते जाओ, कोई ले या न ले। **13.12.90**

अव्यक्त बनना है तो सद्भावना सम्पन्न बनो

जीवन में उडती कला वा गिरती कला का आधार दो बातें ही हैं: **(1)** भावना और **(2)** भाव। अगर किसी भी कार्य में कार्य प्रति या कार्य करने वाले व्यक्ति के प्रति भावना श्रेष्ठ है, तो भावना का फल भी श्रेष्ठ स्वतः ही प्राप्त होता है। एक है सर्व प्रति कल्याण की भावना, दूसरी है कोई कैसा भी हो लेकिन सदा स्नेह और सहयोग देने की भावना, तीसरी है सदा हिम्मत-उल्लास बढाने की भावना, चौथी है कोई कैसा भी हो लेकिन सदा अपनेपन की भावना और पांचवी है इन सबका फाउण्डेशन आत्मिक-स्वरूप की भावना। इनको कहा जाता है सद्भावनायें वा पॉजिटिव भावनायें। तो अव्यक्त बनना अर्थात् ये सर्व सद्भावनायें रखना। अगर इन सद्भावनाओं के विपरीत हैं तब ही व्यक्त भाव अपनी तरफ आकर्षित करता है। व्यक्त भाव का अर्थ ही है इन पांचों बातों के निगेटिव अर्थात्

देखो, तो कभी क्रोध नहीं आयेगा, समझा! शुभ भावना, शुभ कामना की दृष्टि से स्वयं भी सन्तुष्ट रहेंगे। अनुभव है ना! सन्तुष्ट रहना ही सन्तुष्ट करना है। कुछ भी हो जाये, कितना भी कोई हिलाने की कोशिश करे लेकिन सन्तुष्ट रहना है और करना है – यह सदा स्मृति रहे। अच्छा तो यही लगता है ना! सन्तुष्ट रहने वाला सदा मनोरंजन में रहेगा। तो यह वरदान याद रखना। ब्राह्मण अर्थात् सन्तुष्ट। असन्तुष्टता ब्राह्मण जीवन नहीं है। **1.3.90**

शुभ भावना, शुभ कामना रखना भी शिक्षा देना है

ब्राह्मणों का ओरिज्नल स्थान मधुबन है। सेवा के लिए भिन्न-भिन्न एरिया में गये हुए हो। यदि एक ही स्थान पर बैठ जाओ तो चारों ओर की सेवा कैसे होगी? इसलिए सेवा अर्थ भिन्न-भिन्न स्थानों पर गये हो। चाहे लौकिक में बिजनेसमैन हो या गवर्नमेन्ट सर्वेन्ट हो या फैक्ट्री में काम करने वाले हो... लेकिन ओरिज्नल आक्यूपेशन ईश्वरीय सेवाधारी हो। मातायें भी घर में रहते ईश्वरीय सेवा पर हैं। ज्ञान चाहे कोई सुने या न सुने, शुभ भावना, शुभ कामना के वायब्रेशन से भी बदलते हैं। सिर्फ वाणी की सेवा ही सेवा नहीं है, शुभ भावना रखना भी सेवा है। तो दोनों सेवायें करना आती है ना? कोई आपको गाली भी दे तो भी आप शुभ भावना, शुभ कामना नहीं छोड़ो। ब्राह्मणों का काम है - कुछ न कुछ देना। तो यह शुभ भावना, शुभ कामना रखना भी शिक्षा देना है। सभी वाणी से नहीं बदलते हैं। कैसा भी हो लेकिन कुछ न कुछ अंचली ज़रूर दो। चाहे पक्का रावण ही क्यों न हो। कई मातायें कहती हैं ना – हमारे सम्बन्धी पक्के रावण हैं,

विपरीत स्थिति में रहना। इसके विपरीत को तो स्वयं ही जानते हो, वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। जब भावना विपरीत होती है तो अव्यक्त स्थिति में स्थित नहीं हो सकते।

'शुभ भावना' मन्सा सेवा का बहुत श्रेष्ठ साधन है और 'श्रेष्ठ भाव' सम्बन्ध-सम्पर्क में सर्व के प्यारे बनने का सहज साधन है। जो सदा हरेक प्रति श्रेष्ठ भाव धारण करता वही माला का समीप मणका बन सकता है क्योंकि माला सम्बन्ध-सम्पर्क में समीप और श्रेष्ठता की निशानी है। कोई किसी भी भाव से बोले वा चले लेकिन आप सदा हर एक के प्रति शुभ भाव, श्रेष्ठ भाव धारण करो। जो इसमें विजयी होते हैं वही माला में पिरोने के अधिकारी हैं। चाहे सेवा के क्षेत्र में भाषण नहीं कर सकते, प्लैन नहीं बना सकते लेकिन जो हर एक से सम्बन्ध-सम्पर्क में शुभ भाव रख सकते हैं, तो यह 'शुभ भाव' सूक्ष्म सेवा-भाव में जमा हो जायेगा। ऐसा शुभ भाव वाला सदा सभी को सुख देगा, सुख लेगा। तो यह भी सेवा है और यह सेवा-भाव आगे नम्बर लेने का अधिकारी बना देगा। तो कभी भी ऐसे नहीं सोचना कि हमको तो भाषण करने का चांस ही नहीं मिलता, बड़ी-बड़ी सेवा का चांस नहीं मिलता। लेकिन इस 'सेवा-भाव' का गोल्डन चांस लेने वाला चान्सलर की लाइन में आ जायेगा अर्थात् विशेष आत्मा बन जायेगा इसलिए इस वर्ष में विशेष यह 'शुभ भावना' और 'श्रेष्ठ भाव' धारण करने का विशेष अटेन्शन रखना।

अशुभ भाव और अशुभ भावना को भी अपने शुभ भाव और शुभ भावना से परिवर्तन कर सकते हो। सुनाया था कि गुलाब का पुष्प बदबू की खाद से खुशबू धारण कर खुशबूदार गुलाब बन सकता है। तो आप श्रेष्ठ आत्मायें अशुभ, व्यर्थ, साधारण भावना और भाव को श्रेष्ठता में नहीं

बदल सकते! वा कहेंगे क्या करें, इसकी है ही अशुभ भावना, इनका भाव ही मेरे प्रति बहुत खराब है, मैं क्या करूँ? ऐसे तो नहीं बोलेंगे ना! आपका तो टाइटल ही है विश्व-परिवर्तक। जब प्रकृति को तमोगुणी से सतोगुणी बना सकते हो तो क्या आत्माओं के भाव और भावना के परिवर्तक नहीं बन सकते? तो यही लक्ष्य बाप समान अव्यक्त फ़रिश्ता बनने के लक्षण सहज और स्वत: लायेगा। **9.1.93**

सेवा भाव से सेवा करो तो सेवा का फल और बल मिलता रहेगा

कुछ भी करो लेकिन अपना आक्यूपेशन नहीं भूलो। जैसे आपके यादगारों में भी दिखाया है कि पाण्डवों ने गुप्त वेष में नौकरी की, लेकिन नशा क्या था? विजय का। तो आप भी गवर्मेन्ट सर्वेन्ट बनते हो ना, नौकरी करते हो। लेकिन नशा रहे विश्व-कल्याणकारी हूँ। तो इस स्मृति से स्वत: ही समर्थ रहेंगे और सदा सेवा-भाव होने के कारण सेवा का फल और बल मिलता रहेगा। फल भी मिल जाये और बल भी मिल जाए तो डबल फायदा है ना! ऐसे नहीं कि कपड़ा धुलाई कर रहे हैं तो कपड़े धोने वाले हैं। जब विश्व-कल्याणकारी का संकल्प रखेंगे तब आपकी यह भावना अनेक आत्माओं को फल देगी। गाया हुआ है ना कि भावना का फल मिलता है। तो आपकी भावना आत्माओं को फल देगी, शान्ति, शक्ति देगी। यह फल मिलेगा। **18.1.93**

विश्व कल्याणकारी की वृत्ति से अलबेलेपन का परिवर्तन करो

मैं विश्व कल्याण के कार्य अर्थ निमित्त आत्मा हूँ, ऐसे निमित्त समझ हर कार्य करते हो? जो विश्व कल्याण के निमित्त आत्मा हैं, वो स्वयं-स्वयं के प्रति अकल्याणकारी संकल्प भी नहीं कर सकते क्योंकि विश्व की जिम्मेवार आप निमित्त आत्माओं की वृत्ति से वायुमण्डल परिवर्तन होना है। तो जैसा संकल्प होगा वैसी वृत्ति ज़रूर होती है। कभी भी किसी के प्रति वा अपने प्रति कोई भी व्यर्थ संकल्प है तो वृत्ति में क्या होगा? वही भाव वृत्ति में होगा और वही कर्म स्वतः ही होगा। तो एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं बना सकते। एक सेकण्ड भी व्यर्थ संकल्प नहीं कर सकते क्योंकि आपके पीछे विश्व की जिम्मेवारी है। ऐसे समझते हो कि ये बाप की जिम्मेवारी है आपकी नहीं? ऐसा समझते हो या सोचते हो कि हम तो छोटे हैं तो छोटी जिम्मेवारी है। नहीं, बड़ी जिम्मेवारी उठाई है। तो विश्व कल्याणकारी। जैसे बाप, वैसे बच्चे। कैसी भी परिस्थिति हो, कोई भी व्यक्ति हो लेकिन स्व की भावना, स्व की वृत्ति कौन सी है? विश्व कल्याणकारी। इतना याद रहता है या अलबेले भी हो जाते हो? तो अलबेले नहीं होना। विश्व कल्याणकारी विश्व के राज्य अधिकारी बन सकते हो। अगर विश्व कल्याण की भावना नहीं तो विश्व राज्य का भी अधिकार नहीं। सम्बन्ध है ना। तो सदा सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना हो। हो सकती है? आपकी कोई ग्लानि करे तो भी शुभकामना रख सकते हो? कोई गाली दे तो भी शुभ भावना रखेंगे? कि थोड़ा-सा मन में आयेगा? थोड़ा-सा तो आयेगा ना कि ये क्या करता है, ये क्या

करती है? कोई आपका कल्याण करे और कोई आपका अकल्याण करे तो दोनों समान लगेंगे? थोड़ा तो फर्क होगा ना? कोई रोज़ आपकी ग्लानि करे, एक साल तक करे और एक साल तक भी नहीं बदले तो आप कल्याण करेंगे? वो अकल्याण करे, आप कल्याण करेंगे? ऐसे करते हैं या थोड़ा-सा मुंह ऐसे (किनारा) हो जाता है? चलो, घृणा भाव नहीं हो लेकिन मन से किनारा करेंगे कि यह ठीक नहीं है या उसको ठीक करेंगे? क्या करेंगे? ठीक करेंगे? करेंगे – यह कहना तो सहज है लेकिन करते हो? अपकारी पर भी उपकार, यह ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है। बाप ने आपका अकल्याण देखा? कितने जन्म बाप को गाली दी। 63 जन्म दी। फिर बाप ने ग्लानि को भी कल्याणकारी दृष्टि से देखा। तो फ़ालो फ़ादर हैं ना। उपकारी पर उपकार तो दुनिया वाले भी करते हैं, भक्त आत्मा भी करती है। लेकिन ज्ञानी तू आत्मा उनसे श्रेष्ठ है। तो आप कौन हो? ज्ञानी तू आत्मा हो या ज्ञानी तू आत्मा बन रहे हो? सभी हैं कि आधा भक्त, आधा ज्ञानी? पूरे ज्ञानी तू आत्मा हो या थोड़ा-थोड़ा भक्त भी हो? नहीं, ज्ञानी तू आत्मा। तो ज्ञानी तू आत्मा का अर्थ ही है सर्व के प्रति कल्याण की भावना। अकल्याण संकल्प मात्र भी नहीं हो। विश्व कल्याणकारी हैं तो मालिक हो गये ना। मालिक के आगे सभी जैसे बच्चे हुए ना। तो बाप बच्चों के ऊपर कल्याण की, रहम की भावना रखेगा। कैसा भी बच्चा होगा लेकिन बाप का फर्ज क्या है? रहम और कल्याण की भावना। इसीलिए बाप की महिमा में रहमदिल विशेष गाया हुआ है। चाहे देश में, चाहे विदेश में बाप के आगे जायेंगे तो रहमदिल मर्सीफुल कहेंगे। किसी भी चर्च में जायेंगे, कहीं भी जायेंगे तो मर्सीफुल कहते हैं ना। तो आप सभी भी रहमदिल हो ना। तो जो रहमदिल होगा वही कल्याण कर सकता है।

आत्माओं को जगना ही है। आपकी रहम भावना, शुभ भावना फल अवश्य देगी। अगर कोई आपोजीशन भी करता है तो भी आपको अपने रहम की भावना छोड़नी नहीं है और ही सोचो कि ये आपोजीशन या इनसल्ट, गालियाँ – खाद का काम करेंगी। तो खाद पड़ने से अच्छा फल निकलेगा। जितनी गालियाँ देंगे, उतना आपके गुण गायेंगे, इसलिए हर आत्मा को दाता बन देते जाओ। अच्छा मानें तो दें, नहीं। ये तो लेवता हो गये? लेने की इच्छा नहीं रखो कि अच्छा बोलें, अच्छा मानें तो दें। नहीं। इसको कहा जाता है दाता के बच्चे मास्टर दाता। चाहे वृत्ति द्वारा चाहे वायब्रेशन द्वारा, चाहे वाणी द्वारा देते जाओ। इतने भरपूर हो ना? सब खज़ाने हैं? **18.1.94**

रहम की भावना से विघ्नों का परिवर्तन करो

महाविनाश अर्थात् महान परिवर्तन। उसके निमित्त आप हो। सम्पन्न बनेंगे तो समाप्ति होगी। तो जो परेशान हैं वो तो समझते हैं कि प्रत्यक्षता का पर्दा खुल जाये, लेकिन स्टेज पर आने वाले हीरो एक्टर सम्पन्न तैयार होने चाहिए ना, तब तो पर्द खुलेगा कि आधे में खुल जायेगा? परिवर्तन की शुभ भावना को तीव्र करना अर्थात् अपने को तीव्र गति से सम्पन्न बनाना। आप भी कभी कैसे, कभी कैसे होते हो तो प्रकृति भी कभी बहुत तीव्र गति से कार्य करती, कभी ठण्डी हो जाती। तो अभी क्या करना है? रहम की भावना इमर्ज करो, चाहे स्व प्रति, चाहे सर्व आत्माओं के प्रति। होती है ना! लहर फैलाओ। रहम की भावना से विघ्न भी सहज खत्म हो जायेंगे। जहाँ रहम होगा, वहाँ तेरा-मेरा की हलचल नहीं होगी। पूज्य स्वरूप,

आप बाप को सबमें सागर कहते हैं। क्षमा का सागर, रहम का सागर...। सागर का अर्थ क्या है? अथाह, बेहद। तो इतना अथाह यानी बेहद का रहम है? सभी रहमदिल हो या घृणादिल भी हैं? नहीं। नॉलेजफुल आत्मा अर्थात् ज्ञानी तू आत्मा सदैव हर एक के प्रति मास्टर स्नेह का सागर है व स्नेह के उसके पास और कुछ है नहीं। कोई भी आयेगा तो उसे स्नेह ही तो देंगे ना और आपके पास क्या है! **9.12.93**

रहमदिल के गुण को इमर्ज कर महादानी बनो

वर्तमान समय महादानी बनने के लिए विशेष रहमदिल के गुण को इमर्ज करो। आपके जड़ चित्र वरदान दे रहे हैं। तो आप भी चैतन्य में रहमदिल बन बांटते जाओ क्योंकि परवश आत्मायें हैं। कभी भी ये नहीं सोचो कि ये तो सुनने वाले नहीं है, ये तो चलने वाले नहीं हैं। नहीं, आप रहमदिल बनो, देते जाओ। गाया हुआ है कि भावना का फल मिलता है। तो चाहे आत्माओं में ज्ञान के प्रति, योग के प्रति शुभ भावना नहीं भी हो लेकिन आपकी शुभ भावना उनको फल दे देती है। ऐसे नहीं सोचो कि इतना कुछ सेवा की लेकिन फल तो मिला ही नहीं। लेकिन फल एक जैसे नहीं होते। कोई सीजन का फल होता है, कोई सदा का फल होता है। तो सीजन का फल सीजन पर ही फल देगा ना। तो आपने शुभ भावना का बीज डाला, अगर सीजन का फल होगा तो सीजन में ही निकलेगा। वैसे भी देखो जो खेती का काम करते हैं, तो जो सीजन पर चीज़ निकलने वाली होती है तो ये नहीं सोचते हैं कि 6 मास के बाद ये निकलेगा इसलिए बीज डालो ही नहीं। तो आप भी बीज डालते चलो। समय पर सर्व

रहमदिल बाप के बच्चे अभी बेहद पर रहम करो

जैसे बाप को बेहद का वर्सा देने का संकल्प है और निश्चित होना ही है। ऐसे आप सबके दिल में ये शुभ भावना, शुभ कामना उत्पन्न होती है कि हमारे सब भाई-बहन बेहद के वर्से के अधिकारी बन जायें? तो ये शुभ भावना और शुभकामना कब तक प्रत्यक्ष रूप में करेंगे? उसकी डेट पहले से अपने दिल में फिक्स करो, संगठन से पहले दिल में करो फिर संगठन में करो तो विनाश की डेट आपेही स्पष्ट हो जायेगी, उसकी चिन्ता नहीं करो। रहम आता है या इसी मौज में रहते हो कि हम तो अधिकारी बन गये? मौज में रहो, यह तो बहुत अच्छा है लेकिन रहमदिल बाप के बच्चे अभी बेहद पर रहम करो। जब दूसरे पर रहम आयेगा तो अपने ऊपर रहम पहले आयेगा, फिर जो एक ही छोटी सी बात पर आपको पुरुषार्थ करना पड़ता है, वह करने की आवश्यकता नहीं होगी। मास्टर रहमदिल, मास्टर दयालु, मर्सीफुल बन जाओ। इस गुण को इमर्ज करो। तो औरों के ऊपर रहम करने से स्वयं पर रहम आपेही आयेगा। **18.1.97**

प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना ही दुआयें देना है

अब बेहद के सेवाधारी बनो। अपना समय बेहद की सेवा में लगाओ। बेहद की सेवा में समय लगाने से समस्या सहज ही भाग जायेगी क्योंकि चाहे अज्ञानी आत्मायें हैं, चाहे ब्राह्मण आत्मायें हैं लेकिन अगर समस्या में समय लगाते हैं वा दूसरों का समय लेते हैं तो सिद्ध है कि वह कमजोर आत्मायें हैं, अपनी शक्ति नहीं है। जिसको शक्ति नहीं हो, पांव लंगड़ा हो, उसको आप कहो दौड़ लगाओ, तो लगायेगा या गिरेगा? तो समस्या

मर्सीफुल का धारण करो। तो अभी ये लहर फैलाओ। हर संकल्प मे मर्सीफुल। संकल्प में होंगे तो वाणी और कर्म स्वत: ही हो जायेंगे। सब चिल्लाते भी क्या हैं? मर्सी-मर्सी। **25.1.94**

निश्चय रूपी फाउण्डेशन से शुभ भावना की वृत्ति नेचरल बनाओ

सभी जानते हो कि वर्तमान श्रेष्ठ जीवन का फाउण्डेशन निश्चय है। जितना निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है उतना ही आदि से अब तक सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि सदा नेचुरल रूप में अनुभव होती है। हर समय चलन और चेहरे से उनकी झलक अनुभव होती है क्योंकि ब्राह्मण जीवन में सिर्फ जानना नही है कि 'मैं ये हूँ और बाप ये है', लेकिन जानने का अर्थ है जो जानते हैं वो मानना और चलना। **9.1.95**

बाप के संस्कारों को अपने संस्कार बनाओ

मेरा संस्कार क्या है? जो बाप का संस्कार है, विशेष है ही विश्व कल्याणकारी, शुभ चिन्तनधारी। सबके शुभ भावना, शुभ कामना धारी। यही ओरिज्नल मेरे संस्कार हैं। बाकी मेरे नहीं हैं। बाकी जो अशुद्धि अन्दर छिपी हुई है, वो सम्पूर्ण शुद्ध बनने में विघ्न डालती है। तो जो बनना चाहते हो, लक्ष्य रखते हो लेकिन प्रैक्टिकल में फर्क पड़ जाता है। **9.1.96**

के वश आत्मायें चाहे ब्राह्मण भी हैं लेकिन कमजोर हैं, शक्ति नहीं है तो वह कहाँ से शक्ति लायें? बाप से डायरेक्ट शक्ति ले नहीं सकती क्योंकि कमजोर आत्मा हैं। तो क्या करेंगे? कमजोर आत्मा को दूसरे कोई का ब्लड देकर ताकत में लाते हैं, कोई शक्तिशाली इन्जेक्शन देकर ताकत में लाते हैं तो आप सबमें शक्तियाँ हैं। तो शक्ति का सहयोग दो, गुण का सहयोग दो। उन्हों में है ही नहीं, अपना दो। पहले भी कहा ना – दाता बनो। वह असमर्थ हैं, उन्हों को समर्थी दो। गुण और शक्ति का सहयोग देने से आपको दुआयें मिलेंगी और दुआयें लिफ्ट से भी तेज रॉकेट हैं। आपको पुरुषार्थ में समय भी देना नहीं पड़ेगा, दुआओं के रॉकेट से उड़ते जायेंगे। पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम के प्रालब्ध का अनुभव करेंगे। दुआयें लेना - सीखो और सिखाओ। अपना नेचरल अटेन्शन और दुआयें, अटेन्शन में टेन्शन मिक्स नहीं होना चाहिए, नेचरल हो। नॉलेज का दर्पण सदा सामने है ही। उसमें स्वतः सहज अपना चित्र दिखाई देता ही रहेगा। इसलिए कहा कि पर्सनैलिटी की निशानी है प्रसन्नचित्त। यह क्यों, क्या, कैसे। यह के-के की भाषा समाप्त – दुआयें लेना और देना सीखो। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना - यह है दुआयें देना और दुआयें लेना। कैसा भी हो आपकी दिल से हर आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें - इसका भी कल्याण हो। इसकी भी बुद्धि शान्त हो। यह ऐसा, यह वैसा - ऐसा नहीं। सब अच्छा। यह हो सकता है? दुआयें देने आती हैं? लेने तो आती हैं, देने भी आती हैं? देंगे नहीं तो लेंगे कैसे? दो और लो। यह करे नहीं, मैं करूँ? ब्रह्मा बाप का सदा स्लोगन रहा, ब्रह्मा बाप बार-बार याद दिलाते रहे - जो कर्म मैं करूंगा, मुझे देख और करेंगे। जब दूसरे करेंगे तब मैं करूंगा... यह स्लोगन नहीं। जो मैं करूंगा मुझे देख और करेंगे।

नहीं तो स्लोगन चेंज कर दो और जगदम्बा माँ का विशेष स्लोगन रहा - हुक्मी हुक्म चला रहा है। वह चला रहा है, हम निमित्त बन चल रहे हैं। तो दोनों स्लोगन सदा याद रखो। याद तो रहता है..., नहीं, कर्म में दिखाई दे। तो क्या करेंगे? दुआयें लेंगे, दुआयें देंगे कि ग्लानी करेंगे, फील करेंगे - यह ऐसा, यह वैसा? नहीं। उसको दुआयें दो। कमजोर है, वशीभूत है। भाषा और संकल्प बदली करो। यह संकल्प मात्र भी न हो कि यह बदले, नहीं। मैं बदलूं। और बातों में तो मैं-मैं का आता है लेकिन जिस बात में मैं आना चाहिए, उसमें और करे तो करें, यह क्या? अच्छा काम होगा तो कहेंगे मैं। और ऐसा कोई काम होगा तो कहेंगे इसने किया, इसने कहा। उल्टा हो गया ना। कोई क्या भी करता है, मुझे क्या करना है, मुझे क्या सोचना है, मुझे क्या कहना है, इसमें मैं-पन लाओ। बॉडी कान्सेस वाला मैं नहीं, सेवा का मैं। तो ऐसे ही श्रेष्ठ वायब्रेशन फैलाओ। अभी वाणी कम काम करती है, दिल का सहयोग, दिल के वायब्रेशन बहुत जल्दी काम कर सकते हैं। तो यह हो सकता है? **28.11.97**

शुभ भावना के बोल हीरे-मोती समान हैं

आप महान आत्मायें हो, आपके बोल ऐसे मधुर हों, बाप समान हों, सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना के बोल हों, इसको कहा जाता है युक्तियुक्त बोल। साधारण बोल भी चलते-फिरते होना नहीं चाहिए। कोई भी अचानक आ जाये तो ऐसा ही अनुभव करे कि यह बोल हैं या मोती हैं। शुभ भावना के बोल हीरे मोती समान हैं क्योंकि बापदादा ने कई बार इशारा दिया है कि समय प्रमाण अभी थोड़ा सा समय है सर्व खजाने जमा

करने का। अगर इस समय में - समय का खज़ाना, संकल्प का खज़ाना, बोल का खज़ाना, ज्ञान धन का खज़ाना, योग की शक्तियों का खज़ाना, दिव्य जीवन के सर्व गुणों का खज़ाना जमा नहीं किया तो फिर ऐसा जमा करने का समय मिलना सहज नहीं होगा। सारे दिन में अपने इन एक-एक खजाने का एकाउण्ट चेक करो। जैसे स्थूल धन का एकाउण्ट चेक करते हो ना, इतना जमा है... ऐसे हर खजाने का एकाउण्ट जमा करो। चेक करो। **31.1.98**

विश्व कल्याणकारी वह है जिसकी दृष्टि, वृत्ति और स्थिति बेहद में हो

अभी रिज़ल्ट में बापदादा ने देखा कि वर्तमान समय माया का स्वरूप निगेटिव और व्यर्थ संकल्प का मैजॉरिटी में है। विश्व-कल्याणकारी की स्टेज है - सदा बेहद की वृत्ति हो, दृष्टि हो और बेहद की स्थिति हो। वृत्ति में जरा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना नहीं हो। निगेटिव बात को परिवर्तन कराना, वह अलग चीज़ है। लेकिन जो स्वयं निगेटिव वृत्ति वाला होगा वह दूसरे के निगेटिव को भी पॉजिटिव में चेंज नहीं कर सकता। इसलिए हर एक को अपनी सूक्ष्म चेकिंग करनी है कि वृत्ति, दृष्टि सर्व के प्रति सदा बेहद और कल्याणकारी है? जरा भी कल्याण की भावना के सिवाए हद की भावना, हद के संकल्प, बोल सूक्ष्म में भी समाये हुए तो नहीं हैं, जो सूक्ष्म में समाया हुआ होता है, उसकी निशानी है कि समय आने पर वा समस्या आने पर वह सूक्ष्म स्थूल में आता है। सदा ठीक रहेगा लेकिन समय पर वह इमर्ज हो जायेगा। फिर सोचते हैं यह है

ही ऐसा। यह बात ही ऐसी है, यह व्यक्ति ही ऐसा है। व्यक्ति ऐसा है लेकिन मेरी स्थिति शुभ भावना, बेहद की भावना वाली है या नहीं है? अपनी गलती को चेक करो। समझा। **12.12.98**

शुभ भावना का रेसपान्स है सदा सन्तुष्ट रहना

अभी भी और अन्तर्मुखी बन सूक्ष्म चेकिंग करो। अच्छा कोई को दु:ख नहीं दिया, लेकिन जितना सुख का खाता जमा होना चाहिए उतना हुआ? नाराज़ नहीं किया, राज़ी किया? व्यर्थ नहीं सोचा लेकिन व्यर्थ की जगह पर श्रेष्ठ संकल्प इतने ही जमा हुए? सबके प्रति शुभ भावना रखी लेकिन शुभ भावना का रेसपान्स मिला? वह चाहे बदले नहीं बदले, लेकिन आप उससे सन्तुष्ट रहे? ऐसी सूक्ष्म चेकिंग फिर भी अपने आपकी करो और अगर ऐसी सूक्ष्म चेकिंग में पास हो तो बहुत अच्छे हो। **18.1.99**

अपना चैतन्य चित्र सजा सजाया बनाओ

बापदादा एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं। नयनों में पवित्रता की झलक, पवित्रता के दो नयनों के तारे, रूहानियत से चमकते हुए देखने चाहते हैं। बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं। कर्म में सन्तुष्टता, निर्मानता सदा देखने चाहते हैं। भावना में - सदा शुभ भावना और भाव में सदा आत्मिक भाव, भाई-भाई का भाव। सदा आपके मस्तक से लाइट का, फ़रिश्तेपन का ताज दिखाई दे। दिखाई देने का मतलब है अनुभव हो। ऐसे सजे सजाये मूर्त देखने चाहते हैं और ऐसी मूर्त ही श्रेष्ठ पूज्य बनेगी। वह तो

आपके जड़ चित्र बनायेंगे लेकिन बाप चैतन्य चित्र देखने चाहते हैं। **1.3.99**

दिल दिमाग में कोई भी बुरी चीज़ें लेने के बजाए निरन्तर सेवाधारी बनो

जो चीज़ अच्छी नहीं लगती है, उसे लो ही नहीं। बुरी चीज़ ली जाती है क्या? मन में धारण करना अर्थात् लेना। दिमाग तक भी नहीं। दिमाग में भी बात आ गई ना, वह भी नहीं। जब है ही बुरी चीज़, अच्छी है नहीं तो दिमाग और दिल में लो नहीं यानि धारण नहीं करो। और ही लेने के बजाए शुभ भावना, शुभ कामना दाता बन दो क्योंकि अभी समय के अनुसार अगर दिल और दिमाग खाली नहीं रहेगा तो निरन्तर सेवाधारी नहीं बन सकेंगे। दिल या दिमाग जब किसी भी बातों में बिज़ी हो गया तो सेवा क्या करेंगे? फिर जैसे लौकिक में कोई 8 घण्टा, कोई 10 घण्टा वर्क करते हैं, ऐसे यहाँ भी हो जायेगा। 8 घण्टा सेवाधारी, 6 घण्टे के सेवाधारी। निरन्तर सेवाधारी नहीं बन सकेंगे। **23.10.99**

बाप की आज्ञा – सदा पॉजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो

कोई भी कमज़ोरी दो शब्दों से आती है - 'मैं' और मेरा'। तो न आपका तन है, न आपका मन है। मन में जो भी संकल्प चलते हैं अगर आज्ञाकारी हो तो बाप की आज्ञा क्या है? पॉजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो। फालतू संकल्प करो - यह बाप की आज्ञा है क्या? नहीं है

ना। तो जब आपका मन नहीं है फिर भी व्यर्थ संकल्प करते हो तो बाप की आज्ञा को प्रैक्टिकल में नहीं लाया ना! सिर्फ एक शब्द याद करो कि मैं 'परमात्म-आज्ञाकारी बच्चा हूँ'। बाप की यह आज्ञा है या नहीं है, वह सोचो। जो आज्ञाकारी बच्चा होता है वह सदा बाप को स्वत: ही याद होता है। स्वत: ही प्यारा होता है। स्वत: ही बाप के समीप होता है। तो चेक करो मैं बाप के समीप, बाप का आज्ञाकारी हूँ? एक शब्द तो अमृतवेले याद कर सकते हो - 'मैं कौन?' आज्ञाकारी हूँ या कभी आज्ञाकारी और कभी आज्ञा से किनारा करने वाले? **15.11.99**

एकाग्रता के अभ्यास द्वारा संकल्प की शक्ति जमा करके उसका प्रयोग करो

मन का मौन है ही – ज्ञान सागर के तले में जाना और नये-नये अनुभव के रत्न लाना। जो बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है - सबसे बड़ा खज़ाना है जो वर्तमान और भविष्य बनाता है, वह खज़ाना है – श्रेष्ठ संकल्प का खज़ाना। संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है जो आप बच्चों के पास है। संकल्प की शक्ति तो सबके पास है लेकिन श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प की शक्ति, मन-बुद्धि एकाग्र करने की शक्ति - यह आपके पास ही है। और जितना आगे बढ़ते जायेंगे इस संकल्प शक्ति को जमा करते जायेंगे, व्यर्थ नहीं गंवायेंगे तो बहुत बड़ी सेवा के निमित्त बन सकेंगे। व्यर्थ गंवाने का मुख्य कारण है-व्यर्थ संकल्प। बापदादा ने देखा है मैजारिटी बच्चों के सारे दिन में व्यर्थ संकल्प अभी भी चलते हैं। जैसे स्थूल धन को एकॉनामी से यूज करने वाले सदा ही सम्पन्न

रहते हैं और व्यर्थ गंवाने वाले कहाँ न कहाँ धोखा खा लेते हैं। ऐसे श्रेष्ठ शुद्ध संकल्प में इतनी ताकत है जो आपकी कैचिंग पावर, वायब्रेशन कैच करने की पावर, बहुत बढ़ सकती है। यह वायरलेस, यह टेलीफोन... जैसे यह साइंस का साधन कार्य करता है वैसे यह शुद्ध संकल्प का खज़ाना, ऐसा ही कार्य करेगा जो यहाँ बैठे हुए कोई भी आत्मा का वायब्रेशन आपको ऐसे ही स्पष्ट कैच होगा जैसे वायरलेस या टेलीफोन, टी.वी. यह जो भी साधन हैं... कितने साधन निकल गये हैं, इससे भी स्पष्ट आपकी कैचिंग पावर, एकाग्रता की शक्ति से बढ़ेगी। यह आधार तो खत्म होने ही हैं। यह सब साधन किस आधार पर हैं? लाइट के आधार पर। जो भी सुख के साधन हैं, मैजारिटी लाइट के आधार पर हैं। तो क्या आपकी आध्यात्मिक लाइट, आत्म लाइट यह कार्य नहीं कर सकती! जो चाहो वायब्रेशन नजदीक के, दूर के कैच कर सकेंगे। मन-बुद्धि दोनों ही जब एकाग्र हों तब कैचिंग पावर होगी, फिर अनुभव करेंगे। संकल्प किया – निःस्वार्थ, स्वच्छ, स्पष्ट वह बहुत क्विक अनुभव करायेगा। साइलेन्स की शक्ति के आगे यह साइंस झुकेगी। अभी भी समझते जाते हैं कि साइंस में भी कोई मिसिंग है जो भरनी चाहिए। इसलिए बापदादा फिर से अन्डरलाइन करा रहा है कि अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा - यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा करायेगी, इसीलिए संकल्प शक्ति के ऊपर और अटेन्शन दो। इसे बचाओ, जमा करो। बहुत काम आयेगी। प्रयोगी, इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे। साइंस का महत्व क्यों है? प्रयोग में आती है तब सब समझते हैं हाँ साइंस अच्छा काम करती है। तो साइलेन्स की पावर का प्रयोग करने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता का मूल आधार है – मन की कन्ट्रोलिंग पावर, जिससे मनोबल बढ़ता है।

मनोबल की बड़ी महिमा है। आप तो विधिपूर्वक, रिद्धि-सिद्धि नहीं, विधिपूर्वक कल्याण के चमत्कार दिखायेंगे जो वरदान हो जायेंगे, आत्माओं के लिए यह संकल्प शक्ति का प्रयोग वरदान सिद्ध हो जायेगा। तो पहले चेक करो कि मन को कन्ट्रोल करने की कन्ट्रोलिंग पावर है? सेकण्ड में जैसे साइन्स की शक्ति, स्विच के आधार से, स्विच आन करो, स्विच ऑफ करो – ऐसे सेकण्ड में मन को जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो, उतना कन्ट्रोल कर सकते हैं? बहुत अच्छे-अच्छे स्वयं प्रति भी और सेवा प्रति भी सिद्धि रूप दिखाई देंगे। लेकिन बापदादा देखते हैं कि संकल्प शक्ति के जमा पर अभी साधारण अटेन्शन है। जितना होना चाहिए उतना नहीं है। संकल्प के आधार पर बोल और कर्म ऑटोमेटिक चलते हैं। अलग-अलग मेहनत करने की ज़रूरत ही नहीं है, आज बोल को कन्ट्रोल करो, आज दृष्टि को अटेन्शन में लाओ, मेहनत करो, आज वृत्ति को अटेन्शन से चेंज करो। अगर संकल्प शक्ति पावरफुल है तो यह सब स्वतः ही कन्ट्रोल में आ जाते हैं। मेहनत से बच जायेंगे। तो संकल्प शक्ति का महत्व जानो।

यह भट्ठियाँ विशेष इसीलिए कराई जाती हैं, आदत पड़ जाये। यहाँ की आदत भविष्य में भी अटेन्शन दे करते रहें तब अविनाशी हो। समझा। क्या महत्व है? आपके पास बड़ा ऊँचे-ते-ऊँचा खज़ाना बाप ने दिया है। यह श्रेष्ठ संकल्प, शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प का खज़ाना है? सबको बाप ने दिया है लेकिन जमा नम्बरवार करते हैं और प्रयोग में लाने की शक्ति भी नम्बरवार है। अभी भी शुभ भावना वा शुभकामना इसका प्रयोग किया है? विधिपूर्वक करने से सिद्धि का अनुभव होता है? अभी थोड़ा-थोड़ा होता है। आखिर आपके संकल्प की शक्ति इतनी महान हो

जायेगी - जो सेवा में, मुख द्वारा सन्देश देने में समय भी लगाते हो, सम्पत्ति भी लगाते हो, हलचल में भी आते हो, थकते भी हो... लेकिन श्रेष्ठ संकल्प की सेवा में यह सब बच जायेगा। बढ़ाओ। इस संकल्प शक्ति को बढ़ाने से प्रत्यक्षता भी जल्दी होगी। अभी 62-63 वर्ष हो गये हैं, इतने समय में कितनी आत्मायें बनाई हैं? 9 लाख भी पूरे नहीं हुए हैं। और सारे विश्व को सन्देश पहुँचाना है तो कितनी करोड़ आत्मायें हैं? अभी तक भी भगवान इन्हों का टीचर है, भगवान इन्हों को चला रहा है, करावनहार परमात्मा करा रहा है... यह स्पष्ट नहीं हुआ है। अच्छा कार्य है और श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं, यह आवाज तो है लेकिन करावनहार अभी भी गुप्त है। तो यह संकल्प शक्ति से हर एक के बुद्धि को परिवर्तन कर सकते हो। चाहे अहो प्रभू कहके प्रत्यक्ष हो, चाहे बाप के रूप में प्रत्यक्ष हो। तो बापदादा अभी भी फिर से अटेन्शन दिलाता है कि संकल्प शक्ति को बढ़ाओ और प्रयोग में लाते रहो। समझा। **15.12.99**

शुभ भावना से क्रोधी को भी सहयोगी बनाओ

अगर आपके घर में कोई भी थोड़ी खिटखिट हो तो जाकर पहले घर को ठीक करना, फिर विश्व की सेवा कर सकेंगी। ठीक है ना। शुभाभावना से यह सेवा करना, जवाब नहीं देना, क्रोध नहीं करना, इससे भी फर्क पड़ जाता है। देखो यज्ञ की हिस्ट्री में ऐसे बहुत दृष्टान्त हैं, बहुत मारते थे, मारते हैं ना। तो बहुत माताओं की शुभ भावना से सेवा करने से वह बाप के बच्चे बने गये। तो आप भी सोचेंगी कि हमारे घर में तो लड़ाई होती है,

मारते भी हैं, यह होता है, वह होता है लेकिन जब कोई बदल सकते हैं तो आप नहीं बदल सकती हो! शुभ भावना और अपनी चलन परिवर्तन हो जाती है तो वह भी नर्म हो जाते हैं। गर्म नहीं होते, नर्म हो जाते हैं। इसलिए मातायें पहले अपने घरों को, बच्चों को ठीक करो। अच्छा नहीं मानते हैं लेकिन प्यार से चलें, ज्ञान की ग्लानि नहीं करें, इतना तो हो सकता है ना। चलो क्रोधी हैं, क्या भी हैं, आदतें खराब हैं लेकिन यह तो कहें कि माता जी बहुत अच्छी हैं। हम ऐसे हैं लेकिन माता अच्छी है, इतना प्रभाव तो हो। बदली होना चाहिए ना। फिर देखो सेवा कितनी फैलती है। ठीक है मातायें। बहुत अच्छा, देखो आपके वर्ग को भी चांस मिला है ना। तो लक्की हो गई ना। **15.12.99**

अटेन्शन देकर एक शुद्ध शब्द को स्वरूप में लाओ

एक है शुभचिन्तक बनना, दूसरा है शुभचिन्तन में रहना, तीसरा है शुभ भावना रखना। यह भावना नहीं कि यह बदले तो मैं बदलूं। उसके प्रति भी शुभ भावना, अपने प्रति भी शुभ भावना और चौथा शुभ श्रेष्ठ स्मृति और स्वरूप। बस एक 'शुभ' शब्द याद कर लो, इसमें चारों ही बातें आ जायेंगी। बस हमको शुभ शब्द स्मृति में रखना है। यह सुना तो बहुत बारी है। सुनाया भी बहुत बारी है। अब और स्वरूप में लाने का अटेन्शन रखना है। बापदादा जानते हैं कि बनना तो इन्हों को ही है। और जो आने वाले भी हैं वह साकार रूप में तो आप लोगों को ही देखते हैं।

31.12.99

कमज़ोर को भी शुभ भावना का बल दो

दूसरे किसी को भी नहीं देखना, सी फादर, सी ब्रह्मा दूसरा करे न करे, करेंगे तो सभी, फिर भी उनके प्रति रहम भाव रखना। कमजोर को शुभ भावना का बल देना, कमज़ोरी नहीं देखना। ऐसी आत्माओं को अपने हिम्मत के हाथ से उठाना, ऊँचा करना। हिम्मत का हाथ सदा स्वयं प्रति और सर्व के प्रति बढ़ाते रहना। निःस्वार्थ पुरुषार्थ में पहले मैं। **11.11.00**

दृढ़ता द्वारा शुभ भावना की शक्ति कार्य में लाओ

अपने मन में दृढ़ता लाओ, थोड़ी-सी बात में संकल्प को ढीला नहीं कर दो। कोई इन्सल्ट करे, कोई घृणा करे, कोई अपमान करे, निन्दा करे, कभी भी कोई दुःख दे लेकिन आपकी शुभ भावना मिट नहीं जाये। आप चैलेन्ज करते हो कि माया को, प्रकृति को परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक हैं, अपना आक्यूपेशन तो याद है ना? विश्व परिवर्तक तो हो ना! अगर कोई अपने संस्कार के वश आपको दुःख भी दे, चोट लगाये, तो क्या आप दुःख की बात को सुख में परिवर्तन नहीं कर सकते हो? इनसल्ट को सहन नहीं कर सकते हो? गाली को गुलाब नहीं बना सकते हो? समस्या को बाप समान बनने के संकल्प में परिवर्तन नहीं कर सकते हो? **25.11.00**

निःस्वार्थ शुभ स्नेह और शुभ भावना से जमा का खाता बढ़ाओ

जमा के खाते की चाबी बहुत सहज है। निमित्त भाव और निर्मान भाव। अगर हर एक आत्मा के प्रति, चाहे साथी, चाहे सेवा जिस आत्मा की करते हो, दोनों में सेवा के समय, आगे पीछे नहीं सेवा करने के समय निमित्त भाव, निर्मान भाव, निःस्वार्थ शुभ भावना और शुभ स्नेह इमर्ज हो तो जमा का खाता बढ़ता जायेगा। **31.12.00**

रहमदिल और मर्सीफुल के संस्कार इमर्ज करो

आप सब ब्राह्मणों के जो विशेष संस्कार वा स्वभाव हैं - रहमदिल, मर्सीफुल के वह इमर्ज होंगे और होना ही ज़रूरी है। इस समय आप हर एक को, आत्माओं प्रति रहमदिल और दाता बन कुछ न कुछ देना ही है, चाहे मन्सा द्वारा दो, चाहे शुभ भावना से दो, श्रेष्ठ सकाश देने की वृत्ति से दो, चाहे आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न बोल से दो, चाहे अपने स्नेह सम्पन्न सम्बन्ध-सम्पर्क से दो लेकिन कोई भी आत्मा वंचित नहीं रहे। दाता बनो, रहमदिल बनो। **4.11.01**

शुभ भावना की शक्ति से बद्दुआ को दुआ में परिवर्तन करो

चाहे आपको कोई कुछ भी दे, बद्दुआ भी दे लेकिन आप उस बद्दुआ

उसको परिवर्तन करने में आप मददगार बनो।

अपनी वृत्ति में अपने लिए, दूसरे के लिए पॉजिटिव धारण करो। नॉलेजफुल भले बनो लेकिन अपने मन में निगेटिव धारण नहीं करो। निगेटिव का अर्थ है किचड़ा। अभी-अभी वृत्ति पावरफुल करो, वायब्रेशन पावरफुल बनाओ, वायुमण्डल पावरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है, वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है, होता है लेकिन बहुत धीमी गति से। अगर फास्ट गति चाहते हो तो नॉलेजफुल बन, क्षमा स्वरूप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो।

हर एक ने अपना एकाउन्ट तो रखा है ना! तो एकाउन्ट में बापदादा यही चेक करेंगे - वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में रहमदिल, शुभ भावना और शुभकामना वाली आत्मा कितने परसेन्ट में रही? **24.2.02**

प्योरिटी की वृत्ति है – शुभ भावना, शुभ कामना

कोई कैसा भी हो लेकिन पवित्र वृत्ति अर्थात् शुभ भावना, शुभ कामना और पवित्र दृष्टि अर्थात् सदा हर एक को आत्मिक रूप में देखना वा फ़रिश्ता रूप में देखना। पवित्र कृति अर्थात कर्म में भी सदा हर आत्मा को सुख देना और सुख लेना। **25.10.02**

वैरायटी संस्कार को समझ नॉलेजफुल बन चलना, यही सक्सेसफुल स्टेज है

वैरायटी संस्कार को समझ नॉलेजफुल बन चलना, निभाना, यही

सक्सेसफुल स्टेज है। चलना तो पड़ता ही है। परिवार को छोड़कर कहाँ जायेंगे। नशा भी है ना कि हमारा इतना बड़ा परिवार है। तो बड़े परिवार में बड़ी दिल से हर एक के संस्कार को जानते हुए चलना, निर्मान होके चलना, शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति से चलना... यही परिवार के निश्चयबुद्धि की निशानी है। **14.11.02**

आपका मंत्र है – निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी

सारी मुरली भल याद नहीं करो, तीन शब्द निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी, याद करो तो यह महामन्त्र संकल्प को भी श्रेष्ठ बना देगा। वाणी में निर्मानता लायेगा। कर्म में सेवा भाव लायेगा। सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना की वृत्ति बनायेगा। **15.12.02**

मन्सा प्युरिटी की रॉयल्टी – शुभ भावना, शुभ कामना

मन्सा प्योरिटी अर्थात् सदा और सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना - सर्व प्रति। वह आत्मा कैसी भी हो लेकिन प्योरिटी की रॉयल्टी की मन्सा है – सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, कल्याण की भावना, रहम की भावना, दातापन की भावना। और दृष्टि में सदा हर एक के प्रति आत्मिक स्वरूप देखने में आये वा फ़रिश्ता स्वरूप दिखाई दे। **17.10.03**

निमित्त भाव की स्मृति से आत्माओं की भावनायें पूर्ण करो

सहज जमा का खाता भरपूर करने की गोल्डन चाबी है - कोई भी मन्सा-वाचा-कर्मणा, किसी में भी सेवा करने के समय एक तो अन्दर निमित्त भाव की स्मृति। निमित्त भाव, निर्मान भाव, शुभ भाव, आत्मिक स्नेह का भाव, अगर इस भाव की स्थिति में स्थत होकर सेवा करते हो तो सहज आपके इस भाव से आत्माओं की भावना पूर्ण हो जाती है। **31.12.03**

सबसे सहज पुरुषार्थ – दृष्टि, वृत्ति, बोल, भावना से दुआयें दो, दुआयें लो

एक तो हर एक आत्मा को आत्मिक दृष्टि देखो। आत्मा के ओरिज्नल संस्कार के स्वरूप में देखो। चाहे कैसी भी संस्कार वाली आत्मा है लेकिन आपकी हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, परिवर्तन की श्रेष्ठ भावना, उनके संस्कार को थोड़े समय के लिए परिवर्तन कर सकती है। आत्मिक भाव इमर्ज करो। सबसे सहज पुरुषार्थ है, सारा दिन दृष्टि, वृत्ति, बोल, भावना सबसे दुआयें दो, दुआयें लो। **2.2.04**

हर एक को शुभ भाव से देखो और सहयोग दो

जो भी आवे, जिससे भी सम्पर्क हो, उसको दाता बन कुछ न कुछ

देना ही है। खाली हाथ कोई नहीं जावे। अखण्ड भण्डारा हर समय खुला रहे। कम से कम हर एक के प्रति शुभ भाव और शुभभावना यह अवश्य दो। शुभ भाव से देखो, सुनो, सम्बन्ध में आओ और शुभ भावना से उस आत्मा को सहयोग दो। अभी सर्व आत्माओं को आपके सहयोग की बहुत-बहुत आवश्यकता है। तो सहयोग दो और सहयोगी बनाओ। **17.2.04**

ज्ञानी तू आत्माओं के प्रति भी हर समय शुभ भावना, शुभ कामना रखो

अपनी वृत्ति और दृष्टि में यही लक्ष्य रखो मुझे, औरों को नहीं, मुझे सदा हर एक के प्रति अर्थात् सर्व के प्रति चाहे अज्ञानी हैं, चाहे ज्ञानी हैं, अज्ञानियों के प्रति फिर भी शुभ भावना रखते हो लेकिन ज्ञानी तू आत्माओं प्रति आपस में हर समय शुभ भावना, शुभ कामना रहे। वृत्ति ऐसी बन जाये, दृष्टि ऐसी बन जाये। **15.10.04**

अशुभ भावना वालों को शुभ भावना से बदल दो

शुभ भावना, शुभ कामना इतनी पावरफुल है जो किसी अशुभ भावना वालों को भी शुभ भावना से बदल सकते हो। सेकण्ड नम्बर – अगर बदल नहीं सकते हो तो भी अविनाशी है तो आपके ऊपर अशुभ भावना का प्रभाव नहीं पड़ सकता। क्वेश्चन में चले जाते हो, यह क्यों हो रहा है? यह कब तक चलेगा? कैसे चलेगा? इसमें शुभ भावना की शक्ति कम हो

जाती है। नहीं तो शुभ भावना, शुभ कामना इस संकल्प शक्ति में बहुत शक्ति है इसलिए सिर्फ एक-दो को शुभ भावना का इशारा दो, बोलो नहीं, बोलेंगे तो झगड़ा हो जायेगा। शुभ भावना का इशारा दो। **31.12.04**

शिक्षा देने की सर्वोत्तम विधि – शिक्षा और क्षमा

कोई कैसी भी आत्मा हो, हर आत्मा से आप दुआयें लो। शुभ भावना, शुभ कामना रखो। कभी-कभी क्या होता है? कोई ऐसा काम करता है ना, तो कोशिश करते हैं शिक्षा देने की। इसको ठीक कर दूँ.. इस भाव से शिक्षा देते हो। शिक्षा दो लेकिन शिक्षा देने की सर्वोत्तम विधि है – क्षमा का रूप बनके शिक्षा दो। सिर्फ शिक्षा नहीं दो, क्षमा भी करो और शिक्षा भी दो। दो शब्द याद रखो - शिक्षा और क्षमा, रहम। अगर रहमदिल बनके उसको शिक्षा देंगे, तो आपकी शिक्षा काम करेगी। अगर रहमदिल बनके नहीं देंगे तो शिक्षा एक कान से सुन दूसरे कान से निकल जायेगी, शिक्षा धारण नहीं होगी। अभी से रहम, रहम करने की विधि है शुभ भावना, शुभ कामना। **4.9.05**

अपने आपको रियलाइजेशन कोर्स कराओ

अपने को महसूस हो कि यह बात ठीक है, यह ठीक नहीं है। दूसरा महसूस करायेगा तो महसूस नहीं होगा। तो अपने आपको रियलाइज करने का पाठ पढ़ाना। अपने आपको रियलाइज करना। अभी रियलाईजेशन का समय है। जो बाप चाहता है वह कर रहा हूँ? सम्बन्ध-सम्पर्क में भी

रियलाईज करो, शुभ भावना, शुभ कामना है? रियलाइजेशन कोर्स अपने आपको कराओ। दूसरा नहीं करा सकता। सब कोर्स किया, अभी लास्ट कोर्स है रियलाईजेशन कोर्स। **4.10.05**

निमित्त और निर्मान भाव से वायुमण्डल को ठीक बनाओ

निमित्त और निर्मान भाव और भावना। भाव और भावना दो चीजें होती हैं। तो निमित्त और निर्मान भाव और भावना हर एक के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। कोई कैसा भी हो, आपका निमित्त निर्मान भाव और शुभ भावना वायुमण्डल को ऐसा बनायेगी, जो सामने वाला भी वायब्रेशन से बदल जायेगा। कई बच्चे रूहरिहान करते हैं तो कहते हैं हमने एक मास से शुभ भावना रखी, वह बदलता ही नहीं है। फिर थक जाते हैं, दिलशिकस्त हो जाते हैं। अभी उस बिचारे की जो वृत्ति है या दृष्टि है वह है ही पत्थर जैसी, उसमें थोड़ा तो टाइम लगेगा ना। अच्छा मानो वह नहीं बदलता है तो आप अपने को ही ठीक करो ना। आप तो पोजीशन में रहो ना। **21.10.05**

गुणों की गिफ्ट दो, गिरे हुए को गिराओ नहीं, उठाओ

अगर कल्याण की भावना रखेंगे तो जैसे भाषण करके वाणी द्वारा सन्देश देते हो ना, वैसे अपने कल्याण की भावना द्वारा, कल्याण की वृत्ति द्वारा, कल्याण के वायुमण्डल द्वारा यह गुणों की गिफ्ट देना है, गिरे हुए

को गिराओ नहीं, चढ़ाओ, ऊँचा चढ़ाओ। यह ऐसा है, यह ऐसा है..., नहीं। यह प्रभु प्यार के पात्र हैं, कोटों में कोई आत्मा है, विशेष आत्मा है, विजयी बनने वाली आत्मा है, यह दृष्टि रखो। अभी वृत्ति, दृष्टि, वायुमण्डल चेंज करो। कुछ नवीनता करनी चाहिए ना! कमज़ोरी देखते, नहीं देखो, उमंग दो, सहयोग दो। ऐसा ब्राह्मण संगठन तैयार करो तो बापदादा विजय की ताली बजायेगा। **15.12.05**

पूर्वज और पूज्यपन की स्मृति से हर एक की भावना पूर्ण करो

बापदादा देख रहे हैं, आपके ही अनेक भाई-बहनें, ब्राह्मण नहीं, अज्ञानी आत्मायें, अपनी जीवन से हिम्मत हार चुकी हैं। अभी उन्हों को हिम्मत के पंख लगाने पड़ेंगे। बिल्कुल बेसहारे हो गये हैं, नाउम्मींद हो गये हैं। तो हे रहमदिल, कृपा, दया करने वाले विश्व की आत्माओं के इष्ट देव आत्मायें अपनी शुभ भावना, रहम की भावना, आत्म भावना द्वारा उन्हों की भावना पूर्ण करो। आपको वायब्रेशन नहीं आता – दु:ख, अशान्ति का? निमित्त आत्मायें हो, पूर्वज हो, पूज्य हो, वृक्ष के तना हो, फाउण्डेशन हो। सब आपको ढूंढ रहे हैं, कहाँ गये हमारे रक्षक! कहाँ गये हमारे इष्ट देव! **14.3.06**

चारों ही सबजेक्ट में स्मृति स्वरूप बनो

चार ही सब्जेक्ट में स्मृति स्वरूप वा अनुभवी स्वरूप की निशानी

क्या होगी? स्थिति में निमित्त भाव, वृत्ति में सदा शुभ भाव, आत्मिक भाव, नि:स्वार्थ भाव। वायुमण्डल में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा निर्मान भाव, वाणी में सदा निर्मल वाणी। यह विशेषतायें अनुभवी मूर्त की हर समय नेचुरल होंगी, नेचुरल नेचर। **15.12.06**

समस्या खत्म कर समाधान स्वरूप बनो

इस वर्ष बापदादा कारण शब्द को विदाई दिलाने चाहते हैं, निवारण हो, कारण खत्म। समस्या खत्म, समाधान स्वरूप। चाहे स्वयं का कारण हो, चाहे साथी का कारण हो, चाहे संगठन का कारण हो, चाहे कोई सरकमस्टांस का कारण हो, ब्राह्मणों की डिक्सनरी में कारण शब्द, समस्या शब्द परिवर्तन हो, समाधान और निवारण हो जाए क्योंकि बहुतों ने आज अमृतवेले भी बापदादा से रूहरिहान में यही बातें की, कि नये वर्ष में कुछ नवीनता करें। तो बापदादा चाहते हैं कि नया वर्ष ऐसे मनाओ जो यह दो शब्द समाप्त हो जायें। स्वयं कारण बनते हैं या दूसरा कोई बनता है, लेकिन पर-उपकारी आत्मा, रहमदिल आत्मा बन, शुभ भावना, शुभ कामना के दिल वाले बन सहयोग दो, स्नेह लो। **31.12.06**

फ़रिश्ते बन उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ो और उड़ाओ

कहाँ भी किसी के प्रति कोई और भाव नहीं रखना – सदा शुभ भावना, शुभ कामना। गिरे हुए परवश आत्माओं को अपना सहयोग देके

उठाओ। सब उठके उड़ेंगे। सबको नज़र आयेंगे फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते घूम रहे हैं। यह साक्षात्कार होना है। अनुभव करेंगे पता नहीं कहाँ फ़रिश्तों का झुण्ड सृष्टि पर आ गया है हमको उठाने के लिए। एक दो को देखो ही फ़रिश्ते स्वरूप में। यह फलाना है, फलाना है नहीं, फ़रिश्ता है। ठीक है। दादियों से यह सीखो। शुभ भावना, शुभ कामना दो, स्टॉक है आपके पास लेकिन देने में दाता कम बनते हो। निगेटिव न देखो, न सुनो, न बोलो, न सोचो। उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते रहो और उड़ाते रहो। **31.12.06**

रुहानी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति से सृष्टि का परिवर्तन करो

बापदादा ने देखा कि सबसे सहज सेवा का साधन है वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना क्योंकि वृत्ति सबसे तेज साधन है। जैसे साइंस की राकेट फास्ट जाती है वैसे आपकी रुहानी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति, दृष्टि और सृष्टि को बदल देती है। एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा कर सकते हैं। सुनी हुई बात फिर भी भूल सकती है लेकिन जो वायुमण्डल का अनुभव होता है, वह भूलता नहीं है। जैसे मधुबन में अनुभव किया है, वह ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि, योग भूमि, चरित्र भूमि का वातावरण अब तक भी जो वायुमण्डल का अनुभव करते हैं वह भूलता नहीं है। वायुमण्डल का अनुभव दिल में छप जाता है। **17.03.07**

निगेटिव वृत्ति को परिवर्तन करने की विधि – शुभ भावना शुभ कामना

हर एक को अपनी श्रेष्ठ रुहानी वृत्ति से, वायब्रेशन से वायुमण्डल बनाना है, लेकिन वृत्ति रुहानी और शक्तिशाली तब होगी जब अपने दिल में, मन में किसी के प्रति भी उल्टी वृत्ति का वायब्रेशन नहीं होगा। अपने मन की वृत्ति सदा स्वच्छ हो क्योंकि किसी भी आत्मा के प्रति अगर कोई व्यर्थ वृत्ति या ज्ञान के हिसाब से निगेटिव वृत्ति है तो निगेटिव माना किचड़ा, अगर मन में किचड़ा है तो शुभ वृत्ति से सेवा नहीं कर सकेंगे। तो पहले अपने आपको चेक करो कि मेरे मन की वृत्ति शुभ रुहानी है? निगेटिव वृत्ति को भी अपनी शुभ भावना शुभकामना से पॉजिटिव में चेन्ज कर सकते हो क्योंकि निगेटिव से अपने ही मन में परेशानी तो होती है ना! **17.03.07**

बाप के संस्कारों को अपना संस्कार बनाओ

पुराने संस्कार मध्य के संस्कार हैं, रावण की देन हैं। उसको मेरा कहना ही रांग है। आपके संस्कार तो जो बाप के संस्कार हैं वही हैं। बाप समान बनना है तो मेरे संस्कार नहीं, जो बाप के संस्कार वह मेरे संस्कार। बाप के संस्कार क्या हैं? विश्व कल्याणकारी, शुभ भावना, शुभ कामनाधारी। **30.11.07**

गुणमूर्त बन हर एक को गुणों की गिफ्ट दो

वाचा से तो सेवा करते ही रहते हो और करते भी रहना, छोड़ना नहीं लेकिन अभी मन्सा द्वारा वायब्रेशन फैलाओ, सकाश फैलाओ। वायब्रेशन वा सकाश दूर बैठे भी पहुंचा सकते हो। शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा किसी भी आत्मा को मन्सा सेवा द्वारा वायब्रेशन वा सकाश दे सकते हो। तो अभी इस वर्ष एक मन्सा शक्तियों का वायब्रेशन, शक्तियों द्वारा सकाश और कर्म द्वारा गुणों का सहयोग वा अज्ञानी आत्माओं को गुणदान, स्वयं गुणमूर्त बन गुणों की गिफ्ट देना। **31.12.07**

स्वयं को परिवर्तन कर दूसरों का परिवर्तन करो

ऐसे, वैसे, कैसे ... अब यह खेल बन्द करके मुझे परिवर्तन होना है। मैं परिवर्तन होके दूसरे को परिवर्तन करूँ, लेकिन अगर दूसरे को परिवर्तन नहीं कर सकते हो तो शुभ भावना, शुभ कामना तो रख सकते हो! वह तो आपकी अपनी चीज है ना! तो हे अर्जुन मुझे बनना है। **18.1.08**

हर आत्मा के प्रति शुभचिंतक बनो

अब परचिन्तन और व्यर्थ चिन्तन बन्द कर शुभचिन्तन और शुभचिन्तक बनो। हर आत्मा के प्रति, चाहे आपके पीछे ही पड़ा रहे, आपका उल्टा मित्र बना हुआ हो तो भी शुभचिन्तन, पक्का। **18.1.08**

हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना, यह सम्पूर्ण पवित्रता की वृत्ति है

सोचो, सम्पूर्ण पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। अनुभवी हो ना! और दृष्टि क्या होगी? हर आत्मा को आत्मा रूप में देखना। आत्मिक स्मृति से बोलना, चलना। **2.2.08**

एक-दो को शुभ भावना का सहयोग देकर आगे बढ़ाओ

सभी इकट्ठे होके एक दो के प्रति शुभ भावना-शुभकामना का हाथ फैलाओ। जैसे कोई गिरता है ना तो उसको हाथ से प्यार से उठाते हैं तो शुभ भावना और शुभकामना के हाथ द्वारा एक दो को सहयोग देके आगे बढ़ाते चलो। **5.3.08**

न्यारा और बाप का प्यारा बन हर आत्मा के कल्याण के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखो

हर एक आत्मा को सन्तुष्ट करना है तो उसकी विधि बहुत सहज है, अगर कोई आपसे असन्तुष्ट होता है या असन्तुष्ट रहता है तो उसकी असन्तुष्टता का कुछ प्रभाव तो आप पर पड़ता है ना, व्यर्थ संकल्प तो चलता है ना। इसके लिए बापदादा ने जो शुभ भावना, शुभ कामना का मन्त्र दिया है, अगर अपने आपको इस मन्त्र में स्मृति स्वरूप रखो तो

आपके व्यर्थ संकल्प नहीं चलेंगे। हर एक को जानते हुए भी कि यह ऐसा है, यह वैसा है लेकिन अपने को सदा उसके वायब्रेशन से न्यारा और बाप का प्यारा अनुभव करो। तो आपके न्यारे और बाप के प्यारेपन की श्रेष्ठ स्थिति के वायब्रेशन अगर उस आत्मा को नहीं भी पहुंचे तो वायुमण्डल में फैलेंगे ज़रूर। अगर कोई परिवर्तन नहीं होता और आपके ऊपर भी उस आत्मा का प्रभाव पड़ता रहता, व्यर्थ संकल्प के रूप में, तो वायुमण्डल में वह संकल्प फैलते हैं। इसलिए आप न्यारा बन, बाप का प्यारा बन उस आत्मा के भी कल्याण के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखो। कई बार बच्चे कहते हैं कि उसने गलती की ना, तो हमको भी फोर्स से कहना पड़ता है, थोड़ा अपना स्वभाव भी, मुख भी फोर्स वाला हो जाता है। तो उसने गलती की लेकिन आपने जो फोर्स दिखाया क्या वह गलती नहीं है? उसने और गलती की, आपने अपने मुख से जो फोर्स से बोला, जिसको क्रोध का अंश कहेंगे तो वह राइट है? क्या गलत, गलत को ठीक कर सकता है? आजकल के समय अनुसार अपने बोल को फोर्सफुल बनाना, इसका भी विशेष अटेन्शन रखो क्योंकि जोर से बोलना, या तंग होके बोलना, यह तो बदलता नहीं.. तो यह भी दूसरे नम्बर के विकार का अंश है। कहा जाता है – मुख से बोल ऐसे निकले जैसे फूलों की वर्षा हो रही है। मीठे बोल, मुस्कराता हुआ चेहरा, मीठी वृत्ति, मीठी दृष्टि, मीठा सम्बन्ध-सम्पर्क यह भी सर्विस का साधन है। इसलिए रिज़ल्ट देखो अगर मानो कोई ने गलती की, गलत है और आपने समझाने के लक्ष्य से और कोई लक्ष्य नहीं है, लक्ष्य आपका बहुत अच्छा है कि इसको शिक्षा दे रहे हैं, समझा रहे हैं लेकिन रिज़ल्ट में क्या देखा गया है? वह बदलता है? और ही आगे के लिए, आगे आने से डरता है। तो जो लक्ष्य आपने रखा

वह तो होता नहीं है इसलिए अपने मन्सा संकल्प और वाणी अर्थात् बोल और सम्बन्ध-सम्पर्क को सदा मीठा, मधुर अर्थात् महान बनाओ क्योंकि वर्तमान समय लोग प्रैक्टिकल लाइफ देखने चाहते हैं, अगर वाणी से सेवा करते हो तो वाणी की सेवा से प्रभावित हो नजदीक तो आते हैं, यह तो फायदा है लेकिन प्रैक्टिकल मधुरता, महानता, श्रेष्ठ भावना, चलन और चेहरे को देख स्वयं भी परिवर्तन के लिए प्रेरणा ले लेते हैं और जैसे-जैसे आगे समय की हालतें परिवर्तन होनी हैं, ऐसे समय पर आप सबको चेहरे और चलन से ज़्यादा सेवा करनी पड़ेगी। इसलिए अपने आपको चेक करो - आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति और दृष्टि के संस्कार नेचर और नेचरल हैं? **20.10.08**

अतीन्द्रिय सुख का आधार – पवित्रता अर्थात् शुभ भावना, शुभ कामना

ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है पवित्रता। फाउण्डेशन की कमज़ोरी अर्थात् पवित्रता की कमज़ोरी। अगर बोल में भी शुभ भावना, शुभ कामना नहीं, पवित्रता के विपरीत है तो भी सम्पूर्ण पवित्रता का जो सुख है अतीन्द्रिय सुख, उसका अनुभव नहीं हो सकता क्योंकि ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य ही है असम्भव को सम्भव करना। उसमें जितना और उतना शब्द नहीं आता। जितना चाहिए उतना नहीं है। तो कल अमृतवेले विशेष हर एक अपने को चेक करना, दूसरे को नहीं सोचना, दूसरे को नहीं देखना, लेकिन अपने को चेक करना कि कितनी परसेन्टेज़ में पवित्रता का व्रत निभा रहे हैं? चार बातें चेक करना – **1-** मन-वचन-कर्म, स्वप्न की पवित्रता।

2- वृत्ति की पवित्रता, 3- बोल की पवित्रता, व्यर्थ रोब वाले बोल तो नहीं है? 4- सम्बन्ध-सम्पर्क में शुभ भावना, शुभ कामना, यह तो है ही ऐसा, नहीं। लेकिन उस आत्मा प्रति भी शुभ भावना। जब आप सबने अपने को विश्व परिवर्तक माना है, हैं सभी? अपने को समझते हैं कि हम विश्व परिवर्तक हैं? हाथ उठाओ। इसमें तो बहुत अच्छे हाथ उठाये हैं, मुबारक हो। लेकिन बापदादा आप सभी से एक प्रश्न पूछते हैं? प्रश्न पूछें? जब आप विश्व परिवर्तक हो तो विश्व परिवर्तन में यह प्रकृति, 5 तत्व भी आ जाते हैं, उन्हों को परिवर्तन कर सकते और अपने को या साथियों को, परिवार को परिवर्तन नहीं कर सकते? विश्व परिवर्तक अर्थात् आत्माओं को, प्रकृति को, सबको परिवर्तन करना। तो अपना वायदा याद करो, सभी ने बाप से वायदा कई बार किया है लेकिन बापदादा यही देख रहे हैं कि समय बहुत फास्ट आ रहा है, सबकी पुकार बहुत बढ़ रही है, तो पुकार सुनने वाले और परिवर्तन करने वाले उपकारी आत्मायें कौन हैं? आप ही हो ना! **30.11.08**

पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना

आप सभी भी मन-वचन-कर्म, वृत्ति दृष्टि द्वारा पवित्रता का अनुभव कर रहे हो ना! पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर एक आत्मा प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। दृष्टि द्वारा हर एक आत्मा को आत्मिक स्वरूप में देखना, स्वयं को भी सहज सदा आत्मिक स्थिति में अनुभव करना। ब्राह्मण जीवन का महत्व मन-वचन-कर्म की पवित्रता है। पवित्रता नहीं तो ब्राह्मण जीवन

का जो गायन है – सदा पवित्रता के बल से स्वयं भी स्वयं को दुआ देते हैं, क्या दुआ देते? पवित्रता द्वारा सदा स्वयं को भी खुश अनुभव करते और दूसरों को भी खुशी देते। पवित्र आत्मा को तीन विशेष वरदान मिलते हैं – एक स्वयं स्वयं को वरदान देता, जो सहज बाप का प्यारा बन जाता। दूसरा – वरदाता बाप का नियरेस्ट और डियरेस्ट बच्चा बन जाता इसलिए बाप की दुआयें स्वत: प्राप्त होती हैं और सदा प्राप्त होती हैं। तीसरा – जो भी ब्राह्मण परिवार के विशेष निमित्त बने हुए हैं, उन्हों द्वारा भी दुआयें मिलती रहती। तीनों की दुआओं से सदा उड़ता रहता और उड़ाता रहता। तो आप सभी भी अपने से पूछो, अपने को चेक करो तो पवित्रता का बल और पवित्रता का फल सदा अनुभव करते हो? सदा रूहानी नशा, दिल में फलक रहती है? **30-11-08**

परिवर्तन शक्ति द्वारा भाव और भावना का परिवर्तन करो

अगर कभी भी, किसी भी प्रकार की हार माया से होती है, तो सभी भाषण में कहते हो, क्लास भी कराते हो तो यही कहते हो कि दो शब्द गिराने वाले भी हैं, चढ़ाने वाले भी हैं, वह दो शब्द सभी जानते हैं, सबके मन में आ गया है। वह दो शब्द हैं – मैं और मेरा। भाषण में कहते हो ना, क्लास भी कराते हो। बापदादा क्लास भी सुनते हैं, क्या कहते हैं? अभी इन दो शब्दों को परिवर्तन शक्ति द्वारा परिवर्तन करो, जब भी मैं शब्द बोलो तो मैं फलानी या फलाना या ब्राह्मण तो हूँ लेकिन मैं कौन? जो बापदादा ने स्वमान दिये हैं, जब भी मैं शब्द बोलो तो कोई न कोई स्वमान

साथ में बोलो, यानी बुद्धि में लाओ। मैं शब्द बोला और स्वमान याद आ जाये। मेरा शब्द बोला तो बाबा याद आ जाये। मेरा बाबा, यह नेचुरल स्मृति हो जाए, यह परिवर्तन कर लो बस। और दूसरी बात बहुत करके जब सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो तो दो शब्द द्वारा माया आती है – एक भाव और दूसरी भावना। तो जब भी भाव शब्द बोलते हो, सोचते हो तो आत्मिक भाव, भाव शब्द बोलते ही आत्मिक भाव पहले याद आवे और भावना तो शुभ भावना याद आये। शब्द का अर्थ परिवर्तन कर लो। आपका टाइटिल क्या है? विश्व परिवर्तक। विश्व परिवर्तक क्या यह शब्द परिवर्तन नहीं कर सकते? तो समय पर परिवर्तन शक्ति को यूज़ करके देखो। पीछे आता है, जब समय बीत जाता है और मन को अच्छा नहीं लगता है, खुद ही अपना मन सोचता है लेकिन समय तो बीत चुका ना। इसलिए अब तीव्रगति की आवश्यकता है, कभी कभी नहीं।

जब कोई की भी कोई कमज़ोरी देखते हो, तो वही पुरुषार्थ में विघ्न बन जाता है। पुरुषार्थी तो सब हैं, नहीं तो ब्राह्मण जीवन से चले जाते, पुरुषार्थी हैं तब तो ब्राह्मण जीवन में चल रहे हैं ना, मानो कई ऐसे कहते हैं मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ लेकिन दूसरे करते हैं ना तो वह सामने विघ्न बन जाता है। यह नहीं करे ना, यह बदले ना, लेकिन बाप ने पहले से ही स्लोगन दिया है, हमको बदलके उनको बदलाना है। मुझे बदलना है। वह बदले तो मैं बदलूं, नहीं। सुनाया ना – भाव और भावना को चेंज करो। भाव आत्मा का, और भावना, शुभ भावना। आप करके देखो, थक नहीं जाओ। शुभ भावना बहुत रखके देखी, बदलता नहीं है, यह तो बदलना ही नहीं है, आप ब्राह्मणों के मुख से यह शब्द बोलना कि बदलना नहीं है तो क्या यह वरदान हुआ? ब्राह्मण क्या वरदान देते हैं! वरदान देना अर्थात

सहारा देना। तो सभी को शुभ भावना का सहारा दो, नहीं तो किनारा करो। दिल में नहीं रखो। शुभ भावना की दुआ दो और शब्द नहीं दो। एक यह करते हैं, दूसरा! दूसरा शब्द बतायें क्या कहते हैं? क्योंकि आज बापदादा ने अच्छी तरह से चेंकिग की, दूसरा क्या करते हैं? यह तो चलता ही है, यह भी तो करता है ना, तो मैंने किया तो क्या हुआ। वह कुएं में गिर रहा है और आप भी गिरके देख रहे हो, क्या यह समझदारी है?

अभी बापदादा एक बात 18 जनवरी तक पुरुषार्थ के लिए होमवर्क दे रहा है – करेंगे? करेंगे तो हाथ उठाओ। कुछ भी हो जाए, बदलना पड़े, समाना पड़े, किनारा करना पड़े, लेकिन बदलेंगे। हाथ उठाया, पक्का? कि कहेंगे मैंने बहुत कोशिश की, नहीं हुआ, यह जवाब नहीं देना क्योंकि अभी अचानक के खेल बहुत होने हैं। और बापदादा चाहता है एक बच्चा भी पीछे नहीं रह जाए, साथ चले। इसलिए एक तो अगर कोई नहीं बदलता है, शुभ भावना रखी और कोई नहीं बदलता है तो आप अपने को बदलो, उसने यह कहा, उसने यह किया इसीलिए मुझे भी करना पड़ा, यह नहीं। करते सिखाने के भाव से हो, लेकिन देखते कमी को हो। इसीलिए भाव और भावना आत्मिक भाव, शुभ भावना। और यह शब्द कि यह तो होता ही रहता है, यह तो करते ही हैं ना, चल ही रहा है ना तो मैंने किया तो क्या हुआ... तो क्या बाप जब चलेंगे तो आप कहेंगे यह भी रह रहे हैं ना, मैं भी रह जाता हूँ, इसमें क्या है। तो सी फादर, और भाव और भावना दोनों का परिवर्तन।

जब 5 तत्वों के प्रति आप शुभ भावना रखते हो तो क्या ब्राह्मण परिवार के प्रति शुभ भावना नहीं रख सकते! यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है, यह शब्द समाप्त करो। मुझे बदलके दिखाना है। मैं बदलूंगा,

और भी बदलेंगे, अवश्य बदलेंगे। इस निश्चय और शुभ भावना से चलो फिर देखो जल्दी जल्दी अपना राज्य आ जायेगा। तो यह दो बातें सदा के लिए धारण कर ली! यह बापदादा नहीं कहता है कि लिखकर सिर्फ भेजो, प्रतिज्ञा करने की फाइल, बापदादा के पास लिखत वाले फाइल वतन में बहुत पड़े हैं। प्रतिज्ञा नहीं, दृढ़ता के संकल्प रूप में यह दो बातें धारण करनी है। **15-12-08**